"भूगोल"

आधुनिक इतिहास-एटलस

सम्पादक

रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, प्रयाग
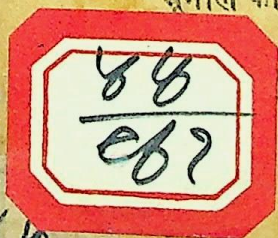
ANNUAL SUBSCRIPTION

Indian: Rs. 3/-

Foreign: Rs. 5/-

This copy: As. 8

भूगोल-एटलस

११२ पृष्ठ, ३०० से ऊपर रङ्गीन
और सादे नक़शे

संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त तथा बरार के शिक्षा-विभाग
द्वारा स्कूलों के लिये स्वीकृत

मूल्य १।)

प्रकाशक—भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद
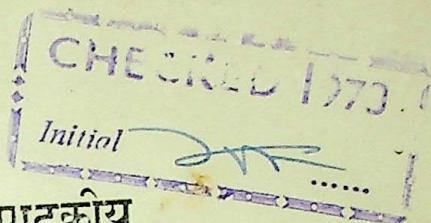
सम्पादकीय

आधुनिक इतिहास-एटलस अंक की योजना बहुत पहले की गई थी। बड़ी तेज़ी के साथ बदलने वाले देशों की वर्तमान स्थिति को समझने के लिये हिन्दी में एक भी पुस्तक न थी। दूसरे देशों की रोज़मर्रा की जटिल समस्याओं का समझना अपने देश-वासियों के लिये अत्यन्त आवश्यक है। इसीलिये "भूगोल" के पन्द्रहवें वर्ष के उपलक्ष में यह विशेषांक पाठकों की सेवा में भेंट किया जाता है। दैनिक अखबार पढ़ने वालों और संसार की घटनाओं से रुचि रखने वालों को प्रायः प्रति दिन आधुनिक इतिहास-एटलस की आवश्यकता होगी। इसीलिये इस अंक को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। प्रत्येक नक़्शे के सामने उसका विवरण है। पहले "भूगोल" का गंगाङ्क इसी जुलाई में और यह अंक आगामी जनवरी, १९३९ में प्रकाशित करने का विचार था। पर कुछ आकास्मिक कारणों से गंगा अंक तयार न हो सका। अतः क्रम बदलना पड़ा। अब गंगाङ्क आगामी (१९३९) जनवरी में पाठकों की सेवा में भेजा जायगा।

प्रस्तुत अंक बड़ी जल्दी में निकालना पड़ा। इससे तीन नक़्शे (पेलेस्टाइन, ईरान-बरमा-स्याम) पुराने देने पड़े। एक दो और त्रुटियाँ रह गईं। फिर भी यदि पाठकों ने इसे पसन्द किया तो प्रतिवर्ष इसकी नई आवृत्ति निकाली जा सकेगी। इससे प्रतिवर्ष देशों के प्रधान परिवर्तनों को पाठक एक सामयिक एटलस की सहायता से समझ सकेंगे।

इस अंक की तयारी में महाशय होराब्रिन की करेन्ट हिस्टरी एटलस और बोमैन की न्यूवर्ल्ड आफ टुडे से बड़ी सहायता मिली। हम दोनों ही सज्जनों के ऋणी हैं।

———

विषय-सूची

———

आधुनिक इतिहास एटलस

१—वर्सैल्स की सन्धि

बड़ी लड़ाई ने योरुप के राजनैतिक नक़शे को एकदम बदल दिया। इतने भारी परिवर्तन यहां सदियों से नहीं हुए थे। यहां की राजनैतिक सीमायें राष्ट्रपति विल्सन के सिद्धान्त के अनुसार राष्ट्रीयता के आधार पर की गई थीं। पर इनसे योरुप को गहरा आर्थिक धक्का पहुंचा। इस सन्धि के अनुसार पश्चिमी सीमा पर जर्मनी ने यूपेन और मल्मेडी बेल्जियम को सौंप दिये। अल्सेस लारेन का प्रान्त फ्रांस को मिला। इससे मिला हुआ सार बेसिन पहले लीग के अधिकार में रख दिया गया। पन्द्रह वर्ष के बाद १९३५ में जब लोकमत लिया गया तब ९०·८ फीसदी लोगों ने जर्मनी के पक्ष में मत दिया।

उत्तर में स्केल्जविग का कुछ भाग डेन्मार्क को दिया गया। डेन्मार्क बड़ी लड़ाई में तटस्थ रहा।

पूर्व की ओर ईस्ट प्रशा के उत्तर में मेमललैंड पहले लीग को सौंपा गया। फिर १९२३ में यह लिथुएनिया को दे दिया गया। वेस्ट प्रशा और पोसन से पोलैंड बना। अपर साइलेशिया के भाग्य का निर्णय लोकमत से किया गया। साइलेशिया का कुछ भाग चेकोस्लोवेकिया को मिल गया।

हालैंड
राइन
रोटर्डम
उत्तरी सागर
स्केल्ट
मास
डोर्टमण्ड
ऐसन
रूहर
एन्टवर्प
ब्रुसेल्स
बेलजियम
लीज़
कोलोन
कोबलेन्ज
फ्रांस
मोसेल
सार
मेट्ज़
नैन्सी
स्ट्रासबर्ग
बस्ल
स्विज़रलैंड
राइन
कोयले की खानें
कारबारी प्रदेश
जर्मनी की सीमा
0
50
100
200
मील
300
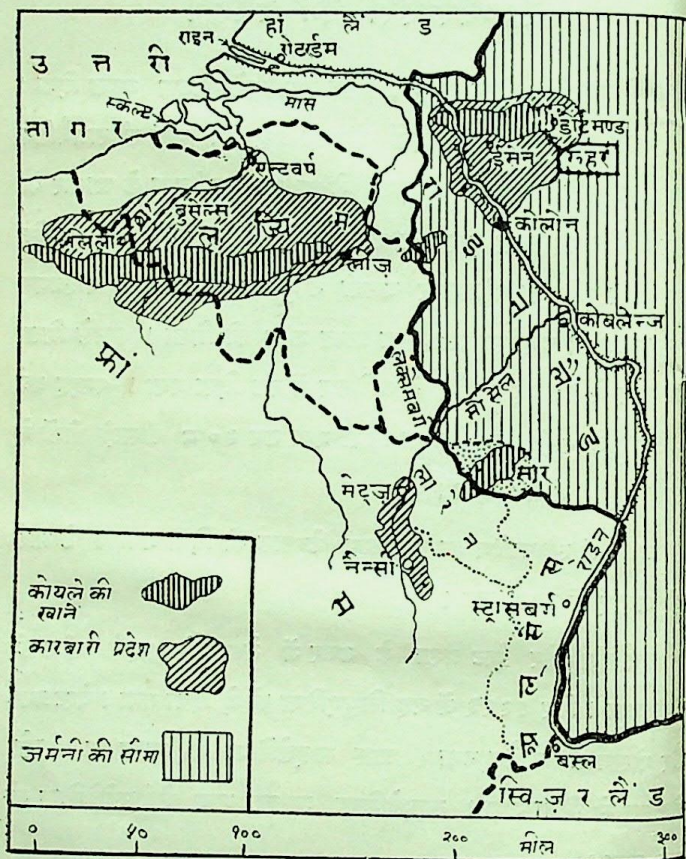
२–जर्मनी की पश्चिमी सीमायें

उत्तरी फ्रांस, बेल्जियम, रूहर, सार और लॉरेन के कोयले और लोहे के प्रदेश में राइन और उसकी सहायक मोसेल नदी और म्यूज़ और स्केल्ट नदियां प्राकृतिक जलमार्ग बनाती हैं। यहाँ पर कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है। राजनैतिक सीमायें लगातार सदियों से बदलती रही हैं। बाल शहर से लेकर स्ट्रासबर्ग से कुछ आगे तक राइन नदी लगभग १०० मील तक (बायें किनारे पर) फ्रांसीसी नदी हो जाती है। इसके आगे ३०० मील तक वह जर्मन नदी बन जाती है। लेकिन राइन का मुहाना हालैंड में है। राष्ट्रीय सीमाओं को अलग करके यदि इस ओर आर्थिक सीमायें निर्धारित की जावें तो इधर के झगड़े सुलझ सकते हैं।

वर्सेल्स सन्धि के अनुसार फ्रांस और बेल्जियम की सीमा के पास वाले राइनलैंड में सेना रखने की मनाई कर दी गई थी। लेकिन १९३६ ई० में जर्मन फौजें यहां आकर डट गई।

३—जर्मनी के पड़ोसी

फादरलैंड (पितृभूमि) के झंडे के नीचे मध्य योरुप के सब जर्मन लोगों को इकट्ठा करना जर्मन नाज़ी लोगों का प्रधान उद्देश्य है। हर हिटलर की इस घोषणा से जर्मनी के कमज़ोर पड़ोसी डरने लगे हैं। अल्प संख्या में कुछ जर्मन लोग हालैंड स्विज़रलैंड, चेकोस्लोवेकिया, हंगारी, रूमानिया, पोलैंड और लिथुएनिया में रहते हैं। इनके अतिरिक्त आस्ट्रिया एक जर्मन राष्ट्र हो गया है। केवल वहां के जर्मन अधिकतर रोमन केथालिक हैं। इस समय जर्मनी की विदेशी नीति पश्चिमी सीमा को न छेड़ने की है। लेकिन डेंज़िग, मेमेल और पोलिश कारीडार को जर्मन लोग यथाशीघ्र सुधारना चाहते हैं। नाज़ी नेता रूस से यूक्रेन को भी अलग करना चाहते हैं। इस प्रदेश को वे पोलिश कारीडार के बदले में पोलैंड को देना चाहते हैं अथवा वहाँ जर्मनी द्वारा संरक्षित स्वराज्य स्थापित करना चाहते हैं यह स्पष्ट नहीं है।

४—जर्मनी की पूर्वी सीमा और पोलिश कारीडार

पोलिश कारीडार ५० मील चौड़ी ज़मीन की पेटी है। पोलैंड को समुद्र तक प्रवेश-मार्ग देने के लिये यह प्रदेश बड़ी लड़ाई के बाद पोलैंड को दे दिया गया। इस पेटी की प्रधान नदी विश्चुला है। इसके दोनों ओर पोल लोग बसे हैं। वास्तव में पोल लोग विश्चुला के निकास से मुहाने तक फैले हुए हैं। विश्चुला सब तरह से पोलैंड की नदी है। लेकिन पोलिश कारीडार जर्मनी के ईस्ट (पूर्वी) प्रशा को समूचे देश से अलग करती है और जर्मनी के पेट में छुरी की तरह भुकी हुई है। यदि समुद्र तट की एकता रक्खी जाय तो पोलैंड के साथ अन्याय होता है और पोलैंड के लोग दो भागों में बट जाते हैं। यदि नदी की एकता रक्खी जाय तो जर्मन प्रदेश दो भागों में बट जाता है। डेंज़िग बन्दरगाह में जर्मन लोगों की प्रधानता है। बड़ी लड़ाई के बाद लीग (राष्ट्र संघ) की मातहती में यह एक स्वाधीन शहर बना दिया गया। इस समय डेंज़िग का स्थानीय शासन नाज़ी दल के हाथ में है। इस बन्दरगाह से बचने के लिये पोलैंड ने गिडीनिया नाम का अपना एक अलग बन्दरगाह बनाया। गिडीनिया बन्दरगाह का व्यापार बाल्टिक तट के दूसरे बन्दरगाहों से कहीं अधिक बढ़ गया है।

जर्मनी की पूर्वी सीमा के दक्षिणी सिरे पर अपर साइलेशिया की कोयले की खानें हैं। १९२१ के लोकमत के अनुसार इस प्रदेश का सब से अधिक महत्वपूर्ण भाग पोलैंड को मिल गया।

फिनलैंड
लेनिनग्राड
ऐस्टोनिया
लैटविया
मास्को
लिथुएनिया
मिन्सक
कीव
यु क्रे न
बसारेबिया
ओडेसा
पो लै ड
चे को स्लो वे कि या
हं गा री
रू मा नि या
वह प्रदेश जो
सन् १६१८-२१ में
रूस से छिन गया
० २५० ५०० ७५० मील
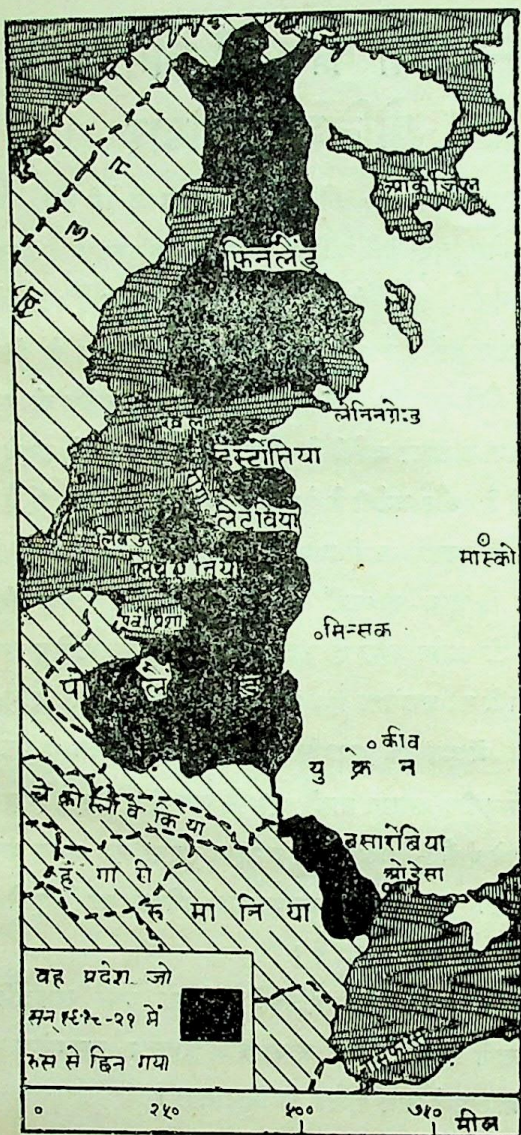
५–बड़ी बड़ाई में रूस के खोये हुए प्रदेश

बड़ी लड़ाई में रूस हारा नहीं था। लेकिन जब यहां क्रान्ति हुई तो उसके मित्र देश रूस से नाराज़ हो गये। वर्सेल्स की सन्धि में रूस का कोई प्रतिनिधि नहीं लिया गया। १९१८ में जर्मनी ने रूस के मत्थे ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की सन्धि जबरदस्ती मढ़ी थी। इस सन्धि के अनुसार जो राज्य जर्मनी के संरक्षण में बनाये गये थे। वे अलग स्वतन्त्र राष्ट्र बना दिये गये। इस प्रकार लेनिनग्रेड के पड़ोस को छोड़ कर रूस का समस्त बाल्टिक तट छिन गया और फिनलैंड, एस्टोनिया, लैटविया, और लिथुएनिया के स्वतन्त्र राष्ट्र बन गये। भीतर की ओर रूस का बहुत बड़ा भाग पोलैंड को मिल गया। दक्षिण की ओर बसारेबिया का प्रान्त रूमानिया ने छीन लिया। फिर भी रूस हथियारों के ज़ोर से इन प्रदेशों पर फिर से अधिकार कर लेने के पक्ष में नहीं है।
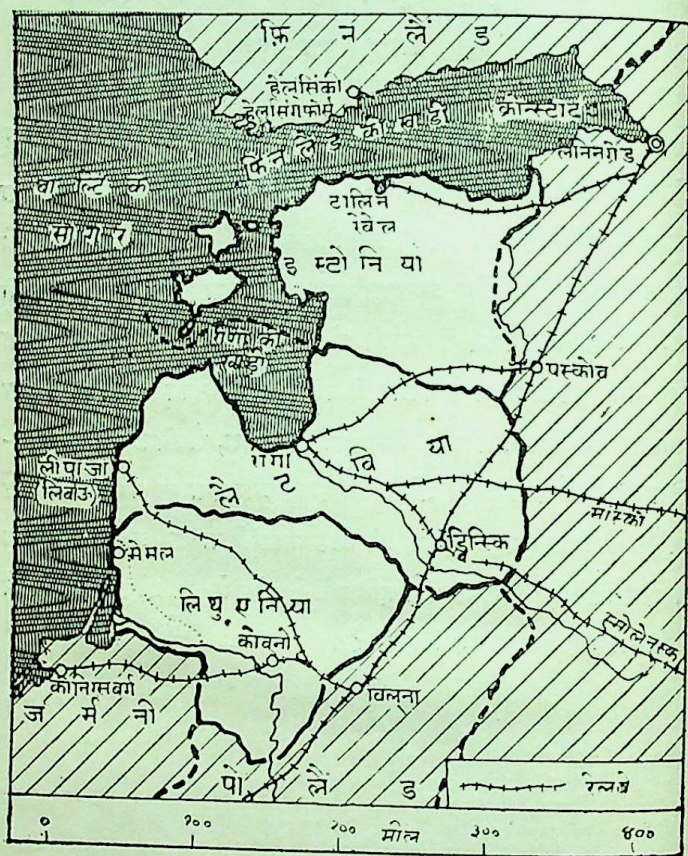
६—बाल्टिक तट की रियासतें

१९०५ ई० की रूसी क्रान्ति के बाद एस्टोनिया, लिवोनिया और कोरलैंड के रूसी बाल्टिक तट के प्रान्त ज़ार के साम्राज्य से अलग होने का प्रयत्न करने लगे। रेवेल, राइगा और लिबाउ के प्रसिद्ध बन्दरगाहों को बढ़ाने के उद्देश्य से ज़ारशाही ने इन प्रान्तों को रूसी बनाने का घोर प्रयत्न किया। १९१८ के आरम्भ में इस सारे बाल्टिक प्रदेश पर जर्मन फौजों का अधिकार हो गया। इसी समय लेनिन की साम्यवादी सरकार ने ब्रेस्ट लिटोव्स्क की सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये। बोलशेविक शक्ति को घेरने के लिये मित्र दलों ने ज़र्मनों की बनाई हुई नई रियासतों को स्वीकार कर लिया। एस्टोनिया में पुराना पूरा एस्टोनिया प्रान्त और आधा लिवोनिया प्रान्त शामिल हो गया। लैटविया में बचा हुआ लिवोनिया और समस्त कोरलैंड मिला दिया गया। लिथुएनिया में पूरा कोवनो प्रान्त और विल्ना प्रान्त का कुछ भाग शामिल है। रेवेल और रायगा के बन्दरगाहों के द्वारा पश्चिमी रूस के बहुत बड़े भाग का व्यापार हो सकता था।

सार के चुनाव की विजय से प्रोत्साहित होकर जर्मनी की नाज़ी सरकार मेमल के फिर वापिस लेने का प्रयत्न कर रही है। लिथुएनिया की कचहरी में मेमल में रहने वाले जर्मनों पर देश विद्रोह का जो मुकदमा चला उस से जर्मनी और लिथुएनिया में दुश्मनी बढ़ गई। इसी बीच १९३४ में बाल्टिक तट के तीनों राष्ट्रों ने जनेवा की सन्धि पर हस्ताक्षर करके आपस में ऐसी एकता कर ली कि इन सब की विदेश सम्बन्धी नीति एक रहेगी।

बाल्टिक सागर
मेमल
लिथुएनिया
काव्नो
कोनिग्सबर्ग
पूर्वी प्रशा
डैन्ज़िग
विलना
(जो पहले लिथुएनिया में शामिल था)
श्वेत
मिन्स्क
ग्रोडनो
विश्चुला
वार्सा
बग
ब्रेस्ट-लिटोवस्क
पिन्स्क
पोलैंड
क्रैकाओ
पोलिश युक्रेन
लेम्बर्ग
युक्रेन
चेकोस्लोवेकिया
रूमानिया
पोलैंड की प्रारम्भिक पूर्वी सीमा जिसे सुप्रीम काउंसिल ने १९१९ में निश्चित किया था
० १०० २०० मील
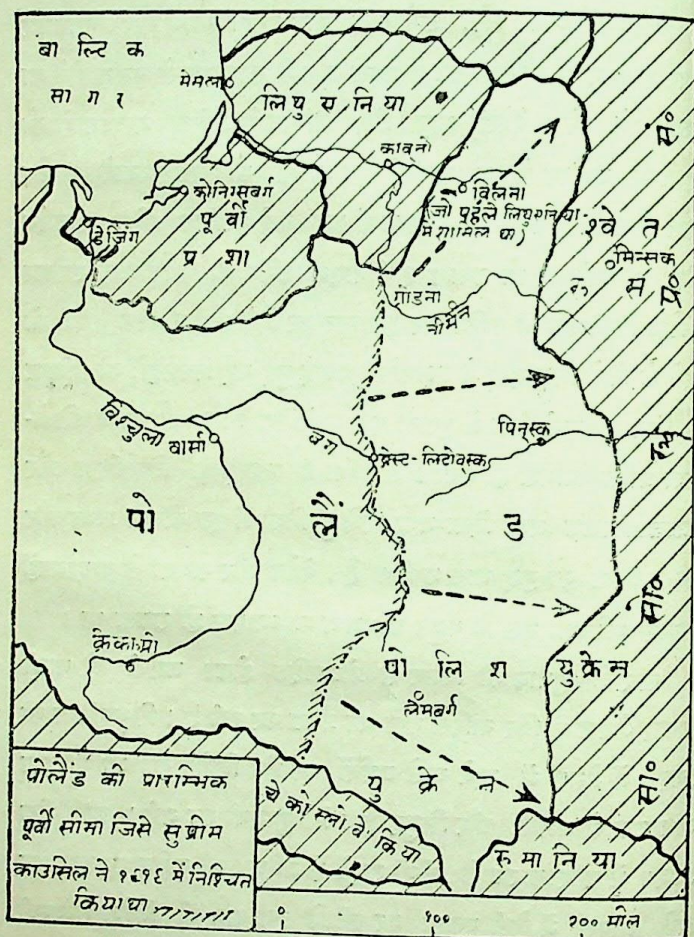
७—पोलैंड की पूर्वी सीमा

वर्सेल्स की सुप्रीम काउंसिल (प्रधान समिति) में पोलैंड की पूर्वी सीमा उस रेखा को बनाया था जो बेस्ट लिटोव्स्क से उत्तर और दक्षिण की ओर जाती है। पोलिश यूक्रेन पोलैंड के प्रभुत्व में एक अलग स्वाधीन राज्य बनाया गया। इस सीमा के अन्दर अधिकतर पोलिश लोग रहते थे। १९२० में पोलैंड और रूस की लड़ाई के बाद पोलैंड की पूर्वी सीमा बहुत आगे बढ़ गई। इससे ह्वाइट (श्वेत) रूसी और यूक्रेन निवासी और यहूदी लोग पोलैंड की प्रजा बन गये। पोलैंड के भूतपूर्व राष्ट्रपति पिलसुड्स्की के शासन काल में अल्पसंख्यक पोलिश यूक्रेन के लोगों ने स्वाधीन होने के लिये लीग (राष्ट्र संघ) को अर्ज़ी दी पर इसका कोई फल न हुआ।

१९२० में पोलैंड की फौज ने लिथुएनिया पर हमला किया, और यहाँ की राजधानी विलना और नीमेन नदी के उत्तर वाले प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार रूस और लिथुएनिया के बीच में पोलैंड का प्रदेश घुस गया। पोलैंड की इस डकैती को लिथुएनिया ने अब तक स्वीकार नहीं किया और नीमेन नदी और मेमेल बन्दरगाह को पोलैंड के व्यापार के लिये बन्द कर दिया। राष्ट्रसंघ (लीग) ने इस झगड़े को सुलझाने की काफी कोशिश की पर इसमें उसे कोई सफलता नहीं मिली।

मास्को
बाल्टिक सागर
लिथुएनिया
पूर्वी प्रशा
डेन्ज़िग
विलना
स्मोलेन्स्क
मिन्स्क
वार्सा
पोलैंड
क्राकाओ
लेम्बर्ग
कीव
खारकोव
डोनेट्ज
डोनेट्ज के कोयले की खानें
नीपर
नीप्रोपेट्रोव्स्क
रोस्टोव
चेकोस्लोवेकिया
हंगारी
बुकोविना
बसारेबिया
रोमानिया
ओडेसा
क्राइमिया
काला सागर
वो प्रदेश जो राष्ट्रीय यूक्रेनियन लोगों के अनुसार यूक्रेनियन प्रधान है
0
२००
४००
६०० मील
८००

८—यूक्रेन

यूक्रेन प्रदेश में यूक्रेनियन (लघुरूसी) या रूथेनियन रहते हैं। इस प्रदेश की पेटी योरूपीय रूस के दक्षिणी भाग से आरम्भ होकर पूर्वी पोलैंड, पूर्वी चेकोस्लोवेकिया और रूमानिया (बुकोविना और बसारेबिया) को छूती है। १९१८ में ब्रेस्टलिटोव्स्क की सन्धि के अनुसार रूस का यह प्रदेश स्वाधीन बना दिया गया था। रूसी क्रान्ति के बाद १९१९-२० में लाल सेना ने इस प्रदेश को फिर से जीत लिया। १९२३ में यूक्रेन का साम्यवादी सोवीट प्रजातंत्र रूस का अंग बन गया।

यह रूस का बड़ा ही महत्वपूर्ण अंग है। यहां की कर्नोज़म या काली मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। यहीं डोनेट्ज़ की कोयले की खानें क्रिवोई रोग की लोहे की प्रसिद्ध खानें हैं। यहीं कीव और खारकोव के कारबारी नगर और काले सागर के तट पर बसे हुए ओडेसा, रोस्टोव, नोवोरोसिस्क के व्यापारिक बन्दरगाह हैं। यूक्रेन का राष्ट्रीय आन्दोलन इस समय पश्चिमी योरुप और अमरीका में निर्वासित लोगों तक ही सीमित है।

९—युद्ध में आस्ट्रिया-हंगारी की हानि

१९१९ में बड़ी लड़ाई के बाद जब आस्ट्रिया-हङ्गारी का पुराना राज्य तोड़ दिया गया तब पुराने राज्य की लगभग सवा पाँच करोड़ आबादी सात राज्यों में बट गई। नवीन आस्ट्रिया में केवल ६५ लाख और हङ्गारी में ८० लाख आबादी रह गई। कार्पेथियन पर्वत के उत्तर वाला गेलिशिया प्रान्त पोलैंड को मिल गया। बोहेमिया, मोरेविया और उत्तरी हङ्गारी के मिलने से चेकोस्लोवेकिया का नया राष्ट्र बन गया। पूर्वी हङ्गारी और ट्रान्सिलवेनिया का प्रान्त रूमानिया के हाथ लगा। दक्षिणी टायरोल और इस्ट्रिया प्रायद्वीप को इटली ने ले लिया। क्रोशिया, डलमेशिया, बोसनिया, हर्ज़ीगोविना के प्रदेश सर्बिया में मिला दिये गये। इससे यूगोस्लैविया नाम से सर्ब, क्रोट और स्लोवीन लोगों का नया राज्य बना। इस काट-छांट से आस्ट्रिया और हङ्गारी के दो छोटे छोटे राज्य समुद्र से दूर योरुप के भीतरी भाग में पड़ गये। जो डेन्यूब नदी अपने ऊपरी मार्ग में पुराने बड़े राज्य में ७०० मील का लम्बा जल मार्ग बनाती थी वह अब उसी भाग में चार स्वतन्त्र राज्यों में होकर बहती है। हाल में आस्ट्रिया को जर्मनी ने मिला लिया।
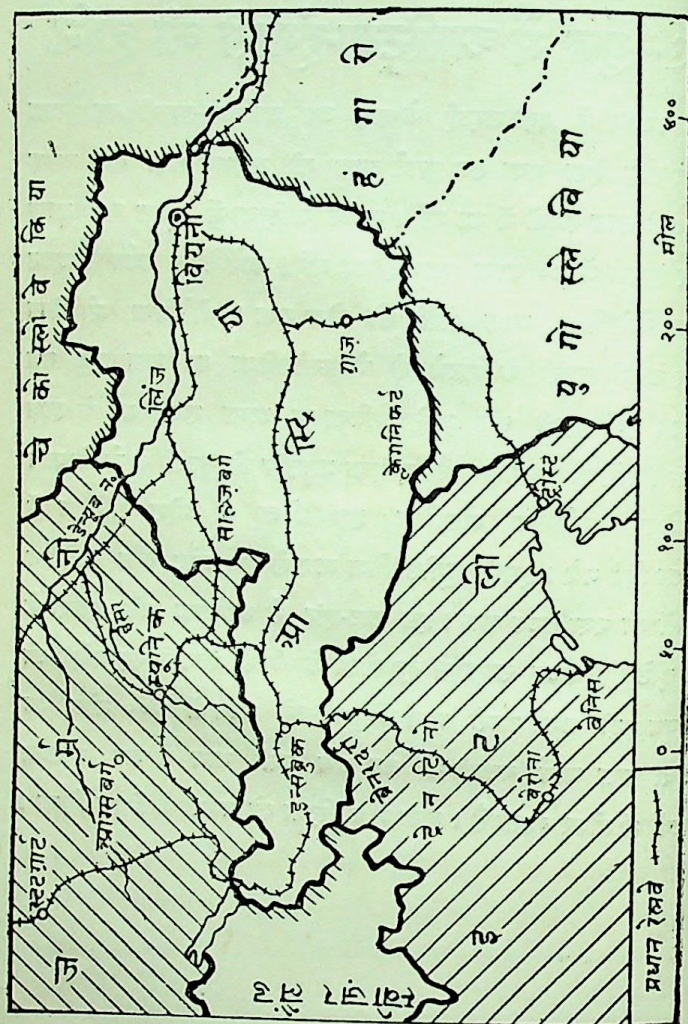
१०—आस्ट्रिया

नवीन आस्ट्रिया की राजधानी वियना में २० लाख और शेष देश के पहाड़ी भाग में ४५ लाख मनुष्य रहते हैं। शहर के लोग साम्यवादी विचार के हैं। देहात के किसान लोग परम्परा प्रेमी रोमन केथलिक हैं। वैसे देश में प्रायः ९७ फी सदी लोग जर्मन भाषा-भाषी हैं और जाति, भाषा और संस्कृति में अपने उत्तरी पड़ोसी जर्मन लोगों के ही अंग हैं। बड़ी लड़ाई की काट-छांट से आस्ट्रिया की आर्थिक दशा बड़ी शोचनीय हो गई। पिछले १५ वर्षों में आस्ट्रिया को दीवालिया होने से बचाने के लिये राष्ट्र संघ (लीग) और दूसरी संस्थाओं को आस्ट्रिया की सहायता करनी पड़ी।

दक्षिण में फेसिस्ट इटली और उत्तर में नाज़ी जर्मनी के बीच में आस्ट्रिया की भौगोलिक स्थिति खतरे से खाली नहीं थी। पहले ब्रिटेन, फ्रांस और इटली देश आस्ट्रिया की स्वाधीनता कायम रखने के लिये वचनवद्ध थे। लेकिन गत वर्ष जर्मनी ने फौजी प्रदर्शन करके बिना आक्रमण किये ही आस्ट्रिया को जर्मनी में मिला लिया। इस समय आस्ट्रिया जर्मनी का ही अंग है। स्वाधीन आस्ट्रिया योरुप के नक़्शे से अचानक उड़ गया।

रू० - रोमानिया
यु-स्ले० - यूगोस्लैविया
ज र्म नी
पो लैं ड
सा: सो० रूस
प्रेग
चे को स्लो वे कि या
आ स्ट्रि या
हं गा री
रू०
बेलग्रेड
बुखारेस्ट
यु० गो० स्लै०
डेन्यूब
ब ल्गे रि या
ग्री स
प्रधान रेलवे
०
२००
४००

११—लिटिल एराटेराट (लघु मित्रराष्ट्र)

आस्ट्रिया-हंगारी के पुराने राज्य की काट-छांट से चेकोस्लोवेकिया का नया राज्य बनगया और यूगोस्लेविया, पोलैंड और रूमानिया के राज्य बढ़ गये। इन में चेकोस्लोवेकिया, यूगोस्लेविया और रूमानिया ने १९३३ में आपस में एक ऐसी सन्धि कर ली कि तीनों (सब) की विदेशी नीति एक रहे। विदेशी मामलों को तय करने के लिये तीनों देशों ने तीन मन्त्रियों की एक समिति नियुक्त की। एक आर्थिक समिति भी बनाई गई। यह तीनों देशों में रेलवे लाइनों को मिलाने और चुंगी की एकता रखने का प्रयत्न करेगी। तीनों देश उस सन्धि को दुहराने के पक्ष में नहीं हैं जो बड़ी लड़ाई के बाद हुई। वे आस्ट्रिया के हैप्सबर्ग राजवंश को फिर से (हंगारी की) गद्दी पर बैठाने के कट्टर विरोधी हैं। जब से जर्मनी ने आस्ट्रिया को मिला लिया तब से यह छोटे-छोटे राज्य जर्मन नाज़ियों से घबराने लगे हैं। उन्हें अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता को भारी संकट दिखाई देता है। तीनों डेन्यूब नदी के देश हैं। पर डेन्यूब के मार्ग के सम्बन्ध में डेन्यूब नदी की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है रूमानिया और यूगोस्लेविया के प्रधान जल और रेल-मार्ग हंगारी में होकर ही चेकोस्लोवेकिया को जाते हैं।

चे को स्लो वे कि या
चेकोस्लोवेकिया में मगायर (माजार लोग)
विएना
डेन्यूब
बर्गेन लैंड
बुदापेस्ट
ह ं गा री
तिसा
स्ज़ेगेड
ट्रान्सि ल्वे नि या
मारोस न०
रो मा नि या
बा ना त
जाग्रेब
द्रावे नदी
सावे नदी
यू गो -
स्लै वि या
बेलग्रेड
बुखारेस्ट
१९१८ के पहले रोमानियाँ और हंगरी की सीमा
वो प्रदेश जो १९१९ में रोमानियाँ और यूगोस्लेविया में मिल गया
० १०० २०० ३०० मील
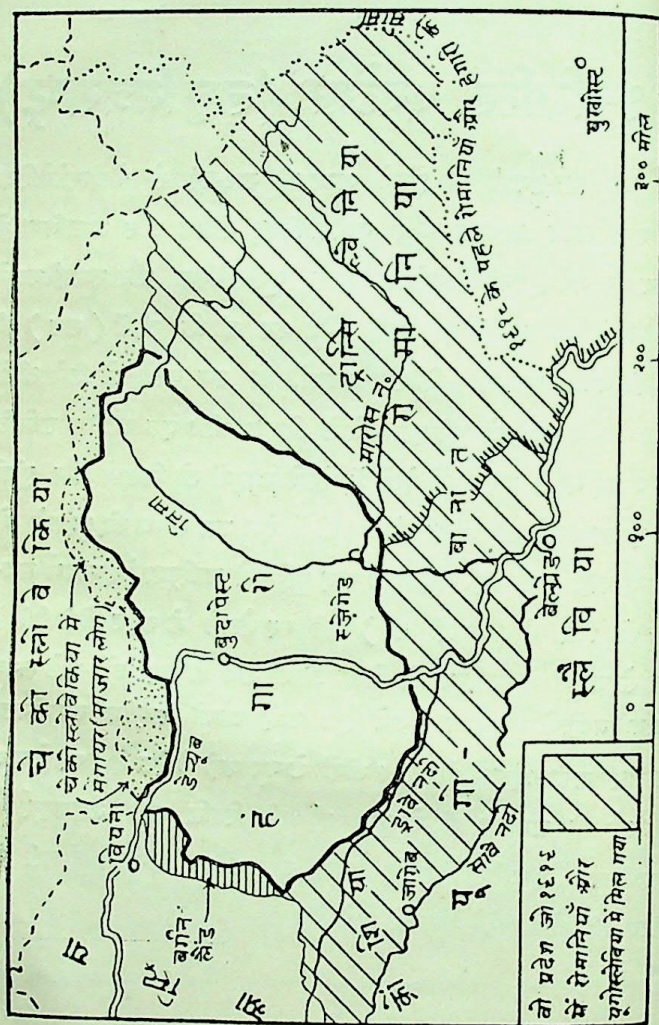
१२–हंगारी

नवीन हंगारी एक राज्य है। लेकिन वहां कोई राजा नहीं है। राज सिंहासन खाली है। एडमिरल होर्दी नाम मात्र के लिये युवराज का काम करते हैं। इस प्रकार हंगारी के लोग प्रगट रूप से १६१६ की सन्धि से नाराज़गी ज़ाहिर कर रहे हैं। यहाँ की सरकार ने बड़ी लड़ाई की सन्धि की शर्तों की बार बार निन्दा की। समय आने पर वह बल का भी प्रयोग करेगी। इस सन्धि से लगभग एक तिहाई मेगायर (माजार) हंगारी देश के बाहर रूमानिया (ट्रान्सिल्वेनिया) दक्षिणी चेकोस्लोवेकिया और यूगोस्लैविया (बानात) में कर दिये गये हैं। हंगारी के नेता हंगारी देश की सीमा को इस प्रकार बढ़ाना चाहते हैं कि यह छूटे हुए माजार लोग फिर से हंगारी देश में आजावें। वे ट्रान्सिल्वेनिया में स्वाधीन राज्य चाहते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि यूगोस्लैविया के क्रोट, बर्गेनलैंड के आस्ट्रियन और पूर्वी चेकोस्लोवेकिया के यूक्रेनियन लोगों का राजनैतिक भाग्य उनके ही बहुमत से निर्धारित किया जावे।

वेनिस
जागेब
फ्यूम
बेल्ग्रेड
अनकोना
रोम
बालोना
० ५० १०० २०० ३०० मील ४००
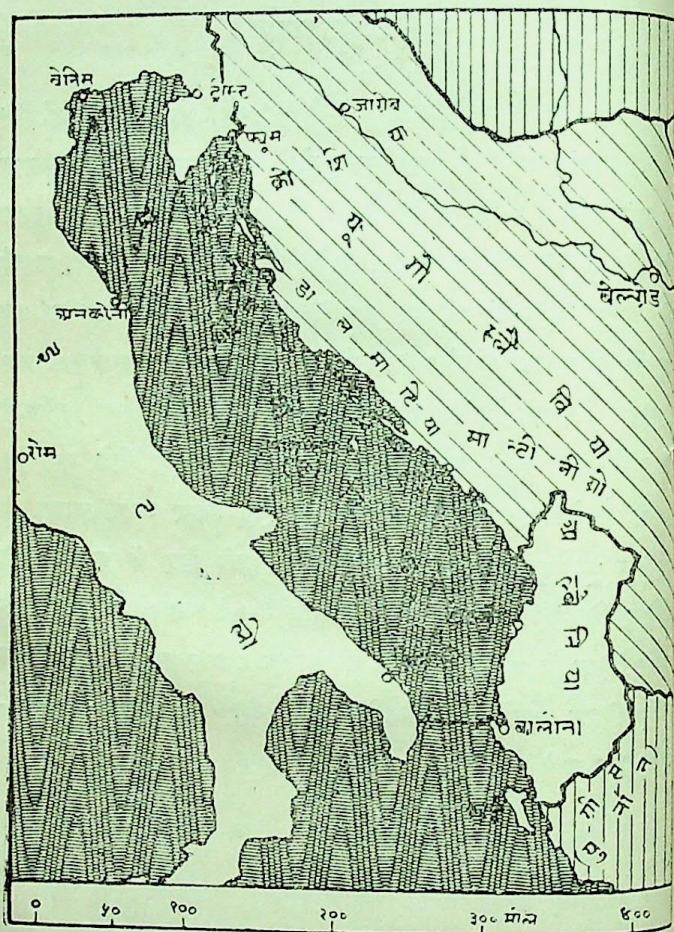
१३—इटली, यूगोस्लैविया और एड्रियाटिक

इटली देश एड्रियाटिक सागर को अपने अधिकार में रखना चाहता है। यूगोस्लैविया अपने नये मिले हुए डलमेशियन तट को सुधारना चाहता है। इसी से इटली और यूगोस्लैविया का विरोध है। १९१९ की सन्धि से इटली को आस्ट्रिया का ट्रीस्ट बन्दरगाह मिल गया। फ़्यूम बन्दरगाह को उसने ज़बरदस्ती छीन लिया १९२० की रपालो की सन्धि से इटली को ज़ारा बन्दरगाह और लागोस्टा द्वीप मिल गया।

१९१२ में बाल्कन युद्ध के बाद अल्बेनिया का स्वतन्त्र राज्य इसी लिये बनाया गया कि सर्विया समुद्र-तट तक न पहुँच सके। अल्बेनिया एक प्रकार से इटली की ही संरक्षकता में है। १९२६ में तिराना की सन्धि के अनुसार इटली को अल्बेनिया में हस्तक्षेप करने का अधिकार मिल गया। इटली के दक्षिणी-पूर्वी सिरे के ठीक सामने वालोना का बन्दरगाह सैनिक दृष्टि से इटली के बड़े काम का है। अल्बेनिया के आर्थिक सुधार की सभा का नियन्त्रण इटली के बैंक किया करते हैं। सैनिक सड़कें यूगोस्लैविया की सीमा तक बन चुकी हैं। एड्रियाटिक सागर में इटली और अल्बेनिया का ठीक वही सम्बन्ध है जो केरिबियन सागर में संयुक्तराष्ट्र अमरीका और क्यूबा का है। हाल में इटली और यूगोस्लैविया का सम्बन्ध कुछ सुधर गया है।

रूमानिया
डेन्यूब
बेलग्रेड
सावा नदी
मोरावा
स्प्लिट
एड्रियाटिक
इटली
अल्बानिया
ईजियन
पर्वत
रेलवे
0
१००
२००
३०० मील
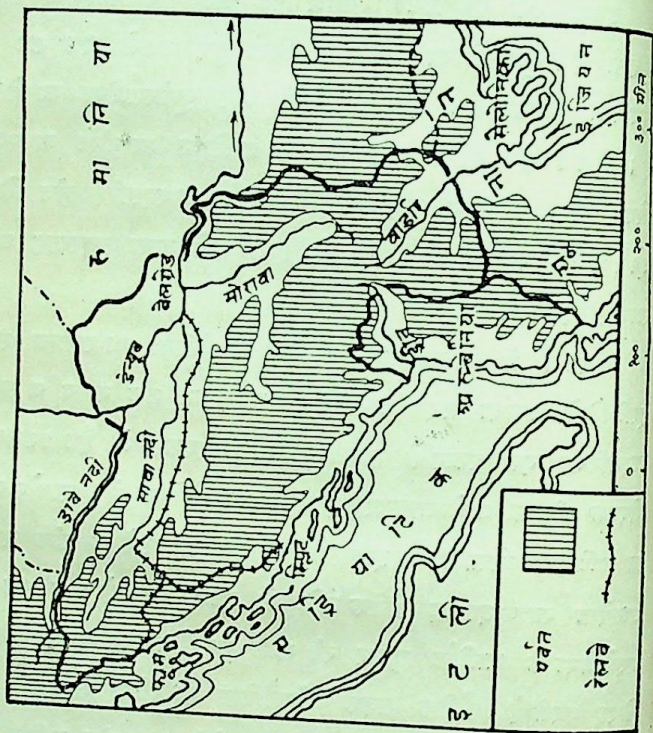
१४–लिटिल एएटेएट

१ यूगोस्लैविया

यूगोस्लैविया के नये राज्य के बन जाने से सर्बिया का पुराना स्वप्न पूरा हो गया। सर्बिया की बड़ी इच्छा थी कि वह एड्रियाटिक सागर तक पहुँच सके। लेकिन इससे यूगोस्लैविया को कठिनाइयाँ दूर नहीं हुई हैं। यूगोस्लैविया का पश्चिमी भाग पहाड़ी है। इसलिये इस ओर समुद्र तक पहुँचने में बड़ी बाधा है। देश को पार करके समुद्र-तट तक केवल दो प्रधान रेलवे लाइनें पहुँचती हैं। उत्तरी शाखा का अन्तिम स्टेशन फ्यूम है जो इटली के अधिकार में है। यूगोस्लैव लोगों को फ्यूम का बाहरी मुहल्ला सूसक मिला है। दक्षिणी रेलवे शाखा स्प्लिट (स्प्लाटो) में पहुँचती है। देश की प्रधान नदी डेन्यूब और इसकी सहायक ड्रावे और मोरावा नदियां एड्रियाटिक सागर से दूर पूर्व की ओर बहती हैं। ड्रीन घाटी दक्षिणी और मध्य भाग को पार करके अल्बेनिया में होकर बहती है। इटली के विरोध से यह मार्ग बन्द सा ही है। वार्डार घाटी दक्षिण की ओर इजियन सागर के लिये मार्ग बनाती है। इधर यूनानी लोगों का (सेलोनिका पर अधिकार होने से) घोर विरोध होता है।
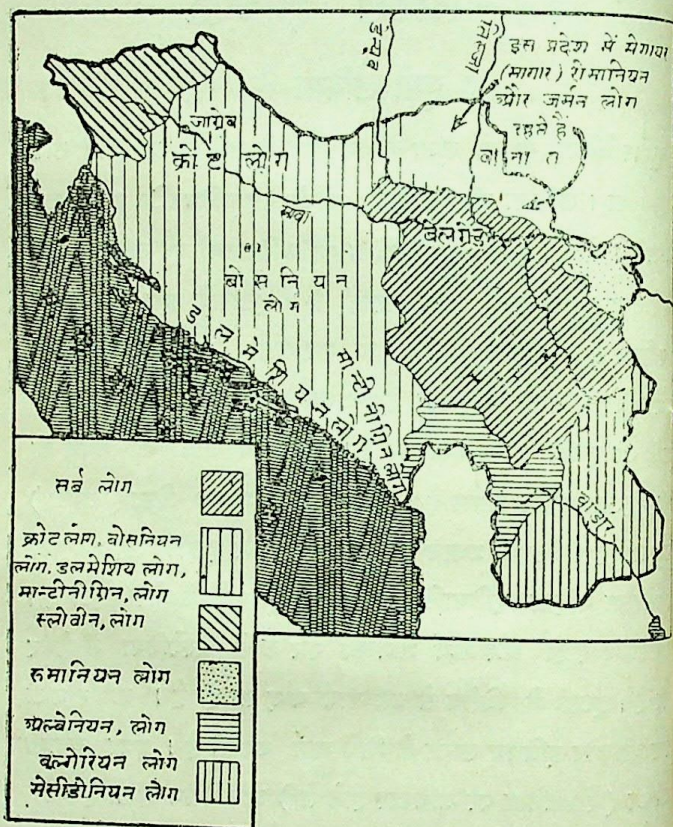
१५–यूगोस्लैविया की जातियाँ

यूगोस्लैविया सर्व, क्रोट और स्लोवीन लोगों का राज्य है पुरानी सर्बिया के बहुत कुछ बढ़ जाने से यह राज्य बना है। १९१२-१३ के बाल्कन युद्ध के बाद सर्बिया का प्रदेश दक्षिण में वार्डार घाटी की ओर काफी बढ़ गया। १९१९ में बड़ी लड़ाई के बाद आस्ट्रिया हंगारी के स्लोवानिक प्रान्त (क्रोशिया, स्लैवानिया बोसनिया, हार्ज़ी गोबिना और और मान्टीनीग्रो का छोटा राज्य सर्बिया में मिला दिया गया। इन सब के मिलने से यूगोस्लैविया का राज्य बना है। सर्व लोग इन नये प्रान्तों को अपने अधिकार में समझने लगे हैं। सर्व लोगों से अधिक सभ्य और कारबारी क्रोट लोग इसका विरोध करते हैं और अपने लिये स्वाधीनता चाहते हैं। क्रोट लोग केथालिक हैं। सर्व लोग आर्थोडाक्स चर्च के ईसाई हैं।

देश के भीतरी विग्रह को सुलझाने के लिये सर्बिया के राजा एलेग्ज़ेंडर ने नये ढंग की लोकमतसत्ता स्थापित की। इसके अनुसार देश में एक ही राष्ट्रीय दल को स्थान दिया गया। वह स्वयं डिक्टेटर या तानाशाह बन गया। लेकिन उसकी हत्या कर डाली गई। राजा के मारे जाने के बाद देश के सामने नई समस्या उपस्थित हुई। युवराज की सभा सर्बिया की एकता भी रखना चाहती है। इसके साथ ही क्रोशियन लोगों की मांगों को पूरा करना भी ज़रूरी है।

१६—लिटिल एगटेगट चेकोस्लोवेकिया

लिटिल एगटेगट के तीन देशों में चेकोस्लोवेकिया सबसे अधिक कारबारी है। स्वाधीनता के भाव भी यहाँ के लोगों में अधिक हैं। बड़ी लड़ाई के बाद आस्ट्रिया-हंगारी के राज्य के बड़े भाग के अलग हो जाने से प्रायः चेकोस्लोवेकिया देश बना है। केवल उत्तर में जर्मनी से अपर साइलेशिया का छोटा ज़िला अलग करके चेकोस्लोवेकिया में मिलाया गया है। इसी मे बोहेमिया का घना बसा हुआ प्रान्त शामिल है। चेकोस्लोवेकिया में लगभग ७० फ़ीसदी लोग चेक और स्लोवैक, २० फ़ीसदी जर्मन हैं। १९३५ के चुनाव में यहां के नाजीदल को अपूर्व सफलता मिली है। दस फी सदी मेगायर और रुथेनियन हैं। रुथेनियन प्रान्त चेकोस्लोवेकिया के एकदम सिरे पर स्थित है। इसमें न चेक न स्लोवैक लोग रहते हैं। इसमें पुरानी हंगारी के प्रायः बड़े बड़े जागीरदार मेगायर लोग रहते हैं। इस प्रान्त को केवल रूमानिया से अटूट मार्ग सम्बन्धी सम्बन्ध स्थापित करने के लिये हंगारी से छीन कर मिलाया गया था। इससे मेगायर जनता और चेकोस्लोवैक सरकार में बड़ी अनबन रहती है। मेगायर किसानों का रहन सहन भी देश के चेक कारबारी लोगों से एकदम भिन्न है।
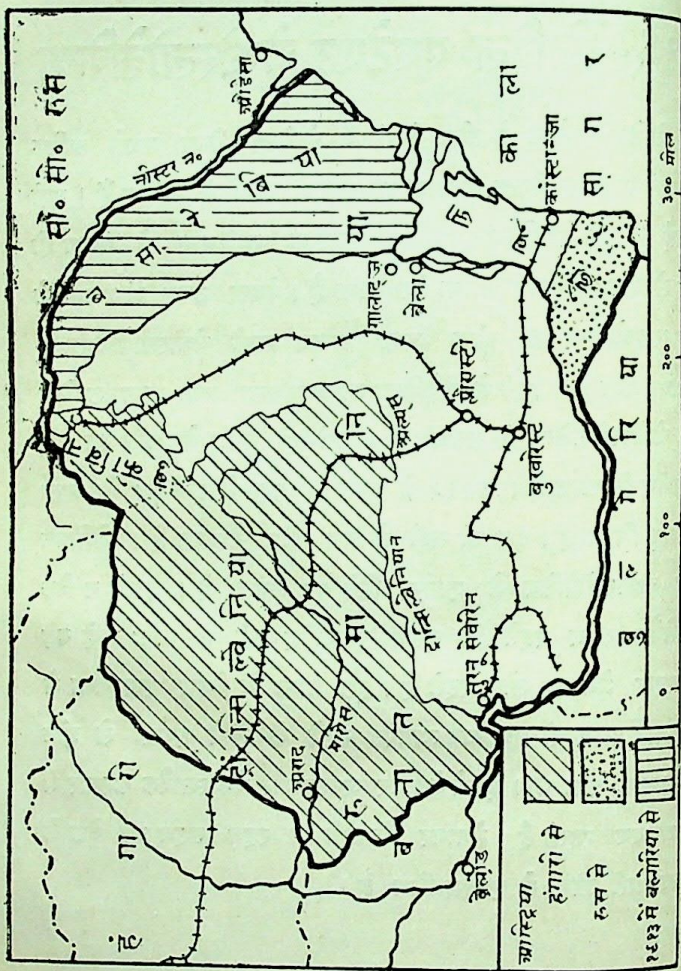
१७—लिटिल एएटेएट रूमानिया

बड़ी लड़ाई के बाद रूमानिया देश पहले से दुगने से भी अधिक बढ़ गया है। इसी लिये रूमानिया बड़ी लड़ाई से सम्बन्ध रखने वाली सन्धियों को दुहराने (सुधारने) के लिये तैयार नहीं है। यह प्रायः खेतिहर देश है। कई नये भागों के मिल जाने से रूमानिया में कई जातियों का जमघट हो गया है। रूमानियन लोगों के अतिरिक्त यहाँ लगभग ढाई लाख यूक्रेनियन, ढाई लाख जर्मन और यहूदी और दस लाख मेगायर (माजार) दो लाख बलगेरियन और दो लाख तुर्की और तारतार रहते हैं।

यूक्रेनियन लोग बसारेबिया प्रान्त में रहते हैं। इस प्रान्त को रूमानिया ने क्रान्ति के समय १६१६ ई० में रूस से छीन लिया था। बुकोविना प्रान्त पहले आस्ट्रिया के सम्राट की सम्पत्ति थी। माजार लोग अधिकतर ट्रान्सिल्वेनिया, और बानात में रहते हैं। डोब्रूजा प्रान्त का दक्षिणी भाग १६१३ ई० में दूसरे बाल्कन युद्ध के बाद रूमानिया ने बलगेरिया से छीन लिया था। नाज़ी कारनामों से रूमानिया में फिर यहूदी प्रश्न उठ खड़ा हुआ है।

रूमानिया का प्रधान निर्यात गेहूँ और मिट्टी का तेल है। मिट्टी के तेल के चश्मे अधिकतर ट्रान्सिल्वेनियन अल्पस के दक्षिणी ढालों पर पाये जाते हैं।

प्रथम बाल्कन युद्ध के बाद बल्गेरिया ने जिस प्रदेश को लेने का दावा किया
जो प्रदेश बल्गेरिया को दूसरे बाल्कन युद्ध के बाद मिला
काली मोटी लकीर के बाहर वाला प्रदेश बड़ी लड़ाई के बाद बल्गेरिया से ले लिया गया
बाल्कन युद्ध के बाद रुमानिया को मिल गया
रुमानिया
बुखारेस्ट
डेन्यूब
वरना
सोफिया
बल्गेरिया
काला सागर
टर्की
इस्तम्बोल (कुस्तुनतुनिया)
सरबिया
मांटीनीग्रो
उस्कब
मेसीडोनिया
सेलोनिका
दुराजो
वालोना
अल्बेनिया
ग्रीस
इजियन
डार्डनल्स
एड्रियाटिक

१८—बल्गेरिया

बल्गेरिया को अक्सर बाल्कन प्रदेश का हंगारी कहते हैं। हंगारी ी तरह बल्गेरिया भी १६१८ की सन्धि से असन्तुष्ट है। वह इसको यथाशीघ्र बदलवाना चाहता है। इससे पहले १६१३ ई० की सन्धि पे भी उसे घोर असन्तोष है। १६१२ में बल्गेरिया अपने सब पड़ोसियों अधिक बलवान था। १६१३ ई० में जब उसने अपने पड़ोसी मित्रों से मिलकर टर्की को हराया तो उसे कोई विशेष लाभ न हुआ। १६१३ में सर्बिया ने मेसीडोनिया और ग्रीस (यूनान) ने सेलोनिका ले लिया। रूमानिया ने उत्तर की ओर दक्षिणी डोब्रूजा प्रदेश ले लिया बल्गेरिया को ईजियन सागर के किनारे का कुछ भाग मिला। वह भी १६१८ में उस से छीन लिया गया।

यूगोस्लैविया से स्थायी शत्रुता रखना ही बल्गेरिया की विदेशी नीति मालूम होती है। लेकिन ड्रांग नाच ओस्टन (नाज़ी) जर्मनी के डर से शायद दोनों देशों में कुछ मित्र भाव हो जावे।

रूमानिया की तरह बल्गेरिया के लोग भी अधिकतर किसान हैं। वे अपनी सरकार से बहुत ही असन्तुष्ट हैं। उनको दबाने के लिये तरह-तरह के कानून बने। हाल में फौजी अफसरों और राजा बोरिस के बीच में जो दांव पेंच चले उससे सम्भव है कि नया शासन-सुधार अधिक सन्तोष जनक हो।

१९–ग्रीस (यूनान)

ग्रीस देश में अधिक तर ईजियन सागर का तट और कुछ द्वीप शामिल है। १९१२-१३ के बाल्कन युद्ध के बाद ग्रीस को कुछ उत्तरी तट और सेलोनिका मिल गया। बड़ी लड़ाई के बाद मित्र राष्ट्रों ने टर्की से पूर्वी थ्रेस छीन कर स्मर्ना (कुस्तुन्तुनिया के पास तक) और कई द्वीप देकर ग्रीस की सीमा को बहुत कुछ बढ़ा दिया। लेकिन १९२१-२२ में टर्की से बुरी तरह हारने के बाद स्मर्ना और पूर्वी थ्रेस चला गया। हाल में ग्रीस और टर्की में मित्रता हो गई। लीग (राष्ट्र-संघ) की आर्थिक सहायता से ग्रीस में बसे हुए टर्क टर्की में पहुँचा दिये गये और टर्की में बसे हुए यूनानी ग्रीस भेज दिये गये। १९३३ में ग्रीस और टर्की में मित्रता सम्बन्धी सन्धि हो गई। इस से दोनों ने आपस की सीमा को सुरक्षित रखने और अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर एक मत रखने का निश्चिय कर लिया। जब से इटली ने डोडेकनीज़ द्वीप समूह और रहोड द्वीप पर अधिकार कर लिया और वहाँ अपना फौजी अड्डा बनाया है तब से ग्रीस की राष्ट्रीय भावनायें कुछ विफल सी हो गई हैं। साइप्रस द्वीप पर लगातार ब्रिटिश अधिकार भी यूनानी राष्ट्रीय सम्मान को धक्का पहुँचाता है।
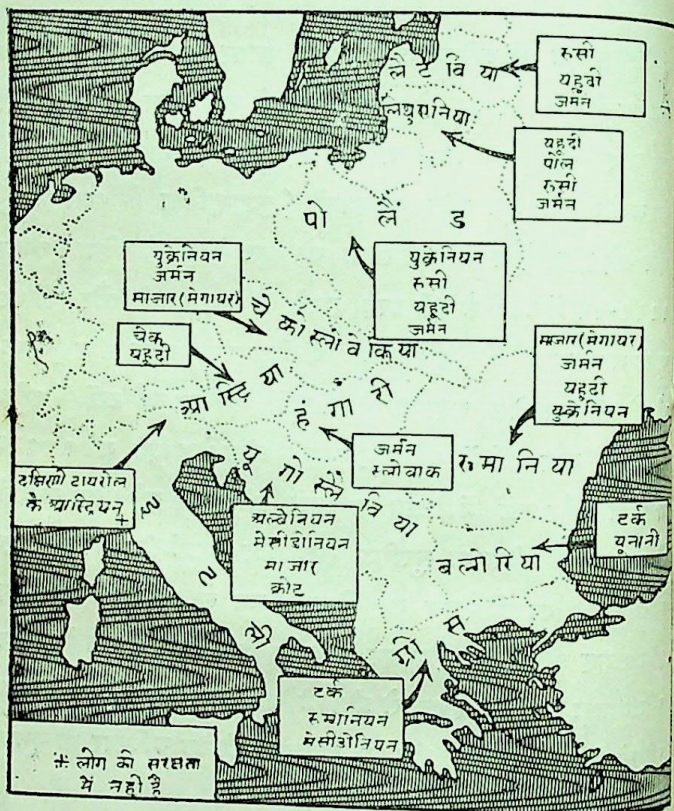
२०—पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प-संख्यक जातियां

बड़ी लड़ाई और उसके बाद होने वाली सन्धि के अनुसार पूर्वी और मध्य योरुप में जो जातियाँ अल्प संख्या में थीं प्रायः उन सब ने अलग अलग राष्ट्र बना लिये। इनके यहां जो अल्प संख्या में लोग बचे उनके स्वत्वों की रक्षा का भार लीग (राष्ट्र संघ) ने अपने ऊपर ले लिया। पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, यूगोस्लैविया, रूमानिया और ग्रीस की सीमायें पहले से काफी अधिक बढ़ गई। अल्प संख्या के लोग लीग की काउंसिल के सामने शिकायत पेश कर सकते हैं। लेकिन लीग की प्रथा ऐसी ढीली है कि इसमें बहुत कुछ देरी होने का डर रहता है। लीग ने अब तक किसी अल्प संख्या का पक्ष लेकर किसी राष्ट्र के शासन प्रबन्ध में हस्तक्षेप नहीं किया है। पोलिश यूक्रेन ने अपना स्वराज्य स्थापित करने के लिये लीग को कई बार अर्ज़ी दी। लेकिन कोई फल न हुआ। यूक्रेनियन में पोलैंड और रूमानिया के रुथेनियन भी शामिल हैं।

फ़िनलैंड
हेल्सिंकी
एस्टोनिया
लैटविया
वारसा
पोलैंड
चेकोस्लोवेकिया
डैन्यूब
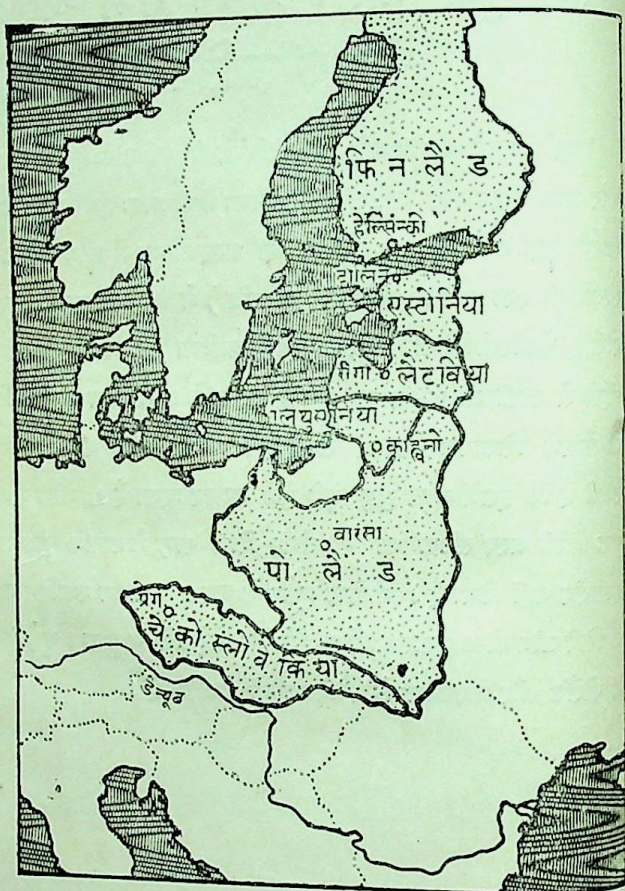
२१—योरुप के नये राष्ट्र

बड़ी लड़ाई के बाद योरुप की राजनैतिक सीमाओं में घोर परिवर्तन हो गया। १९१९ में छः नये और स्वाधीन राष्ट्र बन गये। इन नये राष्ट्रों के बनाने में ऊपर से राष्ट्रीयता के सिद्धान्त का पालन दिखलाया गया। ऐसा करना मित्र राष्ट्रों के लिये सुविधा जनक था। नये छः राष्ट्रों में चार राष्ट्र एकदम रूस के प्रदेश को अलग कर के बनाये गये। पांचवे राष्ट्र अर्थात् पोलैंड को फिर से बनाने में भी रूस का बहुत बड़ा भाग अलग किया गया। चेकोस्लोवेकिया प्रायः पुराने आस्ट्रिया-हंगारी के साम्राज्य के छिन्न भिन्न होने से बना है। प्रथम पांचराष्ट्रों का समुद्र तक पहुँचना सुगम है। पोलैंड को समुद्र तक पहुँचने के लिये मार्ग देने के लिये जर्मन के प्रदेश को दो भागों में बांट कर पोलिश कारीडार बनाया गया। डेंज़िग बन्दरगाह में जर्मनों की अधिकता और बहिष्कार से बचने के लिये पोलैंड की सरकार ने गिडोनिया नाम का एक नया बन्दरगाह बनाया। चेकोस्लोवेकिया चारों ओर से स्थल से घिरा हुआ है। विदेशी समुद्र-तटों तक पहुँचने के लिये इसे नदियों की सहायता लेनी पड़ती है।

लेनिनग्रेड
एल्ब
राइन
ओडर
विस्चुला
डेन्यूब
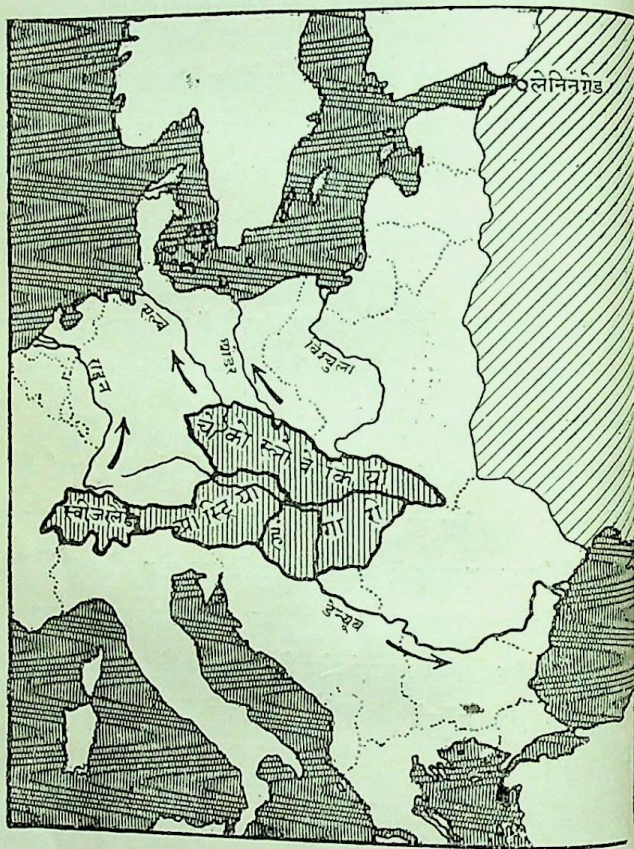
२२—योरुप के भीतरी राज्य

बड़ी लड़ाई के पहले योरुप में स्विज़रलैंड और सर्बिया ही दो ऐसे भीतरी देश थे जो किसी समुद्र को नहीं छूते थे। बड़ी लड़ाई के बाद आस्ट्रिया हंगारी और चेकोस्लेवेकिया तीन और देश भीतर डाल दिये गये। वे किसी समुद्र को नही छूते हैं। रूस का समुद्र तट भी बहुत कम हो गया। फिनलैंड की खाड़ी के पास वाले तट को छोड़कर शेष तट रूस के हाथ से जाता रहा।

हर किसी राज्य के लिये जलमार्गों का होना आवश्यक है। कुछ नदियों को अन्तर्राष्ट्रीय महत्व मिलगया। राइन, एल्ब और ओडर इनमें प्रधान हैं। यह तीनों जर्मनी की प्रधान रूप से जर्मनी की नदियां हैं। डेन्यूब नदी जर्मनी के दक्षिण में निकलती है। लेकिन वह जर्मनी के दक्षिण वाले देशों के लिये जल-मार्ग बनाती है। इन सब नदियों पर कुछ न कुछ अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण है। इस प्रकार स्विज़रलैंड को राइन में चेकोस्लोवेकिया को एल्ब और ओडर में अपने स्टीमर चलाने का अधिकार मिल गया है। इससे चेकोस्लोवेकिया के बाहरी व्यापार का प्रधान बन्दरगाह हेम्बर्ग है जो जर्मनी में एल्ब के मुहाने के पास स्थित है। डेन्यूब नदी का नियन्त्रण एक कमीशन के हाथ में है। इस कमीशन के सदस्य चार हैं। इनमें बाल्कन प्रदेश के केवल रूमानिया देश का प्रतिनिधि इसमें शामिल है। शेष तीन ब्रिटेन, फ्रांस, और इटली के हैं। बाल्कन प्रदेश के नहीं है। इस तरह बाहर की बड़ी शक्तियों को बाल्कन प्रदेश के झगड़ों में हस्तक्षेप करने का मौक़ा मिलता रहता है।

सघन आबादी
तीन प्रदेश जो पहले अल्स्टर के हिस्से थे
लंडनडरी
उत्तरी
आयरलैंड
बेलफ़ास्ट
मो०
क०
डब्लिन
गाल्वे
लिमेरिक
वाटरफ़ोर्ड
वेक्सफर्ड
कार्क
०
५०
१००
मील
२००
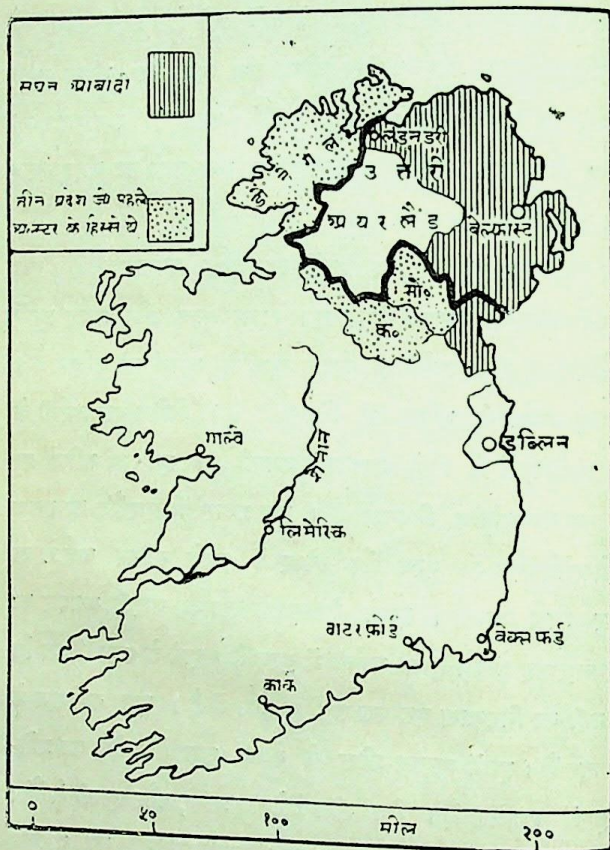
२३—आयरलैंड

उत्तरी आयरलैंड में ब्रिटेन से आये हुए प्रोटेस्टेंट लोगों की अधिकता है। द्वीप के शेष बड़े भाग में यहाँ के असली देशवासी केथलिक लोगों की अधिकता है। केथलिक लोगों का राष्ट्रीयदल ब्रिटेन से अलग होकर एक पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्र स्थापित करना चाहता है। उत्तर के अल्प संख्यक लोग ब्रिटिश पार्ल्यामेंट से सम्बन्ध रखना चाहते हैं। इस समस्या को हल करने के लिये उत्तरी आयरलैंड एक अलग देश बना दिया गया। इसकी पार्ल्यामेंट भी अलग कर दी गई। आयरलैंड के केथलिक लोगों को फ्रीस्टेट के नाम से एक स्वाधीन राज्य बना दिया गया। लेकिन ब्रिटिश साम्राज्य से अलग होने का अधिकार उनको नहीं दिया गया। उत्तरी प्रदेश के अलग हो जाने से घना बसा हुआ और कारबारी प्रदेश अलग हो गया। इस में सारे देश की एक तिहाई आबादी संयुक्तराष्ट्र अमरीका में जाकर बस जाती थी। लेकिन अब अमरीका ने अपना दरवाज़ा बन्द सा कर लिया है। इधर ब्रिटेन और आयरलैंड की पुरानी दुश्मनी में किसी तरह की कमी न होने के कारण ब्रिटेन के बाज़ारों में आयरलैंड का मक्खन और खेती का दूसरा सामान आज़ादी से नहीं बिक पाता है। इस लिये आयरलैंड के राष्ट्रपति के सामने विकट आर्थिक समस्या है कि द्वीप की बढ़ती हुई आबादी को किस प्रकार भोजन प्रदान किया जावे। आर्थिक दृष्टि से द्वीप का स्वावलम्बी बनाने के लिये पांच लाख एकड़ के बड़े बड़े खेतों और चरागाहों को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट कर किसानों को देने का विचार हो रहा है। आयरलैंड के किसानों को ज़मीन की बड़ी ज़रूरत है।

स्पेन की गृह-कलह का नक्शा

२४—स्पेन का विच्छेद

आइवेरिया प्रायद्वीप का सब से बड़ा भाग स्पेन है। स्पेन में नदियों की घाटियें और पठारों के बीच में पहाड़ खड़े हुये हैं और देश की एकता में प्राकृतिक बाधा डालते हैं। राजा के चले जाने के बाद देश में जो प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हुआ उसे प्रबल होने का पूरा अवसर न मिल सका। उत्तर में बास्क और पूर्व की ओर भूमध्य सागर के पास रहने वाले केटेलन लोग स्वाधीन होने का प्रयत्न करने लगे। नया प्रजातन्त्र जन साधारण और किसानों के आर्थिक कष्टों को कुछ भी दूर नहीं कर पाया था कि इतने में बड़े बड़े जागीरदारों, पादरियों और सेनापतियों ने मिलकर जनरल फ्रांको की अध्यक्षता में विद्रोह का झंडा उठाया। मरक्को में स्थित स्पेन के मूर सिपाही विद्रोहियों का साथ देने के लिये बुलाये गये। विद्रोहियों को छिपे छिपे इटली जर्मनी, और पुर्तगाल से मदद मिल रही है। स्पेन की सरकार को रूस और फ्रान्स से सहायता मिलती है। इसी से स्पेन की गृह-कलह अन्तर्राष्ट्रीय लड़ाई का रूप धारण करती जा रही है।

शकेल्ट का वांया किनारा डच
हां लैं ड
फ्लशिंग
ओस्टेंड
ब्रुजेज
घेंट
शेल्ट
ब्रुसेल्स
लोवेन
याइप्रीज
कोट्राई
टोर्नाई
मान्स
नेमूर
म्यूज
मलमेडी
इस रेखा के उत्तर में फ्लेमिश और दक्षिण में वेलून लोग रहते हैं
फ्रां स
जनसंख्या की सघनता
५०० से ऊपर
२५० ,, ५००
२५० से कम
० ५० मील १००
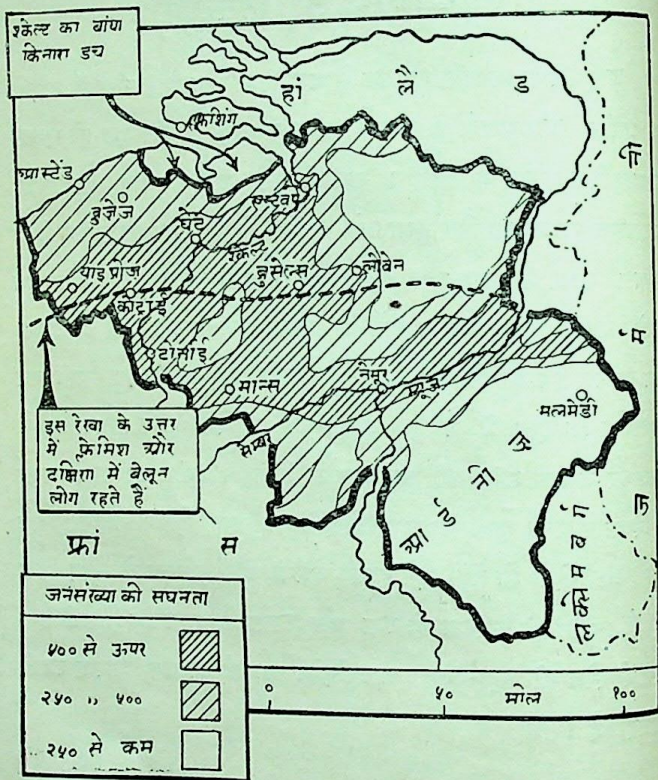
२५—बेल्जियम की जातियां

बेल्जियम के दक्षिणी बड़े भाग में रहने वाले वालून लोग फ्रेंच भाषा बोलते हैं। उत्तरी भाग में रहने वाले फ़्लमिंग लोग डच लोगों से मिलती जुलती लो जर्मन भाषा बोलते हैं। भाषा की लड़ाई एक बार इतनी बढ़ी कि बड़ी लड़ाई के समय में फ़्लेमिश नेताओं ने जर्मनी की छत्र-छाया में एक अलग स्वाधीन राज्य स्थापित करने की कोशिश की। बड़ी लड़ाई के बाद वालून लोगों ने फ़्लेमिश लोगों की इन हरकतों को देशद्रोही ठहराया और कुछ लोगों को दंड देने का निश्चय किया गया। इस से बड़ा कोलाहल मचा। लेकिन फ्लेमिश लोगों की भाषा को राज्य सभा में स्थान मिल गया और घेन्ट विश्वविद्यालय में फ़्लेमिश भाषा को प्रधानता हो गई।

स्केल्ट नदी के बायें किनारे के सम्बन्ध में हालैंड और बेल्जियम के बीच में झगड़ा चल रहा है। इस समय स्केल्ट नदी के दोनों किनारे डच लोगों के अधिकार में हैं। एण्टवर्प बन्दरगाह को सुरक्षित रखने के लिये बेल्जियन लोग बायें किनारे पर अपना अधिकार चाहते हैं।

फ्रांस
स्पेन
यूगोस्लाविया
तुर्किस्तान
सीरियाँ
ग्रीस
क्रीट
साइप्रस
फिलीस्तीन
स्वेज
मिस्र
ट्रिपोली
ट्यूनिस
अल्जीरिया
मरक्को
जिब्राल्टर
० २५० ५००
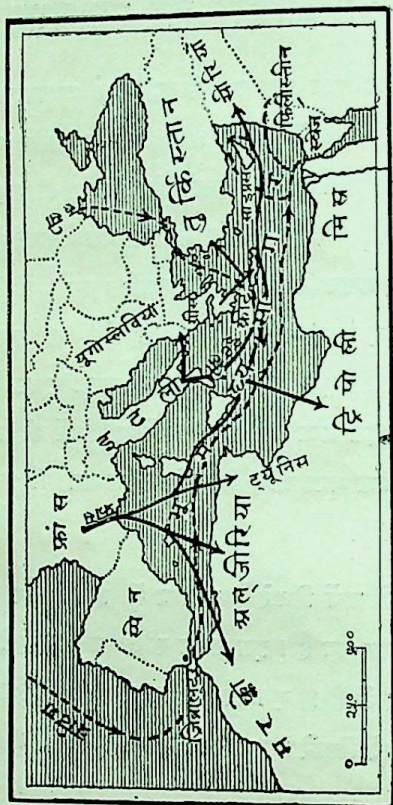
२६—भूमध्यसागर में जातियों का संघर्ष

प्राचीन रोमन काल में भूमध्यसागर पहले पहल प्रसिद्ध हो गया। जब योरुपीय शक्तियाँ अफ्रीका में घुसने लगीं तब भूमध्यसागर का महत्व और भी अधिक बढ़ गया। स्वेज़ नहर के खुल जाने से भूमध्य-सागर पहले से अधिक महत्वपूर्ण बन गया। यहाँ कई जातियों के हितों का संघर्ष होता है। फ्रांस के लिये फ्रांस से उत्तरी अफ्रीका को जाने वाले मार्ग बड़े काम के हैं। इटली भूमध्यसागर को एक रोमन झील समझता है। इटली से ट्रिपली और लालसागर पर बसे हुए इटेलियन उपनिवेशों और एबीसीनिया को मार्ग गये हैं। एड्रियाटिक सागर पर इटली का प्रायः निरंकुश अधिकार है। पश्चिम से पूर्व (भारतवर्ष) को जाने वाला समुद्री मार्ग ब्रिटेन के लिये जीवन-मरण का प्रश्न रखता है। जिब्राल्टर, माल्टा, साइप्रस और स्वेज़ इस जल-मार्ग की कुंजी हैं। ग्रीस (यूनान) को यह सह्य नहीं है कि रोडद्वीप और डोडेकेनीज़ द्वीपों पर इटली का अधिकार जमा रहे। रूस के दक्षिणी तट के जलमार्ग बास्फोरस और डार्डनेल्स जलसंयोजकों में होकर पूर्वी भूमध्यसागर में पहुँचता है। इसलिये रूस चाहता है कि भूमध्यसागर में किसी एक जाति का विशेष रूप से प्रभुत्व न होने पावे।

२७—पिछली लड़ाइयों में टर्की का ह्रास

बालकन युद्ध के बाद योरूपीय जातियों के ऊपर से टर्की का राज्य जाता रहा। बड़ी लड़ाई ने अरब, सिरिया, पेलेस्टाइन और इराक़ के अरबों को भी तुर्की शासन से मुक्त कर दिया। मिस्र देश से तुर्कों का प्रभुत्व बड़ी लड़ाई के आरम्भ में ही जाता रहा था। इस समय टर्की में तुर्कों की प्रधानता है। केवल दजला और फरात नदियों के निकास के पास कुर्द लोग कुछ अल्प संख्या में रहते हैं। बड़ी लड़ाई के बाद सिरिया पर फ्रांस का मैंडेट होगया। पेलेस्टायन, ट्रान्स जार्डन और इराक़ पर ब्रिटिश मैंडेट हो गया। पीछे से इराक़ प्रायः स्वाधीन हो गया। अरब देश में मित्रराष्ट्रों ने अपने अपने पिट्ठू कई सरदार और अमीर खड़े कर दिये। अधिक दक्षिण की ओर इब्नसऊद ने बहुतों को जीत (या मिला) लिया।

बड़ी लड़ाई के बाद बास्फोरस और डार्डनेल्स के जलसंयोजकों के ऊपर से क़िलेबन्दी हटा ली गई थी। लेकिन १९३६ में इस प्रदेश पर टर्की ने फिर अपना पूरा अधिकार कर लिया।

जन संख्या
प्रति वर्ग मील में

२८—टर्की

टर्की को दस वर्ष में चार विकराल लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं। १९११-१२ में ट्रिपली में इटली से तथा १९१२ में बालकन युद्ध हुआ। १९१४-१८ के योरुपीय युद्ध में टर्की ने जर्मनी का साथ दिया। १९२१-२२ में ग्रीस से टर्की को घोर युद्ध करना पड़ा। इसके बाद मुस्तफा कमाल पाशा की अध्यक्षता में टर्की का देश शान्ति की ओर बढ़ने लगा। टर्की का राज्य योरुप में कुस्तन्तुनिया और उसके पड़ोस तक ही सीमित रह गया। एशिया में अनातूलिया का विशाल पठार है। कमालपाशा ने देश को उठाने के लिये रेल, सड़क और कारबार की ओर राष्ट्र का पूरा ज़ोर लगा दिया। अनातूलिया पठार के आर पार जाने वाली एक ऐसी रेल की योजना हो रही है जो काला सागर पर बसे हुए समसौन बन्दरगाह को भूमध्यसागर के मर्सीना बन्दरगाह से मिलावेगी। एक लाइन अंगोरा से रूसी सीमा तक जावेगी। आजकल अंगोरा को अंकारा और कुस्तुन्तुनिया को इस्तम्बोल कहते हैं।

बड़ी लड़ाई के बाद रूस और टर्की में बड़ी मित्रता हो गई। हाल में टर्की के पुराने दुश्मन ग्रीस से भी मित्रता हो गई है।

टर्की
सिरिया
इराक
ट्रांसजार्डन
स्वेज
मिस्र
सूडान
अरब
यमन
बहरेन
ओमन
अफगानिस्तान
हिन्दुस्तान
कराची
बम्बई
अदन
सोकोट्रा
ब्रिटिश सोमाली लैंड
० ५०० १००० २००० ३००० मील ४०००

२९—पश्चिमी एशिया में अंग्रेज़ी अंकुश

पूर्वी भूमध्यसागर के छूने वाला जो स्थल प्रदेश लाल सागर और फारस की खाड़ी के बीच में स्थित है वह ब्रिटिश साम्राज्य के बड़े काम का है। यहीं होकर हिन्दुस्तान और हिन्दमहासागर के लिये छोटा समुद्री रास्ता है। यहीं होकर हिन्दुस्तान और आस्ट्रेलिया के लिये ब्रिटिश हवाई जहाज़ जाते हैं। इसी मार्ग को काटने के लिये जर्मनी ने टर्की के आर पार जाने वाली बर्लिन-बग़दाद रेलवे की योजना की थी। फारस की खाड़ी से टर्की होकर योरुप जाने वाला स्थल मार्ग काफी लोकप्रिय हो गया है। इस मार्ग पर इस समय विशेष रूप से ब्रिटेन का नियन्त्रण है। इस मार्ग में बाधा न पड़े इसलिये मिस्र देश को पूरी आज़ादी नहीं दी जा सकती। इसी से ब्रिटिश राजनीतिज्ञ इब्नसऊद का ट्रान्सजार्डन तक बढ़ना सहन नहीं कर सकते। बड़ी लड़ाई ने इस प्रदेश पर से तुर्की शासन को उठा लिया। लेकिन एबीसीनिया की विजय और यीमेन (यमन) में इटली की चालों से यह मार्ग संकट में पड़ता जा रहा है।

यो रु प
फ्रांस
टेंजीर
मारिटानिया
मराक्को
सहारा
सेनेगाल
ऊपरी वोल्टा
आइवरी तट
नाइजर
चाड
कैमरून
विषुवत रेखा का प्रदेश
विषुवत रेखा
बेल्जियन कांगो
०
५००
१०००
२०००
३०००
४०००
मील

३०—फ्रान्स और पश्चिमी भूमध्यसागर

जब से सिरिया के ऊपर फ्रांस का मेंडेट (शासन) हुआ है तब से पूर्वी भूमध्य सागर भी फ्रांस के काम का हो गया है। लेकिन फ्रांस का प्रधान साम्राज्य पश्चिमी भूमध्य सागर के उत्तरी किनारे से आरम्भ होता है। थोड़े से स्पैनिश जोन (पटी) और ज़रा से अन्तराष्ट्रीय टैंजीर को छोड़ कर सारा उत्तरी अफ्रीका (एटलस प्रदेश) फ्रांस के अधिकार में हैं। विषुवत रेखा के पास भूत पूर्व जर्मन उपनिवेशों पर फ्रांसीसी अधिकार हो जाने से फ्रांस का साम्राज्य भूमध्य सागर के दक्षिणी तट से ३००० मील दक्षिण की ओर बढ़ गया है। यहाँ से फ्रांस को शान्ति के समय कच्चा माल और लड़ाई के समय असंख्य सिपाही मिलते हैं। वैसे तो फ्रांस का राज्य अफ्रीका के पूर्व में मेडेगास्कर और एशिया के फ्रेंच इण्डोचीन पर भी है। लेकिन फ्रांस को सब से बड़ा लाभ उत्तरी-पश्चिमी अफ्रीका से होता है। इसी से फ्रांस पश्चिमी भूमध्य सागर के जल-मार्ग को अपने हाथ में रखने के लिये तुला हुआ है।

उपज
६,००० फुट तक ऊंचा
काफ़ला मार्ग
बनने वाली रेलवे
चालू रेलवे
अ र ब
मसावा
असमारा
अदोवा
नसीर
अकोबो
डिजिबा
हरार
दोलो
कीनिया (ब्रिटिश)
अंग्रेज़ी मील
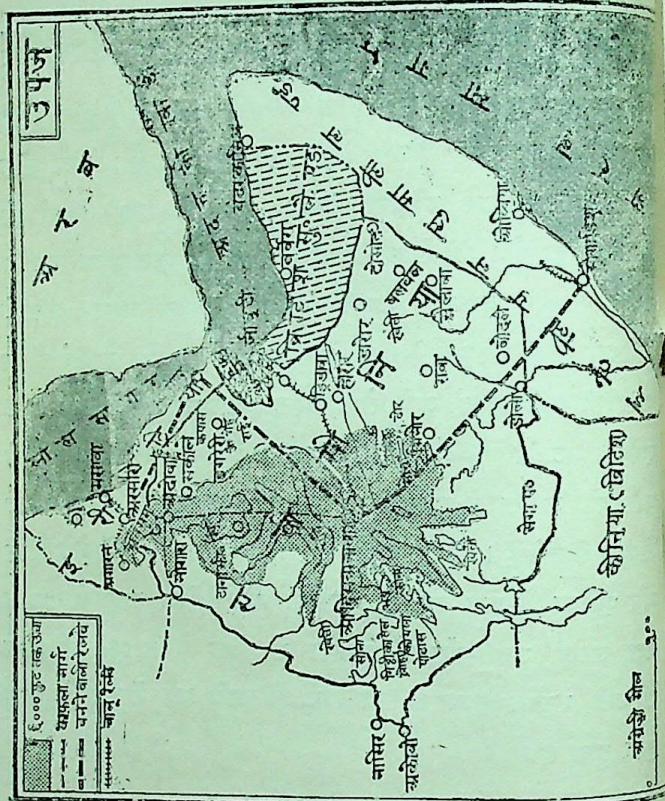
३१ इटली और लाल सागर

साम्राज्यवाद की दौड़ में इटली कुछ पिछड़ गया। अफ्रीका के अच्छे अच्छे प्रदेश दूसरी जातियों ने घेर लिये। मिस्र देश के पास मिला हुआ लिबिया का प्रायः रेगिस्तानी प्रदेश १९१२ में इटली ने टर्की से छीन लिया। लाल सागर के किनारे इरीट्रिया और इटेलियन सुमाली लड पर उसने पहले ही अधिकार कर लिया था। फिर उसने अदन की खाड़ी के पास वाले अरब प्रदेश पर अधिकार जमाया। अन्त में १९३५ में इटली ने एबीसीनिया पर धावा बोलकर बम्ब और हवाई जहाज़ों के ज़ोर से वहाँ ६ महीने के भीतर अधिकार कर लिया। इस समय एबीसीनिया पर इटली का फौजी अधिकार है। इसी से इटली का राजा एबीसीनिया का सम्राट कहलाता है।

लि बि या
इरीट्रिया
इ० सुमाली लैण्ड
इटेलियन
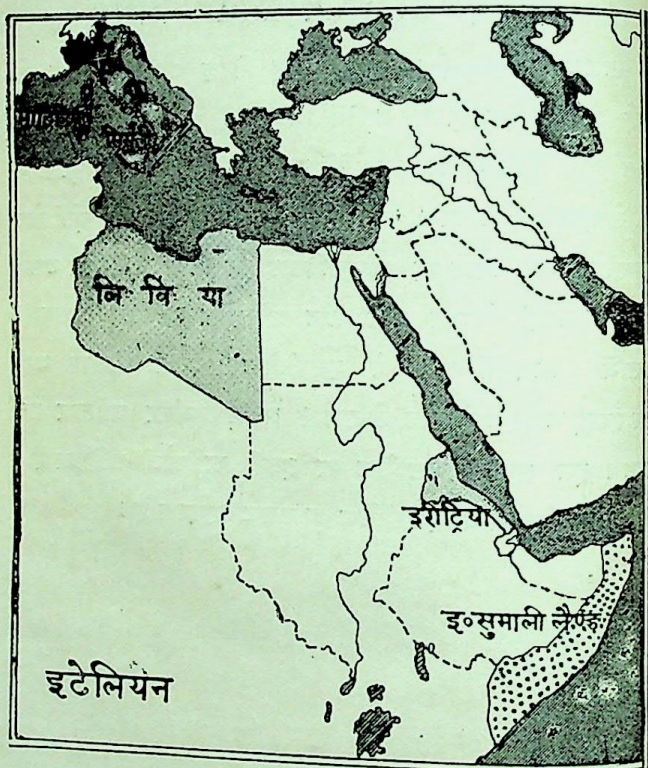
३२—एबीसीनिया

अब से ५० वर्ष पहले से ही इटली की आँख एबीसीनिया पर लगी थी। इटली ने पहले मसावा लिया और इरीट्रिया उपनिवेश की नींव डाली। फिर इटली ने (इटेलियन) सुमालीलैंड पर अधिकार घोषित किया। दस वर्ष के बाद इटली की फ़ौज ने एबीसीनिया पर चढ़ाई की। लेकिन अदोवा की लड़ाई में इटली की बुरी तरह से हार हुई। हाल (१९३६ ई०) में इटली ने सुसज्जित होकर इरीट्रिया और सुमालीलैंड की ओर से एबीसीनिया पर फिर धावा बोला। उत्तरी फौज को अधिक सफलता मिली। आदिस अबाबा और उत्तरी प्रदेश इटली के हाथ आया। इटली का राजा एबीसीनिया का सम्राट बन गया। लेकिन गैस और हवाई जहाज़ों से दब जाने पर भी वीर एबीसीनियन लोगों ने आज़ादी की लड़ाई बराबर जारी रक्खी है। दुर्गम पहाड़ी भागों में इस समय भी इटली का अधिकार नहीं हो पाया है। वहाँ एबीसीनिया की ही सरकार मानी जाती है। एबीसीनिया के सम्राट हेल सलासी योरुप में निर्वासित हैं। लेकिन वे वहीं से अपने देश को आज़ाद करने में लगे हुए हैं।

सिरिया
(शाम)
स्वेज
बगदाद
जौफ
हेल
बसरा
कोवैत
ब्रिटिश संरक्षित
प्रदेश
मदीना
रियाद
हफूफ
मक्का
विशाल दक्षिणी रेगिस्तान
हदरामौत
ब्रिटिश संरक्षित प्रदेश
अदन
०
२५०
५००
१०००
मील
१५००
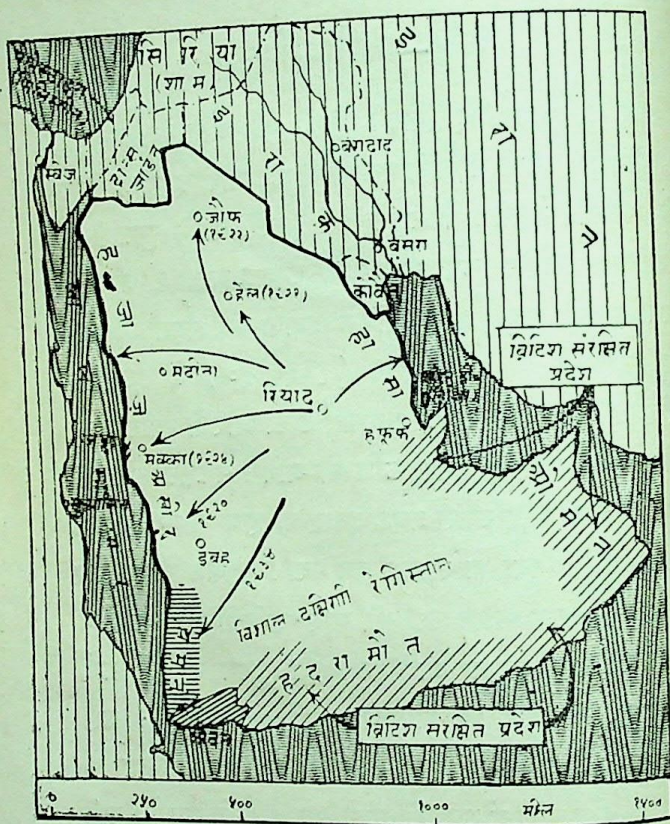
३३—इब्न सऊद की विजय

बड़ी लड़ाई के बाद अरब के बाहरी प्रदेशों का बटवारा फ्रांस और इंगलैंड के बीच में हो गया। सिरिया में फ्रांस का और पेलेस्टाइन, ट्रान्स जार्डन (जार्डन नदी के इस पार वाला रेगिस्तानी प्रदेश) और इराक़ पर ब्रिटेन का अधिकार हो गया। प्रधान अरब में हजाज़ का शासक ब्रिटिश संरक्षण में आ गया। हजाज़ का शासक अरब के शेष भागों पर राज्य करने वाला था। लेकिन भीतरी अरब के नजद प्रदेश पर राज्य करने वाले वहबी नेता इब्न सऊद के उत्थान से इसमें भयानक बाधा पड़ गई। इब्न सऊद ने बड़ी लड़ाई के पहले ही फारस की खाड़ी के किनारे वाले हासा प्रान्त को तुर्कों से छीन लिया। बड़ी लड़ाई के बाद हैल और जौफ़ू के सरदार उसकी मातहती में आ गये। उसने एक बार ट्रान्स जार्डन पर हमला करने की सोची। फिर उसने लाल सागर के किनारे वाले असीर प्रदेश पर हमला किया और १९२४-२५ में हजाज़ प्रदेश जीत लिया। इस प्रकार अरब देश के पूर्वी किनारे से पश्चिमी किनारे तक इब्न सऊद का राज्य हो गया। १९३४ ई० में उसने यमन पर हमला किया। पर यह अभी तक स्वाधीन है। ओमन और हद्रामौत के सुल्तान भी ब्रिटिश संरक्षण में हैं। ओमन में मिट्टी के तेल के मिलने की आशा है। इसी से ब्रिटिश शासकों ने ओमन सुल्तान का हिन्दुस्तान में धूम-धाम से स्वागत किया।

१९२७ में जिद्दा में ब्रिटेन और इब्न सऊद के बीच में एक सन्धि हुई। इसके अनुसार ब्रिटेन ने इब्न सऊद की स्वाधीनता मान ली। १९३२ में हजाज़ और नजद के राज्य का नाम बदल कर सऊदी अरब रख दिया।

निसीबिन
मूसल (मोसूल)
किर्कूक
फरात
ज़ला
हदीथा
बग़दाद
कूत
शुस्तर
अम्मारा
बसेरा
अबादान
कोवेत
दमश्क
(शाम)
सि रि या
ट्रान्स
जार्डन
अ र ब
इ रा क
रेलवे
मिट्टी के तेल की पाइप लाइन
ब्रिटिश हवाई मार्ग
० १०० २०० ३०० ४०० ५०० मील
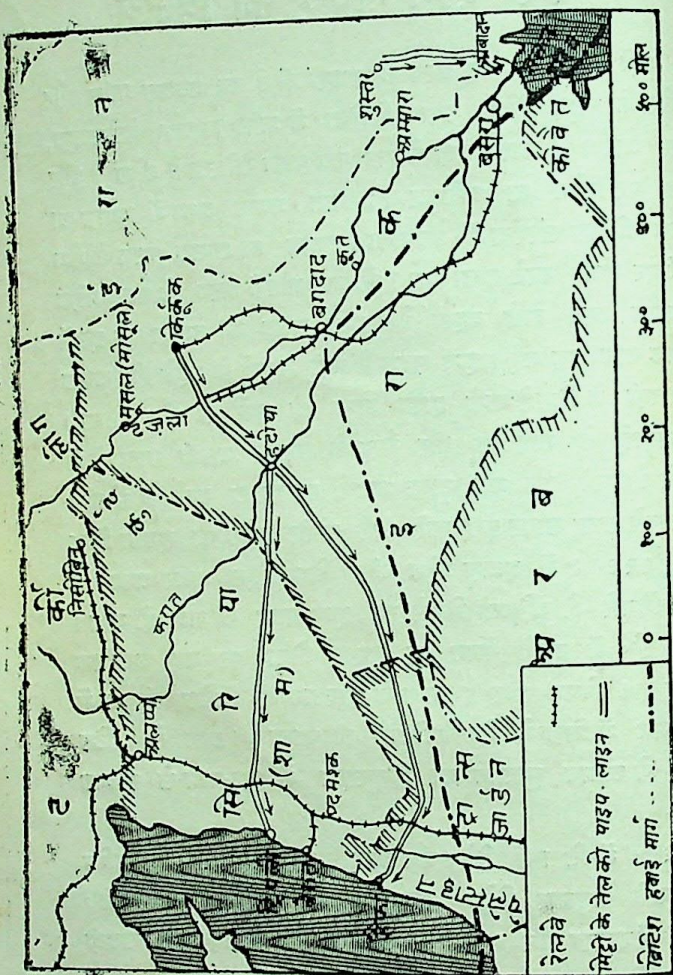
३४—इराक़ के मार्ग और मिट्टी का तेल

बड़ी लड़ाई के बाद इराक़ से तुर्की राज्य चला गया और उसके स्थान पर अंग्रेज़ी राज्य हो गया। १९३२ में ब्रिटिश मेंडेट (सीधा शासन) भी समाप्त हो गया। ब्रिटेन की हवाई फ़ौजें और हवाई जहाज़ों के अड्डे अब भी ज्यों के त्यों हैं।

ब्रिटिश हवाई जहाज़ों का प्रधान मार्ग बग़दाद होकर हिन्दुस्तान को आता है। इससे बग़दाद में पुराने समय (जब केप आफ गुड-होप होकर समुद्री रास्ते का पता नहीं चला था और पश्चिमी एशिया के स्थल भागों का मेल बग़दाद में ही होता था) की महिमा फिर कुछ हद तक लौट आई।

इराक़ के मूसल प्रांत (मोसूल विलायत) में किरकूक के मिट्टी के तेल के चश्मे बहुत अच्छे हैं। इनको लेने के लिये फ्रांस और टर्की ने भी कोशिश की। लेकिन इनका अधिकार ब्रिटेन के हाथ में ही रहा। फिर यहाँ के तेल का कुछ भाग फ्रांस को भी मिलने लगा। इसी से इस तेल को लेने के लिये पाइप की एक लाइन किरकूक से सिरिया के ट्रिपोली बन्दरगाह तक जाती है। ब्रिटिश पाइप लाइन किरकूक से पेलेस्टाइन के हैफा बन्दरगाह को जाती है।

प्राकृतिक विभाग
जज़रील की घाटी
बैसन का मैदान
गौर
अंग्रेज़ी मील
हैफ़ा
नाज़रथ
जेरिको
यरूशलम
हेब्रोन
मृत सागर
33
32
31
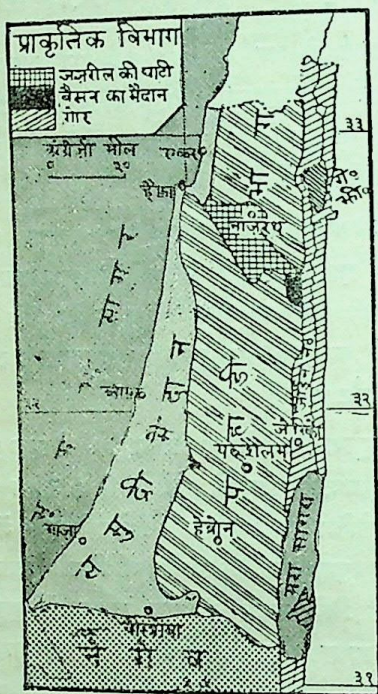
३५— पेलेस्टाइन (फिलिस्तीन) के यहूदी उपनिवेश

बड़ी लड़ाई के अवसर पर ब्रिटेन ने यहूदियों से व्यापारिक लाभ उठाने के लिये पेलेस्टाइन में यहूदियों का राष्ट्रीय गृह (उपनिवेश) बनाने का वचन दिया। साथ ही साथ अरबी लोगों से सैनिक सहायता लेने और उन्हें शान्त रखने के लिये ब्रिटेन ने अरब प्रदेश को अविच्छिन्न रखने का वचन दिया। इन परस्पर विरोधी दोनों बातों को सम्भव कर दिखाना ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के लिये भी टेढ़ी खीर है। इस समय पेलेस्टाइन में ७३ फ़ी सदी अरबी और १७ फ़ी सदी यहूदी लोग रहते हैं। इन १७ फ़ी सदी यहूदियों में आधे से अधिक यहूदी पेलेस्टाइन में ब्रिटिश मेंडेट होने के बाद बाहर से आकर बस गये हैं। लगभग एक तिहाई यहूदी आबादी खेती के काम में लग गई है। ज़मीन दिलाने का काम यहूदियों की ज़िओनिस्ट संस्था ने किया है। यह यहूदियों की सरकारी संस्था है और उपनिवेश सम्बन्धी मामलों को तय करती है। यहूदी लोग अधिकतर समुद्र-तट पर जाफा और एका बन्दरगाहों के बीच में बसे हैं। कुछ हाफा-नाज़रथ के दक्षिण में एस्दरान घाटी और गेलिली झील के पास बसे हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि पेलेस्टाइन में ब्रिटिश साम्राज्य स्थायी रूप से बनाये रखने के लिये ही अरबी लोगों के पुराने दुश्मन यहाँ लाकर बसाये गये हैं। कुछ भी हो, अरबी लोग नये आने वाले यहूदी और ब्रिटिश-शासकों का घोर विरोध करते हैं। इस समय पेलेस्टाइन में एक प्रकार का फौजी शासन (मार्शल ला) है।

बि लो चि स्ता न
अ फ गा नि स्ता न
ब्रिटिश प्रभाव की पुरानी सीमा
पुरानी सीमा
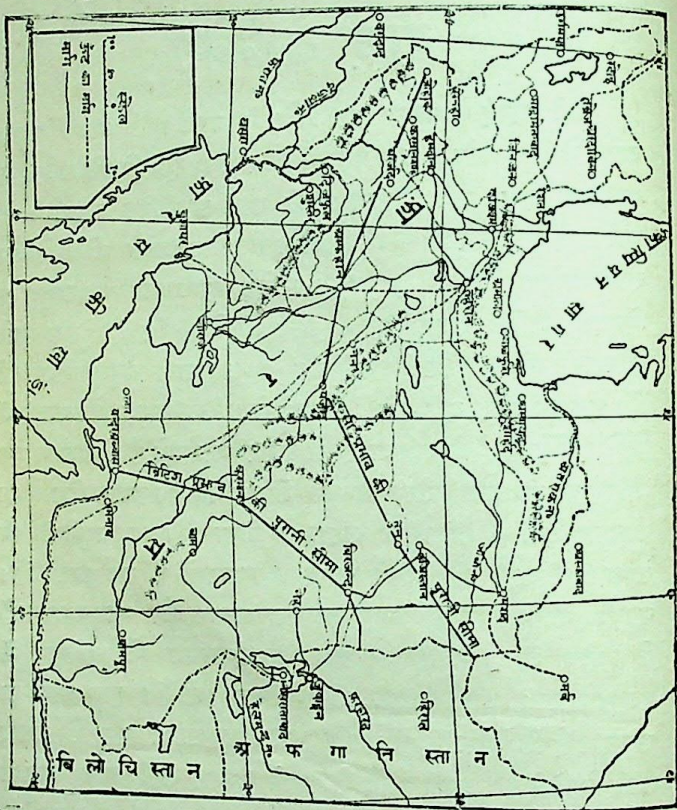
३६--ईरान का तेल और रेलमार्ग

फारस देश का आजकल सरकारी नाम ईरान हो गया है। बड़ी लड़ाई के पहले यह देश दो साम्राज्यों के प्रभुत्व में था। उत्तरी भाग में रूसी और दक्षिणी भाग में ब्रिटिश प्रभुत्व था। इससे बहुत पहले १९०१ ई० में ब्रिटेन को ईरान में मिट्टी के तेल का पता लगाने का विस्तृत अधिकार मिल गया था। इसकी उत्तरी सीमा तहरान के उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व को जाती थी। इसी से एंग्लो पर्शियन आयल कम्पनी नाम की अंग्रेज़ी कम्पनी की बुनियाद पड़ी।

१९३२ ई० में रिज़ाशाह पहलवी की प्रबल सरकार ने इस कम्पनी के पट्टे को रद कर दिया। इससे अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक जगत में तहलका मच गया। ब्रिटिश सरकार इस कम्पनी के हिस्सों की मालिक थी। इसलिये १९३३ ई० में फिर से समझौता हुआ। तेल का पता लगाने का क्षेत्र आधा कम कर दिया गया। कुछ और भी परिवर्तन हुये। रिज़ाशाह ने इम्पीरियल एअरवेज़ के हवाई जहाज़ों को ईरान के प्रदेश के ऊपर से होकर उड़ने से मना कर दिया। साथ ही फारस की खाड़ी के बेहरिन द्वीप के ऊपर से ब्रिटिश संरक्षण दूर करवाने का भी प्रयत्न हो रहा है। ईरान में रेलों का अभाव है। रूस, इराक और बलोचिस्तान की रेलवे लाइनें ईरान की सीमा के पास तक (तब्रेज़, कस्रशीरीं, दज़दाब) आकर ठहर जाती हैं। फारस की खाड़ी से पाइप लाइन के पास-पास एक रेलवे लाइन शूस्तर तक गई है। इसको कास्पियन सागर तक ले जाने का विचार हो रहा है।
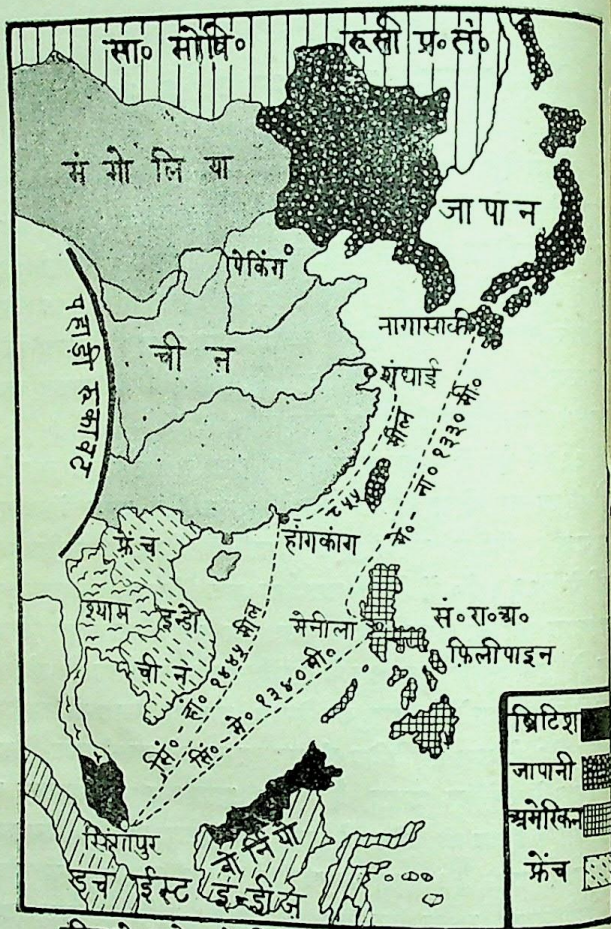
चीन के पड़ोस में विदेशी पूर्वी राज्य

३७–चीन के पड़ोस में विदेशी शक्तियों का जमघट

अगर चीन का देश योरुप से अधिक दूर न होता तो भारतवर्ष की तरह चीन भी बहुत पहले ही अपनी आज़ादी खो बैठता। जब धुआँकश जहाज़ (स्टीमर) तेज़ी से चलने लगे तब योरुपीय शक्तियाँ धीरे धीरे चीन में घुसने का प्रयत्न करने लगीं। चीन में समुद्रीय रास्ते से ही आसानी से घुसना हो सकता है। पश्चिम की ओर ऊँचे पहाड़ चीन को एशिया के दूसरे भागों से अलग करते हैं। उत्तर की ओर से रूस का प्रभाव पड़ता है। अतः योरुपीय शक्तियाँ उन्नीसवीं सदी के अन्त में और बीसवीं सदी के आरम्भ में जलमार्गों द्वारा चीन में प्रवेश करने लगीं। उन्होंने अपने व्यापार को बढ़ाने के लिये चीन में स्वतन्त्र सन्धि-सम्बन्धी बन्दरगाह (Treaty Ports) स्थापित किये।

जापान ने कोरिया और मंचूकुओ (मंचूरिया) में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। अब वह उत्तरी चीन में बढ़ रहा है। ब्रिटेन ने हांगकांग पर अधिकार करके कैन्टन और दक्षिणी चीन के व्यापार को अपनाया। सिंगापुर का ब्रिटिश जहाज़ी अड्डा चीन से केवल १५०० मील दूर है। इंडोचीन में फ्रांस का अधिकार है। संयुक्तराष्ट्र अमरीका फिलीपायन द्वीप में डटा हुआ है। मंचूरिया में जापानी अधिकार हो जाने के कारण रूस का चीन से सीधा सम्बन्ध नहीं रह सका है। डच लोग अधिक दक्षिण की ओर पड़ गये हैं। वे अधिक बलवान भी नहीं हैं।

३८—जापानी साम्राज्य

जापान ने योरुपीय शक्तियों की तरह नये हथियारों से सुसज्जित होकर हाल में फैलने का प्रयत्न किया है। पर आगे बढ़ने का काम मज़बूती के साथ हो रहा है। १८९४-९५ में चीन को हरा कर उसने फारमूसा पर अधिकार कर लिया। १९०४-५ में रूस को हरा कर जापान ने कोरिया और पोर्टआर्थर पर अधिकार कर लिया। १९१० में कोरिया देश खुल्लमखुल्ला जापानी साम्राज्य में मिला लिया गया। साथ ही साथ दक्षिणी मंचूरिया में जापान अपनी स्थिति को मजबूत करता गया।

बड़ी लड़ाई में क्याओचाओ से जर्मनों को भगा कर जापान ने अपना अधिकार कर लिया। बड़ी लड़ाई के समाप्त होने पर क्याओचाओ नाम मात्र के लिये चीन को लौटा दिया गया, लेकिन प्रशान्त महासागर के जिन द्वीपों पर जर्मनी का अधिकार था, उन पर राष्ट्र-संघ की ओर से जापान राज्य करने लगा। मंचूरिया पर हमला करने के समय राष्ट्रसंघ की सदस्यता से जापान ने इस्तीफ़ा दे दिया। लेकिन प्रशान्त महासागर के भूतपूर्व जर्मन प्रदेशों पर जापान पूर्ववत् शासन करता है। मंचूरिया में प्रबल हो जाने के बाद जापान ने उत्तरी चीन को अपनाने का निश्चय किया।
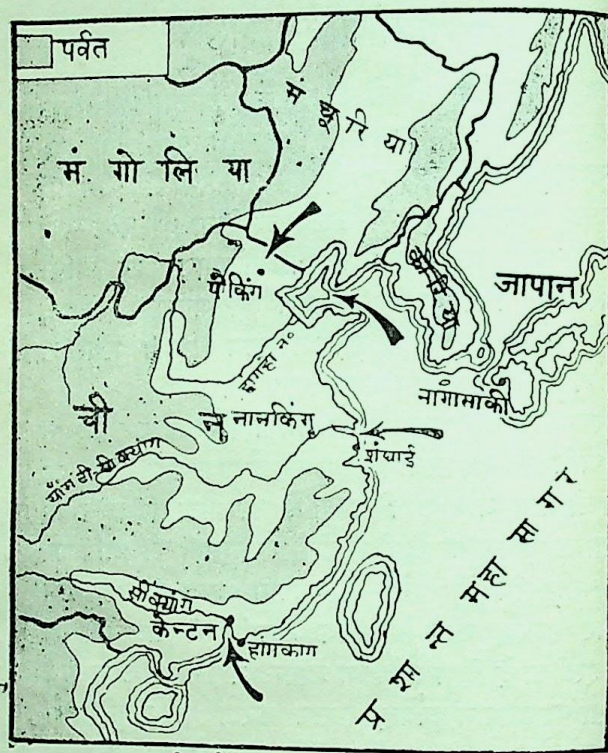
चीन में घुसने के मार्ग

३९—चीन में घुसने के मार्ग

बाहर से चीन में प्रवेश करने के लिये तीन प्रधान जल-मार्ग वहाँ की नदियों ने बनाये हैं। ह्वांगहो उत्तर चीन में, यांगटिसी-क्यांग मध्यचीन में और सीक्यांग दक्षिणी चीन में प्रवेश करने के लिये प्रधान मार्ग बनाती हैं। इन नदियों के मुहानों पर विदेशियों का अड्डा है। हांगकांग द्वीप और पड़ोस की ज़मीन पर अंग्रेज़ी अधिकार होने के कारण दक्षिणी प्रवेश मार्ग की कुंजी ब्रिटेन के हाथ में है।

यांगटिसीक्यांग के मुहाने पर बसे हुए शंघाई शहर में कई विदेशी शक्तियों का अड्डा है। इनमें संयुक्त-राष्ट्र अमरीका और ब्रिटेन प्रधान हैं। यांगटिसीक्यांग में सैकड़ों मील तक जहाज़ चल सकते हैं। लेकिन इसका मुहाना विदेशियों के अधिकार में होने के कारण विदेशी शत्रु इस नदी के मार्ग से लड़ाका जहाज़ भेज कर चीन के हृदय में छुरी भोंक सकते हैं। कोरिया पर जापानी अधिकार होने से चीन का उत्तरी जल-मार्ग जापान के अधिकार में है। सर्वोत्तम सुगम स्थल मार्ग उत्तर की ओर से है। यहाँ पहले रूस का प्रभाव था। आजकल मंचूरिया में जापान का अधिकार होने से उत्तरी स्थलमार्ग की कुंजी जापान के हाथ में है। इसी ओर से जापान ने चीन पर आक्रमण करने का निश्चय किया है।

साम्य० सोवियट रूसी प्रजा तन्त्र
बैकाल झी०
बुरियात प्र०
सिं गे
अ ग
म च्छू रि
अर्गा
बाहरी मंगोलिया
गोबी मरुभूमि
सिनक्यांग
(चीनी तुर्किस्तान)
भीतरी मंगोलिया
चाहार
जेहोल
चांगचुन
मुकडन
व्लाडीवो
कोरिया
पेकिंग
पोर्ट आर्थर
पीला सागर
जापान
कोकोनार
ति ब्ब त
ह्वांगहो न०
ची न
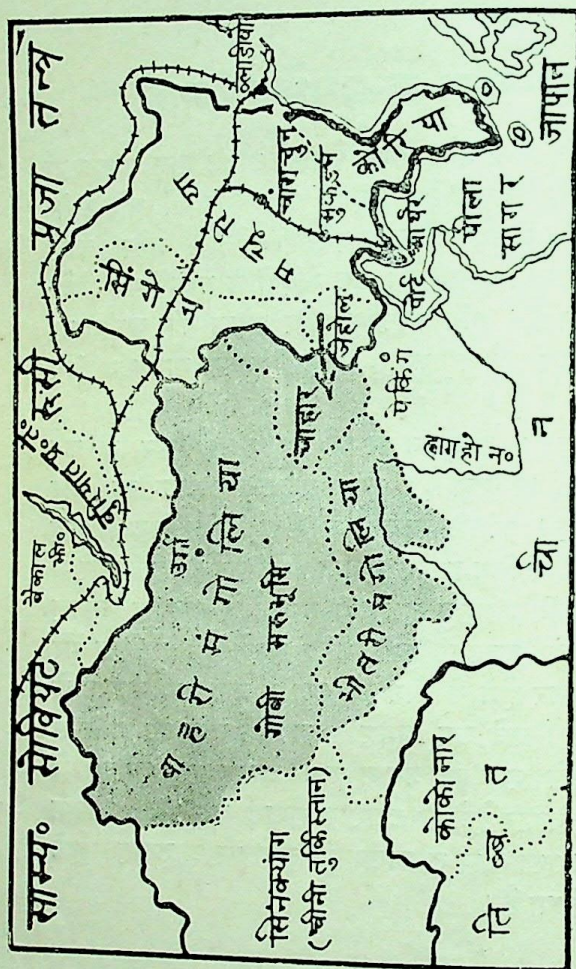
मंगोल लोगों का प्रदेश

४०—मंगोल लोगों का देश

रूसी-जापानी लड़ाई के बाद जापान ने रूस और चीन के बीच वाले प्रदेश में बढ़ने की जी-तोड़ कोशिश की है। मंचूरिया पर अधिकार करने के बाद जापान ने रूस और चीन के बीच में नई स्थलीय रुकावट डाल दी है। इससे इन दोनों के बीच में स्थल-मार्ग द्वारा आसानी से आना जाना नहीं हो सकता। मंचूरिया में जापान का फौजी अड्डा स्थापित हो जाने से उसे उत्तर, दक्षिण और पूर्व की ओर आक्रमण करने का अवसर मिल गया है।

जापानी सिपाही और एजेन्ट बड़ी तेज़ी से हाल में भीतरी (Inner) मंगोलिया में बढ़ रहे हैं। मंचूकुओ के सिंगन प्रान्त में रहने वाले २० लाख मंगोल लोग उसके शासन में पहले से ही आ गये हैं। बचे हुए ३० लाख मंगोलों में से १० लाख बाहरी (Outer) मंगोलिया के रेगिस्तान में, १० लाख भीतरी मंगोलिया में और १० लाख चीनी तुर्किस्तान, तिब्बत के कोकोनार प्रान्त और एशियाई रूस के बुरियत प्रजातन्त्र में रहते हैं।

सा०
सो०
रूस
चीता
हेलर
शिशिहर
ताओनान
चांगचुन
किरीन
मुकडन
पेकिंग
जे हो ल
चीन
भीतरी मंगोलिया
रेलवे
५०० मील

४१—मंचूकुश्रो और रूस-जापान

जापान ने मन्चूरिया को चीन से छीन कर पहले ही मंचूकुश्रो नाम से एक अलग राज्य स्थापित कर लिया। मन्चूरिया (मंचूकुश्रों) पर जापानी अधिकार हो जाने से रूस, साइबेरिया और प्रशान्त महासागर तट (व्लाडी बस्टक) के बीच में आने जाने के मार्गों में बाधा पड़ती है। ट्रान्स साईबेरियन रेलवे का मार्ग अमूर नदी के उत्तर में है। १८९६ में 'ज़ार की सरकार ने चीन से सन्धि कर के व्लाडी वोस्टक तक उत्तरी मंचूरिया में होकर चाइनीज़ ईस्टर्न रेलवे निकाल ली। क्रांति के बाद रूस ने मंचूरिया के सब अधिकार छोड़ दिये। लेकिन इस रेलवे पर अपना अधिकार बना रक्खा। अन्त में रूस ने इस रेलवे के भी सब अधिकार जापान (मंचूकुश्रो) के हाथ बेच दिये। इन दो प्रधान रेलवे लाइनों के अतिरिक्त जापान ने मंचूकुश्रो में कई नई लाइनें निकाल कर मंचूरिया (मंचूकुश्रो) में रेलों का जाल सा बना लिया है।

साम्य० सोवि० रूसी प्रजा तंत्र
म गो लि या
म न चू कु ओ
भीतरी मंगोलिया
पीपिंग
(पेकिंग)
तिब्बत
नानकिंग
शंघाई
जापान
केन्टन
हांगकांग
नानकिंग सरकार
द०(केन्टन) विस्तार
जापानी सरकार
साम्य० सरकार
पहिले जो देश चीन के अधिकार में थे

चीन विच्छेद

४२—चीन-विच्छेद

गत ९० बर्षों से चीन के प्राचीन साम्राज्य का विध्वंस करने में कई योरुपीय शक्तियाँ लग गईं। ब्रिटेन, रूस और फ्रांस ने चीन के कई बाहरी भाग दबा लिये। जापान ने कोरिया को छीनने के बाद मंचूरिया, भीतरी मंगोलिया और उत्तरी चीन को हड़पना आरम्भ कर दिया। नानकिंग की चीनी सरकार का प्रभुत्व मध्य चीन और दक्षिणी चीन में बहुत प्रबल है। पश्चिम के भीतरी भागों में मजदूरों और किसानों का पंचायती राज्य है। इनके शत्रु इन्हें अक्सर डाकू कहते हैं। वे फौजी शासकों का विरोध करते हैं। इन सब को एकता के सूत्र में बाँध कर चियांग-काई-शेक ने चीन में एक प्रबल प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया। इतने ही में जापान ने युद्ध छेड़ दिया।

—रेलवे
कोयले की खानें
बड़े कारबारी शहर
मंचूरिया
पेंकिंग
टिन्टसिन
पोर्ट आर्थर
हो पी
शान सी
क्याओचाऊ
होनान
हूपेह
नानकिंग
क्यांग सी
चे क्यांग
फू केन
फूचाऊ
घनी आबादी वाले प्रदेश
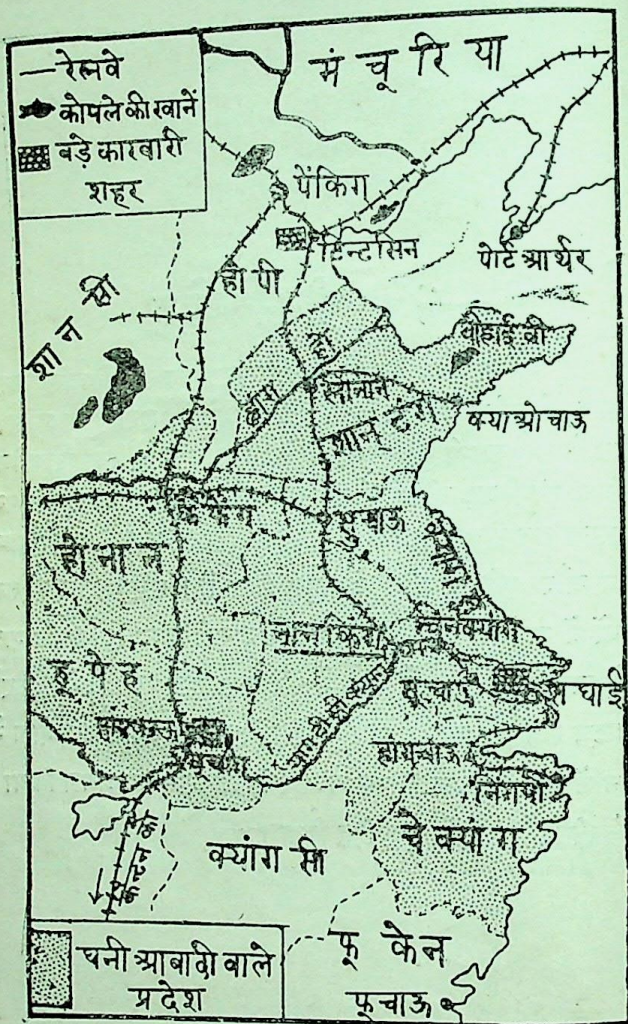
नानकिंग की सरकार

४३—नानकिंग की सरकार

नानकिंग की सरकार च्यांग काई शेक की अध्यक्षता में मध्य चीन के उन प्रान्तों पर राज्य करती है जो यांग्टिसीक्यांग के उत्तर और दक्षिण में स्थित हैं। उत्तर की पुरानी राजधानी पेकिंग या पेपिंग में जापानी प्रभुत्व है। च्यांग काई शेक की शक्ति का केन्द्र कैन्टन था। यहीं चीनी प्रजातन्त्र के संस्थापक सन्‌-यातसेन का प्रभुत्व था। हांगकाओ-कैन्टन रेलवे के बन जाने से यांग्टिसीक्यांग और कैन्टन प्रदेश एक हो गये हैं। इसी भाग में कारबार की अधिकता है और इसी भाग में चीन की सबसे घनी आबादी बसी हुई है।

काली मिट्टी का प्रदेश
वन प्रदेश
कारबारी और खनिज प्रदेश
शासन केन्द्र
आर्केन्जल
लेनिन ग्रेड
व्याटका
मास्को
स्मोलेन्स्क
वल्गा न०
समारा
सारातोव
यूराल न०
कीव
खारकोव
रोस्टोव
तेल का केन्द्र
बाकू
0
५००
मील
१०००
१५००
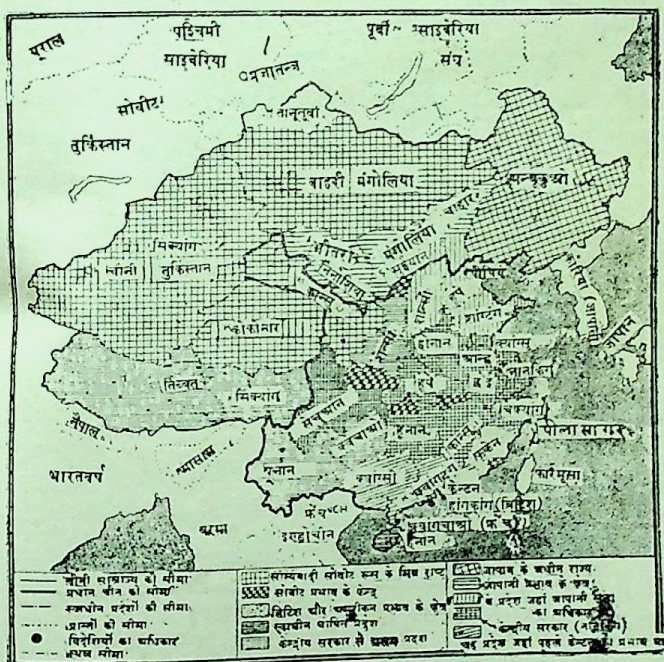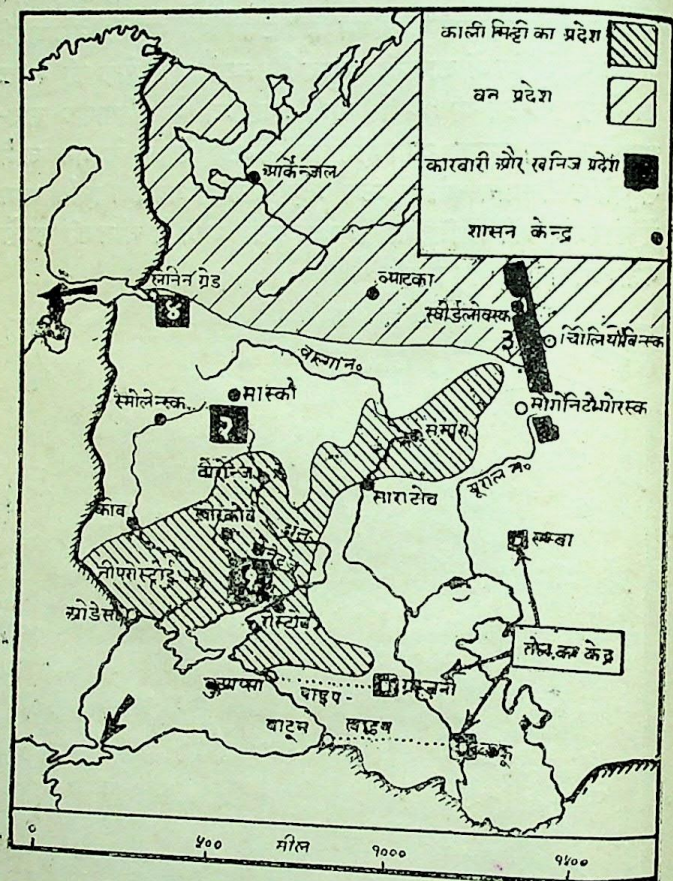
४४—नवीन रूस

बड़ी लड़ाई के पहले रूस एक कृषि-प्रधान देश था। क्रान्ति के बाद रूसी साम्यवादी सोवीट प्रजातन्त्र ने देश में कारबार बढ़ाना आरम्भ किया। प्रथम पंचवर्षीय योजना ने बड़े पैमाने पर सारे राष्ट्र की समस्त सम्पत्ति का संगठन किया और उसे एक सूत्र में बांध दिया। योरुपीय रूस में प्रधान कारबारी प्रदेश चार हैं। १—यूक्रेन प्रदेश की वृद्धि डोनेट्ज़ के कोयले और क्रोवोई रोग के लोहे पर निर्भर है। यहीं नीप्रोस्ट्रोई की विशाल बिजली का स्टेशन है। २—मध्यवर्ती मास्को प्रदेश में कई प्रकार के खनिज और कारबार हैं। ३—यूराल प्रदेश की खनिज को निकालने में पश्चिमी साइबेरिया के कुस्नेट्ज़ की कोयले की खानों से सहायता मिली है। ४—लेनिनग्रेड का प्रदेश भी कारबार के लिये प्रसिद्ध है। काली मिट्टी (कर्नोज़म) के प्रदेश में रूस भर में सर्वोत्तम खेती होती है। काकेशस पर्वत और कास्पियन सागर के पड़ोस में मिट्टी के तेल के प्रधान केन्द्र हैं।

जर्मनी
पोलैंड
लेनिनग्राड
मास्को
समारा
यूराल प०
लीना
इर्कुटस्क
मंगोलिया
चीन
अफगानिस्तान
0
1000
2000
3000
मील
4000
5000
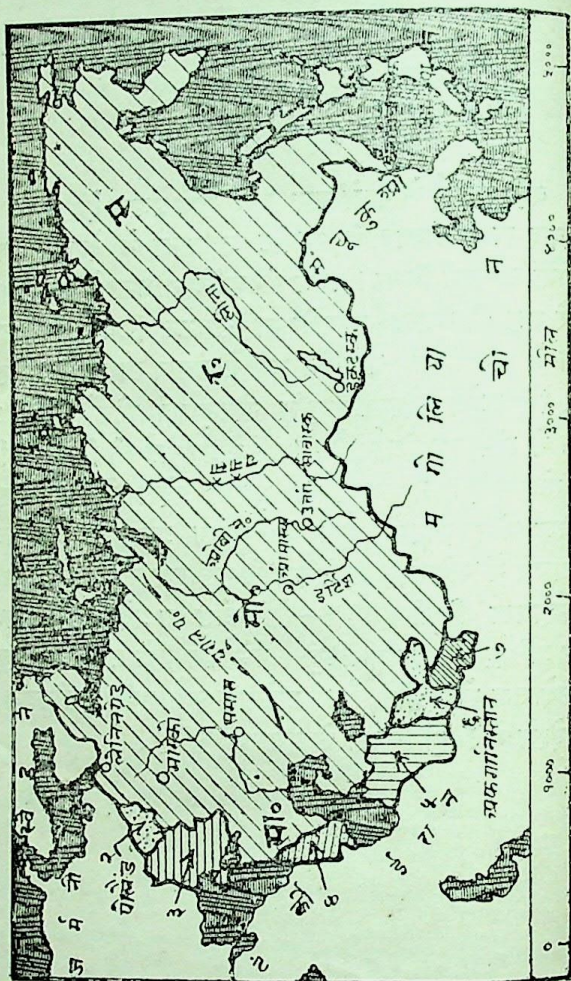
४५—नवीन रूस के राजनैतिक विभाग

नवीन रूस को अल्पसंख्यक जातियों की सबसे विकट समस्याओं को हल करना पड़ा। १९२६ की मनुष्य-गणना के अनुसार रूस में १७४ भिन्न भिन्न जातियाँ रहती हैं। समस्त जन-संख्या लगभग १७ करोड़ है, जो हमारे देश की लगभग आधी है। इनमें $\frac{3}{4}$ लोग योरुपीय रूस में रहते हैं। एशियाई रूस का क्षेत्रफल बहुत बड़ा है। दोनों ही भागों में कई प्रकार की प्राकृतिक सम्पत्ति है।

वर्तमान साम्यवादी सोवीट रूसी प्रजातन्त्र संघ में सात बड़े बड़े प्रजातन्त्र और कई छोटे छोटे स्वाधीन (घरेलू प्रबन्ध में) ज़िले शामिल हैं। बड़े बड़े प्रजातन्त्रों में कई छोटे छोटे प्रजातन्त्र राष्ट्र शामिल हैं। सात बड़े-बड़े प्रजातन्त्र राष्ट्र ये हैं:—(१) रूसी सोवीट साम्यवादी प्रजातन्त्र संघ। इसमें अधिकांश योरुप और पूरा साइबेरिया शामिल है। (२) श्वेत रूसो प्रजातन्त्र पश्चिमी योरुप की सीमा को छूता है। (३) यूक्रेन प्रजातन्त्र। यहाँ खेती बहुत अच्छी होती है। (४) ट्रांस काकेशस प्रदेश के छोटे छोटे पहाड़ी प्रजातन्त्र राष्ट्र (जार्जिया, आर्मेनिया, अज़रबैजान)। (५) ताजिकिस्तान। (६) युजबेकिस्तान, और (७) तुर्कमानिस्तान। आखिरी तीन प्रजातन्त्र सब के सब एशिया में स्थित हैं।
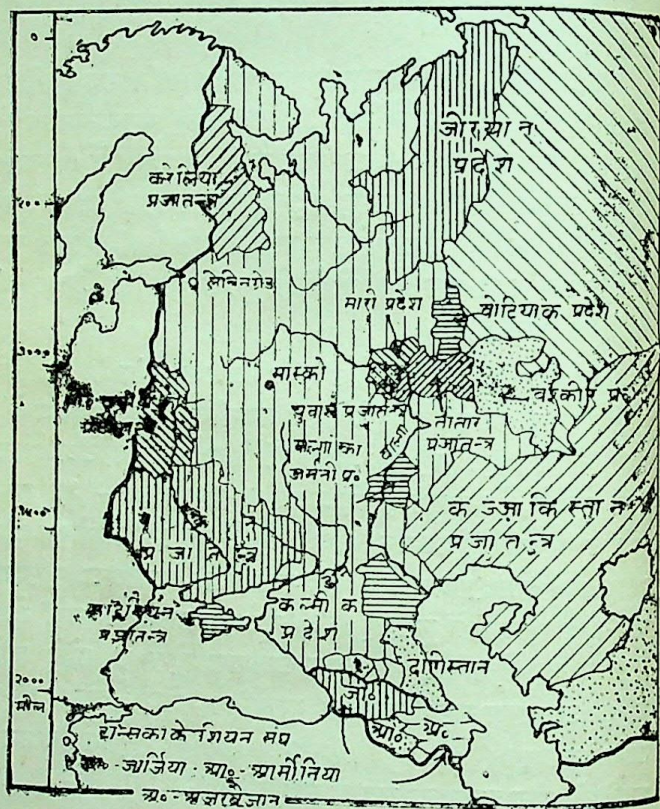
४६–योरुपीय रूस के राजनैतिक विभाग

रूस के तीन बड़े बड़े प्रजातन्त्र राष्ट्र पश्चिमी और दक्षिणी-पश्चिमी सीमा के पास स्थित हैं। श्वेत (ह्वाइट) रूसी प्रजातन्त्र यूक्रेन और ट्रान्स काकेशस प्रजातन्त्र संघ। ट्रान्स काकेशस प्रजातन्त्र संघ में जार्जिया, आर्मेनिया और अज़रबैजान के पहाड़ी प्रजातन्त्र शामिल हैं। योरुपीय रूस का शेष भाग साम्यवादी सोवीट रूसी प्रजातन्त्र संघ का अंग है। इसमें क्राइमिया प्रजातन्त्र, कारेलियन प्रजातन्त्र, जर्मन वाल्गा प्रजातन्त्र आदि कई स्वाधीन प्रजातन्त्र शामिल हैं। रूसी शासन में सभ्यता और विद्या सम्बन्धी अधिक से अधिक आज़ादी के साथ कड़े से कड़ा आर्थिक अंकुश (नियन्त्रण) रहता है।

उ त्त रीं का के श स
स्वाधीन भाग
अस्त्राखाँ
मैकाप
चरकेस
कराचेव
कबार्डिनो-बल्कारिया
ओसेटिया
इंगुशेटिया
चेचेनिया
दागिस्तान
जा र्जि या
अदजार
टिफलिस
आ र्मी नि या
अ ज़ र बे जा न
नखीचेवान
कार्स
अर्ज़रुम
ट र्की
इ रा न
० १०० २०० ३०० मील ५०० ६००
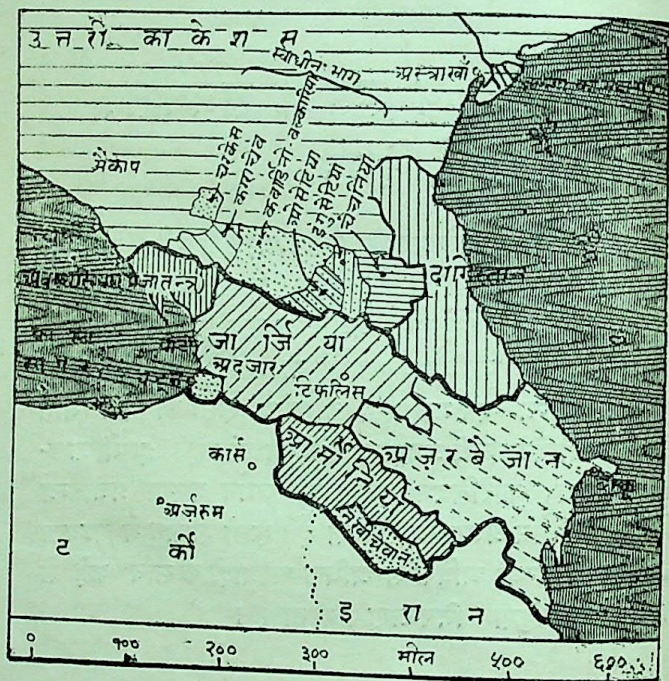
४७—काकेशस प्रदेश

काकेशस प्रदेश कास्पियन सागर और काले सागर के बीच में स्थित है। मिट्टी के तेल की अधिकता होने के कारण इस प्रदेश का महत्व बहुत बढ़ गया है। १९१७ की क्रान्ति के बाद यहाँ १९२१ ई० तक गृह कलह चलती रही। इसके बाद रूसी प्रजातन्त्र सरकार ने यहीं कई स्वाधीन प्रजातन्त्र स्थापित करके यहाँ के लोगों की राजनैतिक माँगें पूरी कीं।

(१) काकेशस प्रदेश के उत्तरी भाग में रूसी साम्यवादी सोवीट प्रजातन्त्र संघ का शासन है। इसमें कई छोटे छोटे स्वाधीन ज़िले शामिल हैं। (२) कास्पियन सागर के पश्चिमी किनारे पर दागिस्तान का प्रजातन्त्र है। (३) ट्रान्स काकेशस प्रजातन्त्र-संघ में जार्जिया (जिसकी राजधानी टिफलिस है), आर्मेनिया (राजधानी एरीवान) और अज़रवैजान (राजधानी बाकू) शामिल हैं। इन तीनों प्रजातन्त्रों में भी एक दो स्वाधीन ज़िले शामिल हैं।

मास्को
वाल्गा
यूराल पर्वत
साइबेरिया
स्वेर्डलोव्स्क
यूराल का कारबारी प्रदेश
समारा
टोमस्क
न्यूसिबीर्स्क
इर्कुटस्क
कुस्नेट्ज
ओमस्क
कज़ाकस्तान
सेमीपेलेटिन्स्क
बालकश झील
मंगोलिया
ताशकन्द
समरकन्द
स्टेलिनाबाद
अफगानिस्तान
ईरान
रेलवे
तुर्किस्तान-साइबेरियन लाइन

४८—पश्चिमी साइबेरिया और तुर्किस्तान

रूसी सरकार पश्चिमी साइबेरिया के कारबार बढ़ाने और उसे योरुपीय भाग से जोड़ने का घोर प्रयत्न कर रही है। कुस्नेट्ज में डोनेट्ज से छः गुना कोयला है। कुस्नेट्ज में ४५० बिलियन टन कोयला अन्दाज़ा गया है। यह भाग यूराल के खनिज और कारबारी प्रदेश से जोड़ा जा रहा है।

इसके दक्षिण में तुर्किस्तान है, जो आजकल कज़ाकस्तान प्रजातन्त्र और कई छोटे छोटे स्वाधीन ज़िलों में बँटा हुआ है। यह प्रदेश तुर्क-साइबेरियन रेलवे द्वारा जोड़ दिया गया है। रेलवे ताशकन्द से उत्तर की ओर बढ़ती है। यह लाइन दुनिया भर में सब से बड़ी रेलवे लाइन है।

क ज्ज़ा कि स्ता न
वाल्गा
अराल सागर
बालकश झील
अल्म-अता
कारा कल्पक
कि र गी ज़
प्रजातन्त्र
चौ नी
तु किं स्ता न
समरकन्द
ताशकन्द
उ ज़ बे क
प्र जा त न्त्र
ताजिक-प्रं०
तु र्क मा न
प्र जा त न्त्र
अश्कावाद
इ रा न
अफ गा नि स्ता न
भारत वर्ष
० ५०० १००० मील २०००
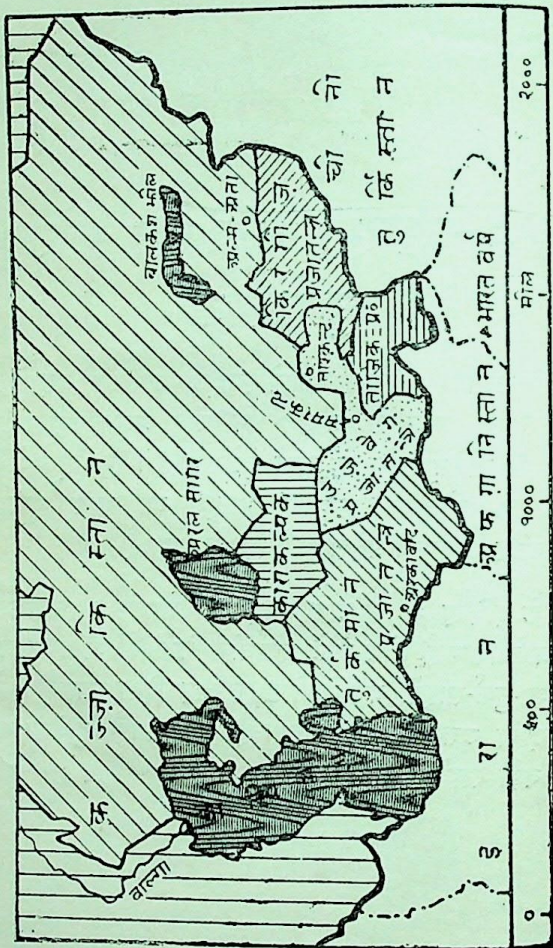
४९—रूसी मध्य एशिया की जातियाँ

उन्नीसवीं सदी के अन्तिम भाग में तुर्किस्तान रूसी साम्राज्य में मिला लिया गया। ज़ार का साम्राज्य अफ़ग़ानिस्तान को छूने लगा। ज़ार की इस बढ़ती हुई शक्ति और ब्रिटिश भारत पर भावी आक्रमण को रोकने के लिये ब्रिटिश राजनीतिज्ञ तरह तरह के प्रयत्न करने लगे। क्रान्ति के बाद इस प्रदेश में जो गृह-कलह फैली वह १९२४ तक शान्त न हुई। इस समय यहाँ निम्न राजनैतिक विभाग हैं :—

कज्ज़ाकस्तान प्रजातन्त्र राज्य में अधिकतर घुमक्कड़ किरगीज़ लोग रहते हैं। काराकल्पक का प्रदेश स्वाधीन है। तुर्कमानिस्तान में तुर्कमान मुसलमान रहते हैं। उज़बेकिस्तान में कपास ख़ूब होती है। यहीं इस प्रदेश में सब से अधिक आबादी है। यहीं मध्य एशिया के तीन प्रधान नगर (ताशक़न्द, समरक़न्द और बुख़ारा) स्थित हैं। ताजकिस्तान पहाड़ी प्रदेश है। इसके पूर्वी भाग में ऊँचा पठार या दुनिया की छत है। किरगीज़िया में ढोर पालने वाले लोग रहते हैं।

सा०
सो०
रूस
बालकश झील
वाल्गा न०
काकेशस
टिफलिस
ताशकन्द
समरकन्द
मर्व
चीनी तुर्किस्तान
तिब्बत
हिरात
काबुल
पेशावर
कन्धार
अफगानिस्तान
तेहरान
इरान
भारतवर्ष
पर्वत
रेलवे
0
५००
१०००
१५०० मील

५०—अफ़ग़ानिस्तान और मध्य एशिया की सीमायें

अफ़ग़ानिस्तान का पहाड़ी देश उत्तरी हिन्दुस्तान को एशियाई रूस से अलग करता है। रूस और ब्रिटेन की आपस की पुरानी फूट के कारण अफ़ग़ानिस्तान में रेल न खुल सकी। लेकिन रूस की रेलें (मर्व के आगे कुश्क के पास) अफ़ग़ानिस्तान की उत्तरी सीमा को छूती हैं। इस की दक्षिणी सीमा के पास उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त और बलोचिस्तान की रेलवे लाइनें आकर रुक जाती हैं। हिरात और कन्धार तथा पेशावर और काबुल होकर हिन्दुस्तान की रेलवे लाइनें बड़ी आसानी से रूसी रेलों से जोड़ी जा सकती हैं।

अफ़ग़ानिस्तान में कई वार ब्रिटिश फौजों ने प्रवेश किया १९२१ में ब्रिटेन और अफ़ग़ानिस्तान के बीच में नई सन्धि हुई। इस के अनुसार अफ़ग़ानिस्तान की स्वाधीनता स्वीकार कर ली गई। रूस के विशेष अधिकार कुछ कम कर दिये गये। हिन्दुस्तान होकर अफ़ग़ानिस्तान को हथियार और फौजी सामान मगाने की सुविधा कर दी गई।

आर्कटिक महा सागर
आर्कटिक वृत्त
वेरखोयान्स्क
याकूटस्क प्रजातंत्र
याकूटस्क
पूर्वी सीमा
ओखोटस्क
कमसचटका
बुरियात
चीता
साखालीन द्वीप
खाबरोवस्क
ब्लाडीवास्टक
जापान
कोयला
तेल
पूर्वी रूस
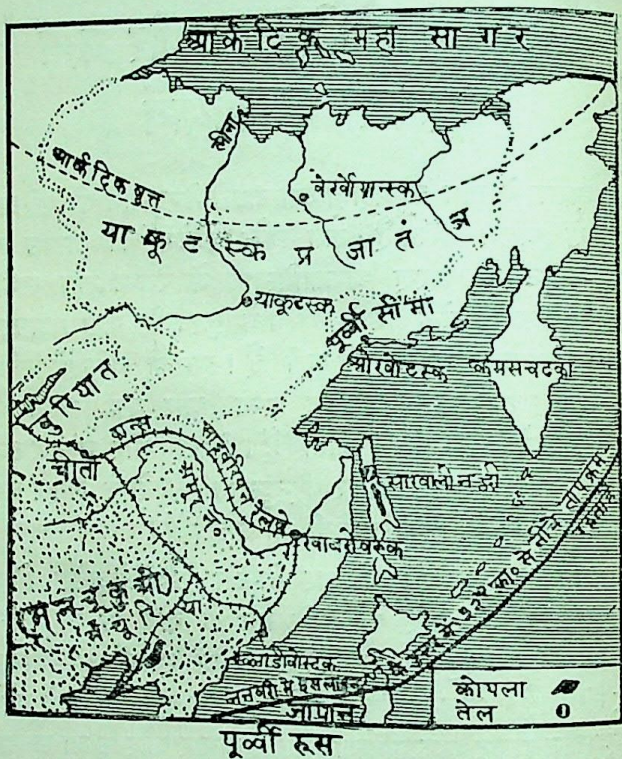
५१—एशिया में रूस का सब से अधिक पूर्वी प्रदेश

रूस का सब से अधिक पूर्वी प्रदेश दो भागों में बँटा है। याकुट्स्क प्रजातन्त्र सब से अधिक बड़ा है। लेकिन इसकी जन संख्या सब से कम है। सुदूर पूर्वी प्रजातन्त्र में कुछ आर्कटिक तट और समूचा रूसी प्रशान्त महासागर का तट शामिल है। इसी में कमचटका प्रायद्वीप और आधा (उत्तरी) साखालिन द्वीप जापान के अधिकार में है। इस प्रदेश की राजधानी खबारोव्स्क नगर है जो अमूर नदी पर स्थित है। साखालिन के कोयले और मिट्टी के तेल को छोड़कर इस प्रदेश की प्राकृतिक सम्पत्ति का कुछ भी उपयोग नहीं हुआ है। लेकिन अगली पंचवर्षीय योजना में रूस ने यहाँ कई रेलवे, कारखाने और व्लाडीवोस्टक के उत्तर में एक बड़ा बन्दरगाह बनाने का निश्चय किया है। मंचूरिया में जापानी प्रभुत्व हो जाने से रूस के इस प्रदेश को जापान का सदा भय लगा रहता है। इस समय केवल ट्रान्स साइबेरियन रेलवे इस भाग को दूसरे भागों से जोड़ती है। इसी से रूसी हवाई जहाजों का एक बड़ा अड्डा अचानक हमले को रोकने के लिये बनाया गया है।

कलकत्ता
बरमा
रंगून
स्याम
बंकोक
चीन
हांगकांग
शंघाई को
फारमूसा
(जापान)
फिलीपाइन द्वीप
मेनिल्ला
कोलम्बो
सिंगापुर
बोर्नियो
सेलिबीस
मलक्का
बटेविया
डच ईस्ट इन्डीज
जावा
टाइमर
केपटाउन
ब्रिटिश साम्राज्य
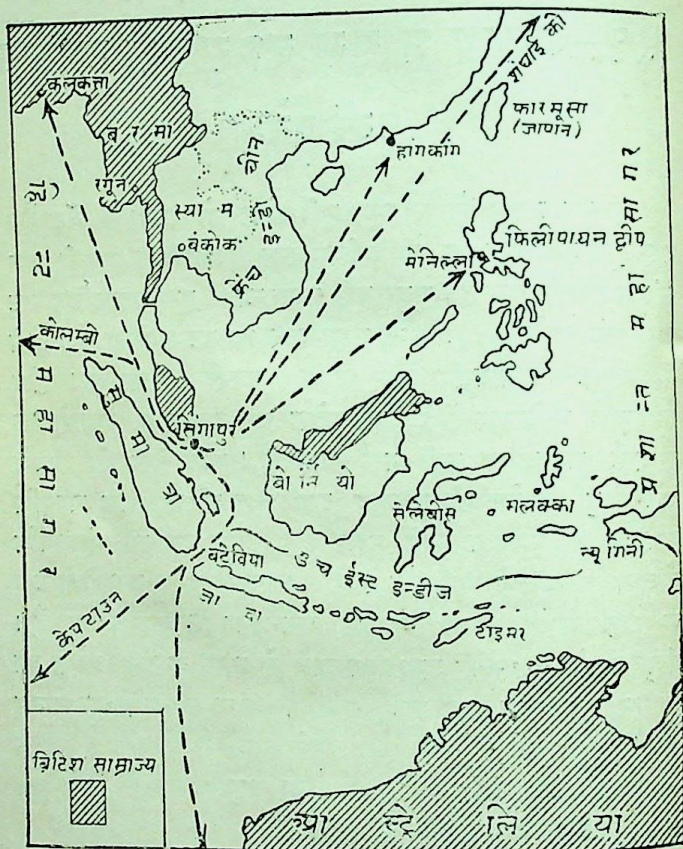
५२--दक्षिणी-पूर्वी देशों का समुद्री चौराहा—सिंगापुर

विशाल प्रशान्त महासागर का पूर्वी दरवाज़ा पनामा और और पश्चिमी दरवाज़ा सिंगापुर है। सिंगापुर में ब्रिटिश साम्राज्य के पूर्वी भागों की रक्षा के लिये सबसे बड़ा जहाज़ी अड्डा बनाया गया है। जब १८१९ में रेफिल्स साहब ने सिंगापुर को मिलाया तो उन्होंने लिखा कि सिंगापुर के मिलाने से ब्रिटिश साम्राज्य को न केवल एक द्वीप मिला वरन् चीन-जापान और स्याम, कम्बोडिया के लिये जलमार्ग का अधिकार मिल गया।

सिंगापुर के जहाज़ी अड्डे के बनाने में लगभग १५ करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं। इस अड्डे से न्यूज़ीलैंड और आस्ट्रेलिया की रक्षा करने में सुविधा होगी। यहाँ से चीन और जापान में भी ब्रिटिश हितों की रक्षा की जा सकती है। कुछ लोगों का अनुमान है कि इस अड्डे के सम्बन्ध में पूर्वी द्वीप समूहों की रक्षा के लिये हालैंड वालों ने ब्रिटिश से समझौता कर लिया है। लेकिन जापान इसको सन्देह की दृष्टि से देखता है।

स्ट्रेट्स सेटिलमेन्ट
फेडरेटेड मलय सेटेट्स
संरक्षित राज्य
हिन्द महा-सागर
केडा
पेनांग
वेलेज़ली प्रान्त
प्रशान्त महा सागर
मलक्का
जलसंयोजक
सिंगापुर
0
१००
२००
३००
४०० मील
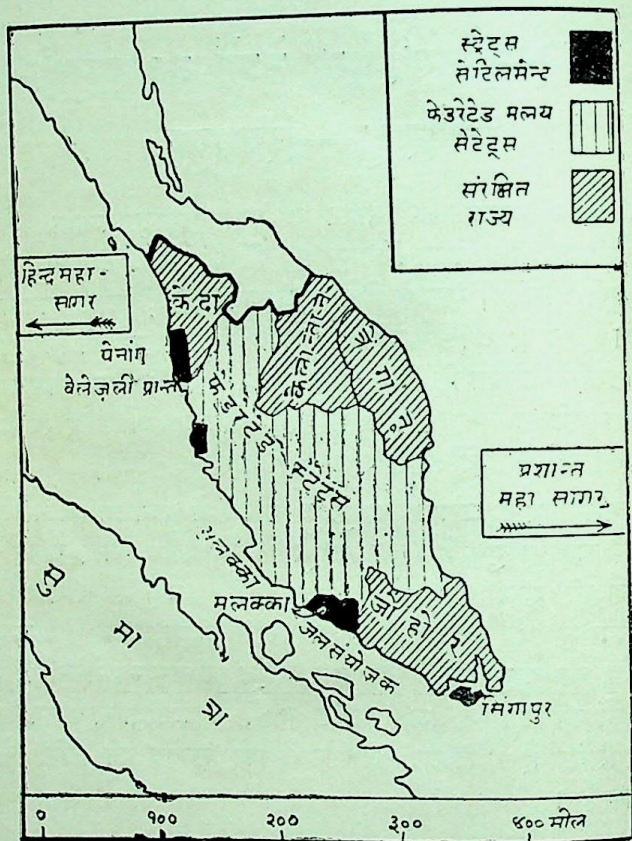
५३—मलय प्रायद्वीप

हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर के बीच में मलय प्रायद्वीप की स्थिति बड़े मार्के की है। अठारहवीं सदी के प्रायः अन्त में ईस्टइंडिया कम्पनी ने पेनांग में अपना अड्डा जमाया। मलक्का पर पहले पुर्चगालियों का अधिकार था। फिर डच (हालैंड) के लोगों ने यहाँ अपना अधिकार जमाया। अन्त में उनसे अँग्रेजों ने इसे छीन लिया। इसके बाद अँग्रेजों ने सिंगापुर में अपना उपनिवेस बनाया। इस समय समस्त मलय प्रदेश पर ब्रिटिश अधिकार है। पेनांग वेलेजली प्रान्त मलक्का और सिंगापुर में ब्रिटिश क्राउन कलोनी (स्ट्रेट्स सेटिलमेन्ट) हैं। चार फेडरेटेड मेले स्टेट्स (रियासतों में) ब्रिटिश प्रभुत्व है नाम मात्र के लिये इन रियासतों में अलग अलग सुलतान हैं। मलय प्रायद्वीप के दूसरे (केडा, केलन्तान, ट्रेंगानू और जोहोर राज्यों के शासक अलग अलग हैं। वे ब्रिटिश संरक्षता में हैं और अँग्रेज़ी सलाहकारों के अनुसार चलते हैं।

अब से ६० वर्ष पहले यहाँ टिन की खानों का पता चला तभी से अँग्रेज़ों ने इस प्रायद्वीप के भीतरी भागों में घुसना शुरू किया आज कल रबर और टीन यहाँ की प्रधान सम्पत्ति है। रबर के बग़ीचों में हिन्दुस्तानी और टीन की खानों में चीनी मज़दूर काम करते हैं। इस समय हिन्दुस्तानी और चीनी लोगों की संख्या मिलकर यहाँ के मूल निवासी मलय लोगों से भी अधिक है।

काश्मीर
पंजाब
बलोचिस्तान
राजपूताना
नेपाल
भूटान
बिहार
बंगाल
आसाम
ब्रह्मा
मध्य प्रदेश
हैदराबाद
मैसूर
लंका
दूसरी मिनिस्टरी
कांग्रेस मिनिस्टरी

५४—भारतवर्ष

भारतवर्ष का लगभग $\frac{१}{३}$ भाग देशी राज्यों और शेष $\frac{२}{३}$ भाग ब्रिटिश प्रान्तों में बटा हुआ है। कुछ देशी राज्य इतने पुराने हैं कि वे अंग्रेज़ों के आने के पहले भी मौजूद थे। कुछ राज्य पहले इतने प्रबल थे कि उन्होंने अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी से बराबरी की सन्धि की। लेकिन देशी राज्यों के आपस की फूट से उनकी बराबरी मातहती या पराधीनता में बदल गई। जब राजा स्वयं पराधीन हो और सब काम रेज़िडेण्ट या एजेंट के इशारे से करता हो तो वहाँ प्रजा की पराधीनता दुगनी बढ़ जाती है। देशी राज्यों के कुछ भोले भाले लोगों को अपनी दुहरी पराधीनता का पता न लगा। वे अपने राजा को स्वतन्त्र समझ कर अपने को भी स्वाधीन मानने लगे। लेकिन ब्रिटिश भारत में एकदम अँग्रेज़ी शासन हो जाने से लोगों को विदेशी शासन खटकने लगा। पहले १८५७ में लोगों ने विदेशी सत्ता का सशस्त्र मुकाबिला किया। महारानी विक्टोरिया की उदार घोषणा से लोग कुछ समय (१८८५ तक) के लिये बहक गये। इस वर्ष भारतीय कांग्रेस की स्थापना हुई। आरम्भ में कांग्रेस की आवाज़ कमज़ोर थी। लोकमान्य तिलक के आने से कांग्रेस में जीवन का संचार हुआ। महात्मा गांधी के आने से कांग्रेस सचमुच राष्ट्रीय संस्था बन गई। पूर्ण स्वराज्य इसका ध्येय हुआ। अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन से राष्ट्र अपनी शक्ति समझने लगा। ब्रिटिश सरकार ने असहयोग का घोर दमन किया और इस अफवाह के फैलाने की कोशिश की कि देश कांग्रेस के साथ नहीं है। इस ग़लती को अंग्रेज़ी शासकों के दिमाग़ से उड़ाने के लिये कांग्रेस ने चुनाव में भाग लिया। इसमें कांग्रेस की शानदार विजय हुई। ७ प्रान्तों में कांग्रेस मन्त्रिमण्डल द्वारा शासन होने लगा। लेकिन पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने के लिये देश को अभी बहुत कुछ करना है।

अंग्रेज़ी मील
० ५० १०० १५० २००
रेलवे
मिचीना
भामो
ची न
मीकांग नदी
इरावदी नदी
सालविन नदी
मांडले
आवा
अक्याब
बं गा ल
की
खा ड़ी
प्रोम
सितांग नदी
बसीन
रंगून
मौलमीन
निग्रीस अन्तरीप
मर्तबान
का खाड़ी
इरावदी का मुहाना
श्या म
टवाय
अंडमान
द्वी० स०
मरगुई
पोर्ट ब्लेयर
द्वी० स०
श्याम की खाड़ी
१ लाख से ५००,०००तक
५० से १००.००० तक
५०,००० से अधिक
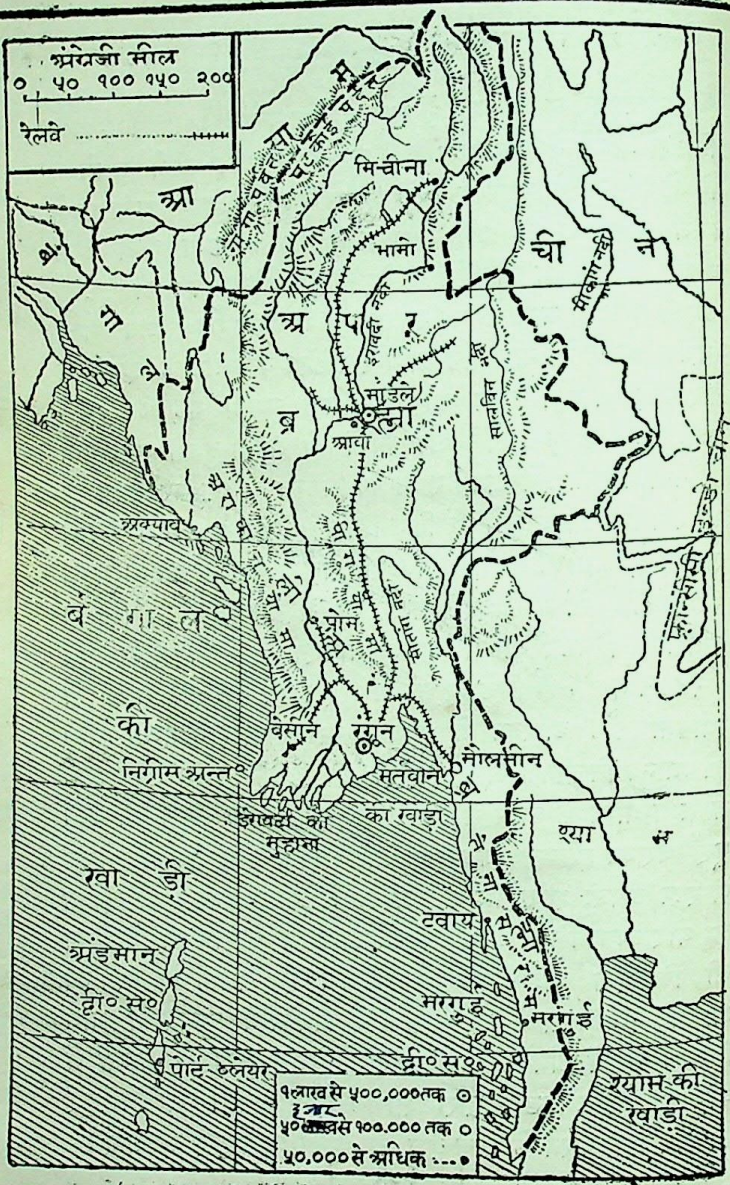
५५-बरमा और स्याम

बरमा और हिन्दुस्तान के बीच में जंगली और पहाड़ी मार्ग कुछ दुर्गम है। समुद्री मार्ग अधिक सुगम है। रंगून का बन्दरगाह कलकत्ते से केवल ७००० मील और मद्रास से १००० मील दूर है। फिर भी हिन्दुस्तान और बरमा का घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। ब्रिटिश राज्य में शामिल हो जाने पर भी हिन्दुस्तानी तरह तरह के कामों में यहां लग गये। जब हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय आन्दोलन ज़ोर पकड़ने लगा तब उसका असर बरमा में भी फैलने लगा। बरमा का मिट्टी का तेल, सागौन की लकड़ी और चावल ब्रिटिश व्यापार के लिये बड़े काम की चीजें हैं। भारतवर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग रखने के लिये नये शासन विधान के अनुसार १९३५ ई० में बरमा भारतवर्ष से अलग कर लिया गया।

स्याम देश बरमा और फ्रेंच इंडोचीन के बीच में स्थित है। ब्रिटेन और फ्रांस दोनों ही ने स्याम से लाभ उठाने की भरसक कोशिश की। पर दोनों की पुरानी अनबन से स्याम की स्वाधीनता क़ायम रही। हाल में जापान ने भी इधर अपना प्रभाव बढ़ाने की सोची। स्याम में कई बार राजनैतिक उथल पुथल हुई। १९३५ के मार्च महीने में यहाँ के राजा प्रजाधिपोक ने सिंहासन त्याग दिया। १९३१ और १९३४ के बीच में स्याम में जापानी व्यापार ५०० फ़ी सदी बढ़ गया। जब से ब्रिटेन ने सिंगापुर में जहाज़ी अडडा बनाया है तब से जापान ने क्रास्थल संयोजक में होकर जहाज़ी नहर निकालने की धुनि की है। यदि इस में जापान को सफलता मिली तो सिंगापुर का महत्व मिट्टी में मिल जायगा। जिस प्रकार पनामा संयुक्त राष्ट्र अमरीका की नहर है उसी प्रकार क्रा नहर जापान के हाथ में होगी।

उर्गा ०
मं गो लि या
सो० सो० रूस
०उरुम्ची
सिं क्या ग
(चीनी - तुर्कीस्तान)
भी त री
मं गो लि या
यारकंद
काश्मीर
ति ब्ब त
लासा
एवरेस्ट
हि न्दु स्ता न
कलकत्ता
६००० से ऊपर
१८००० " "
० ५०० मील १०००
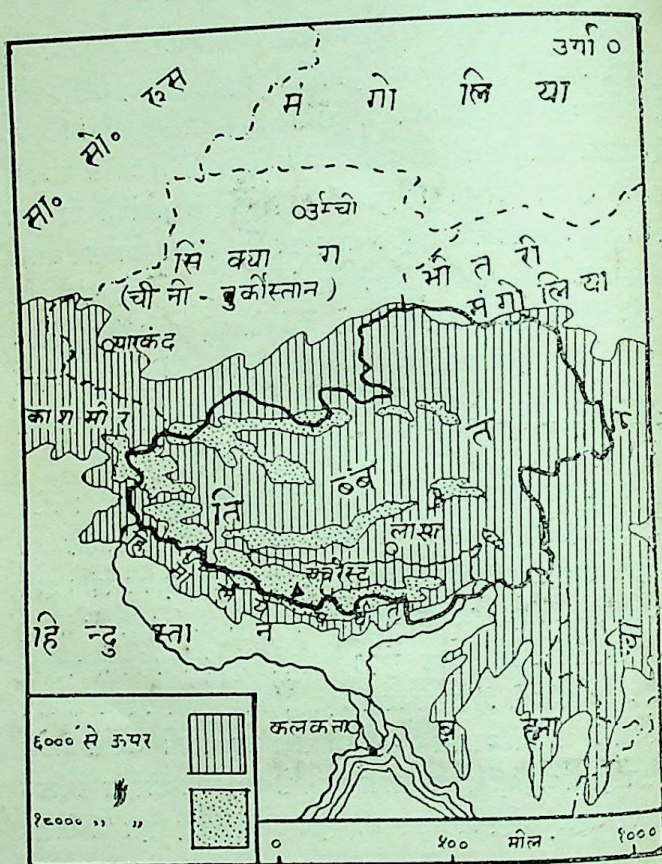
५६—तिब्बत

तिब्बत और भारतवर्ष का घनिष्ट भौगोलिक सम्बन्ध है। जब से भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित हुआ तब से ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत में भी अपना प्रभाव जमाने का प्रयत्न किया उधर रूस की ज़ारशाही भी तिब्बत को अपनाने लगी। १९०३-४ में ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत को व्यापारिक द्वार खोलने के लिये मजबूर करने के लिये एक सैनिक टोली लासा (तिब्बत की राजधानी) को भेजी।

१९११ में चीनी क्रान्ति के बाद तिब्बत में चीनी आधिपत्य फिर मान लिया गया। हाल में चीन में जो गड़बड़ी हुई उससे लाभ उठा कर ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत के डलाई लामा से मैत्री करके वहां ब्रिटिश प्रभाव फिर स्थापित कर लिया। पर ताशी लामा के लौटने से आशा है कि तिब्बत फिर पूर्ण स्वाधीन हो जावे और वहाँ विदेशियों के हथकंडे न चलने पावें।

मिस्र
स्पेनिश, पुर्तगीज़, बेल्जियन, ब्रिटिश, इटेलियन
लाइबेरिया
विषुवत रेखा
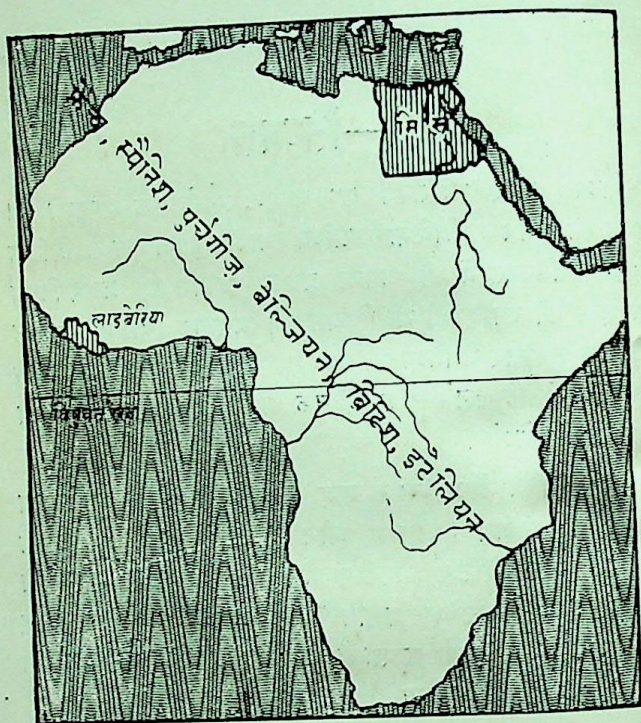
५७--अफ़्रीका के स्वाधीन राज्य

योरुपीय अन्वेषण के साथ साथ अफ्रीका का बटना भी आरम्भ हो गया। उन्नीसवीं सदी के अन्त में तीन राज्यों को छोड़ सारे अफ्रीका पर योरुपीय लोगों का अधिकार हो गया। इन तीन भागों में एबीसीनिया को १९३५ में हाल ही में इटली ने हड़प लिया। स्वेज़ नहर खुलने के बाद मिस्र देश पर ब्रिटेन की नज़र लगी। १९१४ ई० में बड़ी लड़ाई छिड़ने पर टर्की के नाम मात्र के अधिकार को अलग कर के ब्रिटेन ने मिस्र देश को खुल्लम खुल्ला अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया। बड़ी लड़ाई के बाद मिस्र देश को नाम मात्र की स्वाधीनता दे दी गई। सूडान पर ब्रिटिश अधिकार रहा। केनाल जोन (नहर के देश) केरो काहिरा और सिकन्द-रिया में अंग्रेज़ी फौज बनी रही। मिस्र देश की विदेशी नीति ब्रिटिश हितो के अनुसार निर्धारित होती रही। १९३६ की सन्धि के अनुसार मिस्र देश की स्थिति में काफी सुधार हुआ।

स हा रा
ब्रिटेन को
टोगोलैंड
फ्रान्स को
ब्रिटेन को
फ्रांस को
नील
विषुवत रेखा
केमरून
कांगो
टैंगानायका
बेल्जियम को
ब्रिटेन को
जेम्बेजी
द० प० अफ्रीका
द० अफ्रीका
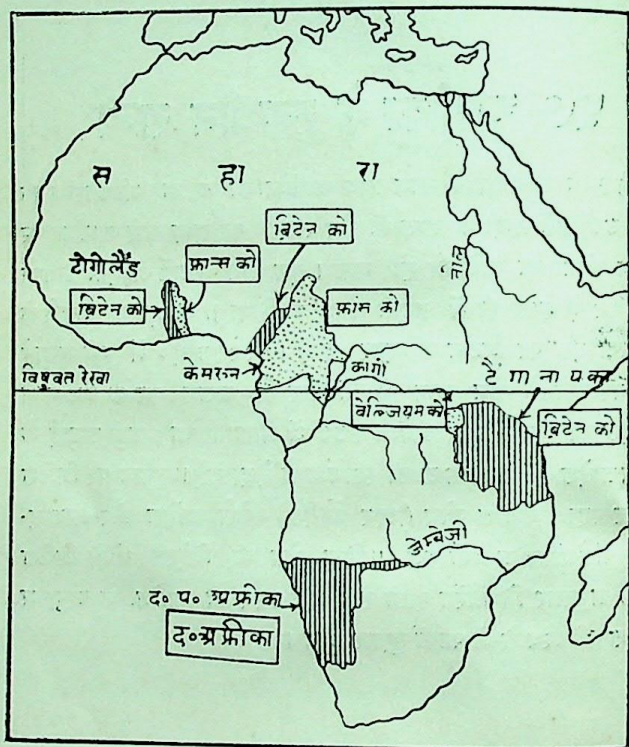
५८—अफ्रीका में जर्मनी के खोये हुए प्रदेश

बड़ी लड़ाई के बाद जर्मनी के सारे उपनिवेशों पर उसके विजेताओं का अधिकार हो गया। नाम के लिये वे लोग (राष्ट्र संघ) के मेंडेट (अधिकृत प्रदेश) घोषित किये गये। टोगोलैंड ब्रिटेन और फ्रांस को मिला। पश्चिमी भाग ब्रिटेन के हाथ आया। इसका शासन प्रबन्ध गोल्ड कोस्ट के साथ होता है। नाइजीरिया के पास वाला केमरून का थोड़ा सा प्रदेश ब्रिटेन को मिला। शेष बड़ा भाग फ्रांस ने ले लिया। फ्रांस ने कुछ भाग मेंडेट के नाम से और शेष वैसे ही अपने साम्राज्य में मिला लिया। जर्मन ईस्ट (पूर्वी) अफ्रीका का अधिकांश भाग ब्रिटेन को मिला और टैंगानीका प्रदेश कहलाने लगा। थोड़ा सा भाग बेल्जियम ने कांगो में मिला लिया लड़ाई के समय दक्षिण अफ्रीका की फौजों ने जर्मन दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका को जीता था। इसलिये इस प्रदेश का शासन लीग की ओर से दक्षिण अफ्रीका को ही मिला। नाज़ी संगठन और प्रचार को रोकने के लिये यहाँ तरह तरह के प्रयत्न किये गये। लेकिन उपनिवेशों को फिर से वापिस लेने के लिये जर्मनी की माँग फिर से ज़ोर पकड़ रही है।

सूडान
पश्चिम
गेम्विया
सियरालिओन
गोल्ड कोस्ट और अशान्ति
नाइजीरिया
पूर्व
यूगांडा
कीनिया
टैंगानायका
न्यासा लैंड
उत्तरी
दक्षिणी
रोडेशिया
दक्षिण
बेचुआना लैंड
(संरक्षित राज्य)
द० प० अफ्रीका का मैंडेट
द० अफ्रीका के सं० राज्य
स्वाजी लैंड
बसूटो लैंड
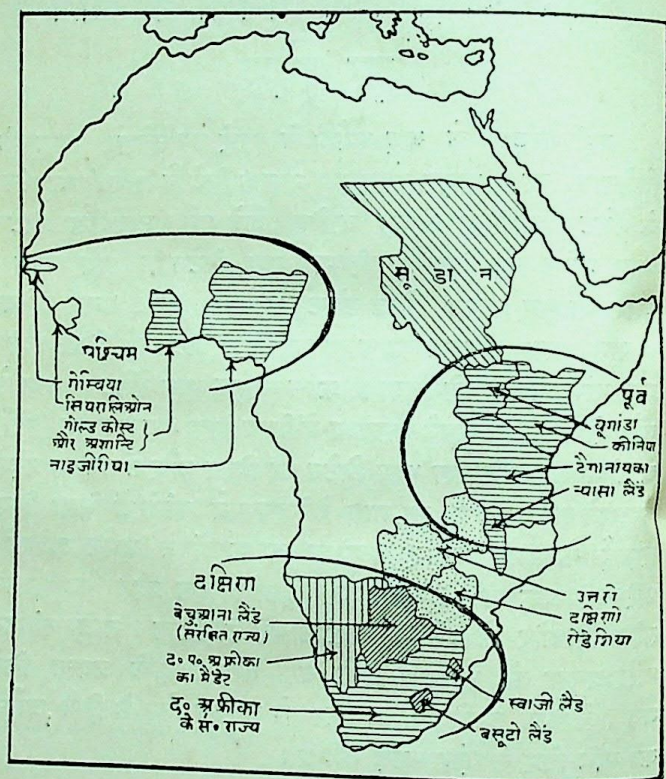
५६—अफ्रीका में ब्रिटिश साम्राज्य

अफ्रीका में ब्रिटिश प्रदेश एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैले हुये हैं। नाइजीरिया और पश्चिमी तट के प्रदेशों में कोई अंग्रेज बसने के लिये नहीं गया है। यहां की जलवायु उनके लिये अत्यन्त नम और गरम है। पर यहां की उपज से लाभ उठाने के लिये यहाँ अंग्रेज़ी शासन है। पूर्वी अफ्रीका में यूगांडा, कीनिया टँगानीका और न्यासालैंड शामिल हैं। यहाँ ऊँचे भागों की जल-वायु अच्छी है। यहीं अंग्रेज़ लोग बसने लगे हैं। इसलिये यहाँ बसे हुए मूल निवासियों और हिन्दुस्तानियों की समस्या उठ खड़ी हुई है। दक्षिण-अफ्रीका में गोरे उपनिवेश अधिक संख्या में बसे हैं। पर इन दोनों की संख्या यहाँ बसे हुए मूल निवासियों और हिन्दुस्तानियों के मुकाबले में कुछ भी नहीं है। इसी से गोरों के हाथ में शासन रखने के लिये हब्शियों और हिन्दुस्तानियों को शासन प्रबन्ध में समान अधिकार नहीं दिया है। पूर्वी अफ्रीका और दक्षिणी अफ्रीका के बीच में भीतर की ओर रोडेशिया स्थित है। उत्तर की ओर सूडान का बड़ा प्रदेश है।
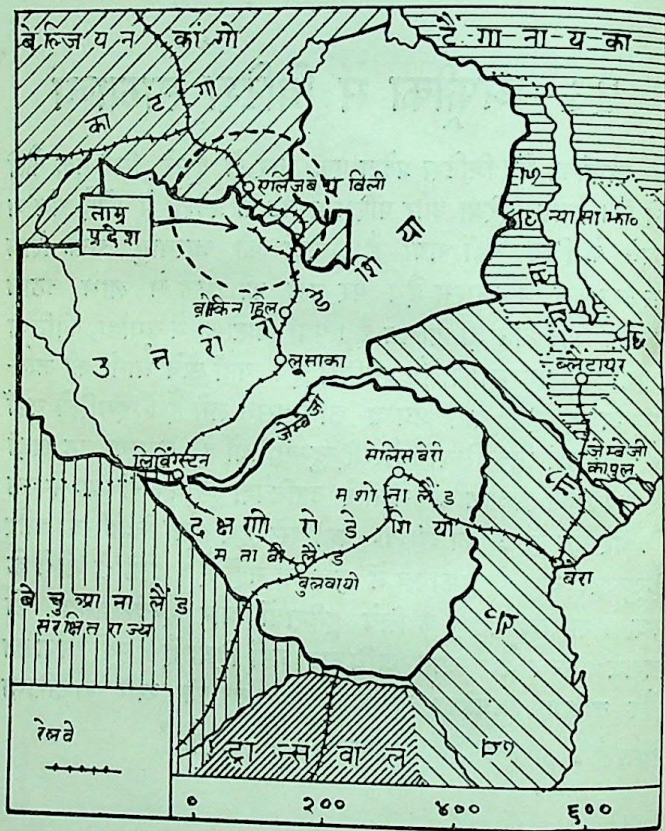
६०—रोडेशिया

१९२३-२४ ई० में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने साउथ अफ्रीकन चार्टर्ड कम्पनी से रोडेशिया का अधिकार ले लिया। इसी समय दक्षिणी रोडेशिया को कुछ हद तक स्वराज्य मिल गया। इस समय उत्तरी रोडेशिया का कोई आर्थिक महत्व न था। इसके बाद वहाँ बेल्जियन काटंगा के पास तांबे की विशाल खानों का पता लगा। इससे गोरे पूंजीपतियों को अपार लाभ होगा। साथ ही यहाँ के मूल निवासियों के हितों को खतरा है। इसके दक्षिण की ओर दक्षिण अफ्रीका है जहाँ गोरों के हितों को सर्व प्रधानता दी जाती है। उत्तरी रोडेशिया के कुछ गोरे उपनिवेशक ब्रिटिश पार्ल्यामेन्ट के नियन्त्रण से बचने के लिये दक्षिणी रोडेशिया से मिलाना चाहते हैं।

दक्षिण अफ्रीका के संरक्षित राज्य
प्रधान रेलवे
बटावाना रिज़र्व
ओकावांगो दलदल
बेचुआनालैंड संरक्षित राज्य
सेरोवे
कलहारी रेगिस्तान
बाकवेना रिज़र्व
द० प० अफ्रीका (यूनियन मैंडेट)
ट्रांसवाल
स्वाज़ीलैंड
प्रीटोरिया
जुहानेसबर्ग
ब्रि० बेचुआनालैंड
ऑरेंज फ्री० स्टेट
किम्बली
ब्लोयमफान्टेन
ऑरेंज नदी
बसूटोलैंड
डर्बन
केप प्रांत
ईस्ट लंडन
केपटाउन
पोर्ट एलिज़बेथ
० २०० ४०० ६०० मील ८००
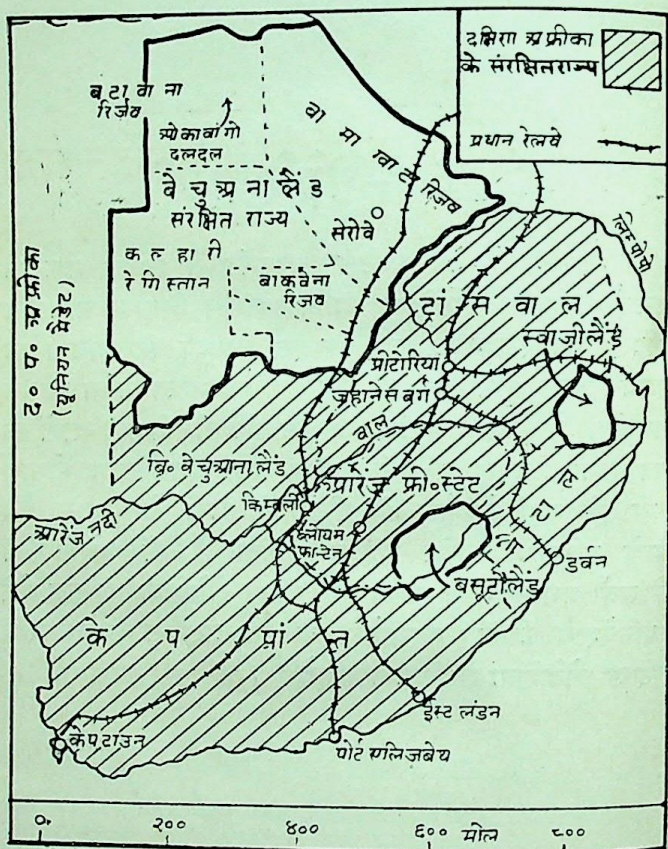
६१—दक्षिणी अफ्रीका के संरक्षित राज्य

१९०९ ई० में जब यूनियन आफ साउथ अफ्रीका (दक्षिण अफ्रीका स्वराज्य) बना तब तीनों ब्रिटिश संरक्षित राज्य ब्रिटिश सरकार के अधिकार में ही बने रहे। यह तीन संरक्षित राज्य थे बेचुआनालैंड (ब्रिटिश बेचुआनालैंड दूसरा है, वह केपकलोनी का एक भाग है) बसूटोलैंड और स्वाजीलैंड। इन में स्वाज़ीलैंड सबसे बड़ा है और यूनियन की उत्तरी सीमा पर स्थित है। स्वाज़ीलैंड और बसूटोलैंड छोटे भाग हैं और यूनियन के ही भीतर स्थित हैं। यूनियन के गोरे लोग इन तीनों प्रदेशों को अपने ही अधिकार में लेना चाहते हैं। लेकिन मूल निवासी सीधे ब्रिटिश शासन को अधिक प्रसन्द करते हैं। ब्रिटिश सरकार ने इन प्रदेशों को एक दम यूनियन को सौंप देने से इनकार किया। लेकिन इन प्रदेशों के आर्थिक विकास को यूनियन सरकार के हाथ में दे दिया।

ए बी सी नि या
झील
केवीरोंडो मूलनिवासी संरक्षित प्रदेश की सोने की खान
यु गां डा
कम्पाला
कीनिया
गोरे लोगों के उपनिवेश
विक्टोरिया झील
नेरोबी
म्वांजा
मोम्बासा
टांगा
टबोरा
उजीजी
जंजीबार
टैं गा ना य का
टैंगानायका झील
दारेस्लाम
लिंडी
३००० फुट से अधिक ऊंचे भाग
रेलवे
० २०० ४०० मील

६२—ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका

टैंगानीका टेरीटरी का शासन ब्रिटिश सरकार ने मैंडेट की हैसियत से अपने हाथ में लिया। इस प्रदेश का शासन और प्रदेशों से अच्छा है। जब से यूगांडा रेलवे बनी और यूगांडा को मोम्बासा के तट से जोड़ दिया गया तब से कीनिया के ऊँचे भाग गोरे लोगों को भाने लगे। ऊँचे भाग ही कीनिया में रहने योग्य हैं। नीचे भागों में मलेरिया फैलता है। फिर क्या था यहाँ के असली रहने वाले उन अच्छे स्थानों से निकाल दिये गये और नियत (रिज़र्व) स्थानों में रक्खे गये। अच्छे स्थान गोरों के लिये खाली कर दिये गये। मूल निवासियों को जो स्थान दिये गये थे वे बहुत संकुचित थे। इसलिये उनसे ब्रिटिश सरकार ने वादा किया कि आगे किसी हालत में भी उनके स्थानों पर दखल न किया जायगा। लेकिन दैवयोग से विक्टोरिया झील के पास मूल निवासियों के नियत (रिज़र्व) स्थान कावीरोंडो में सोने का पता लगा। वादा फौरन तोड़ दिया गया। कई वर्गमील ज़मीन मूल निवासियों से छीन कर फिर गोरे लोगों को दे दी गई। गोरे शासकों की इस तरह की वादाखिलाफी का मूल निवासियों पर गहरा असर पड़ रहा है।

गि नी
फ्रा सी सी
सि ऍ रा
फ्रीटाउन
मकानी
पेन्डेम्बु
लि ओ न
लाइबेरिया
राबर्ट्स पोर्ट
मनरोविया
मार्शल
बुचानन
ग्रीनविली
हार्पर
केप पल्मास
आइवरी तट
तटीय प्रदेश
0
100
200
मील
400
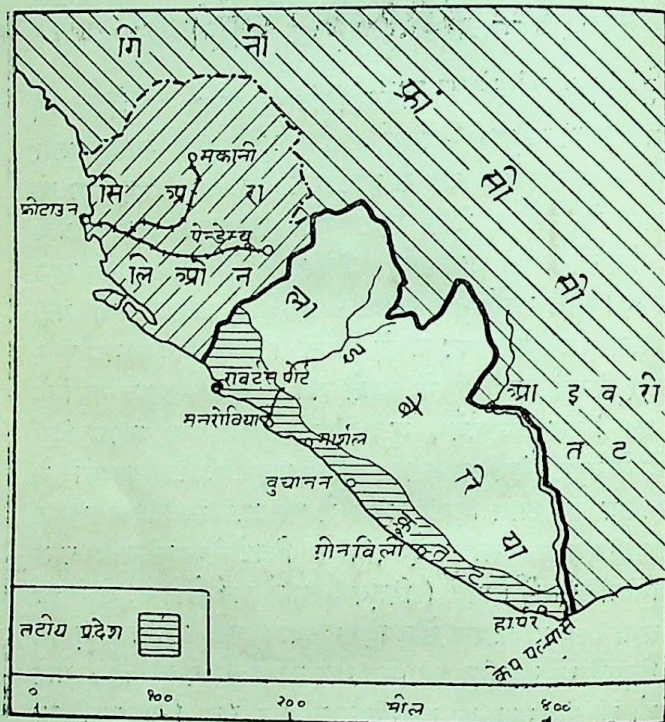
६३—लाइबेरिया

१९१६ ई० में अमरीका के आज़ाद हब्शियों को बसाने के लिये लाइबेरिया उपनिवेश का आरम्भ हुआ। १८४७ ई० में हबशी उपनिवेशकों ने स्वाधीनता की घोषणा की। पर सभ्य हब्शियों की संख्या ५०००० से अधिक नहीं है। इन में १२००० अमरीका से लौट कर आये हुए हैं। इनका प्रभाव प्रायः तटीय प्रदेश तक ही सीमित है। भीतरी भागों में वे अधिक नहीं घुस पाये हैं। १९१८ ई० में संयुक्त-राष्ट्र अमरीका ने लाइबेरिया को ऋण दिया। इससे अमरीका का आर्थिक सलाहकार यहां आ डटा। आजकल लाइबेरिया की आर्थिक सम्पति एक प्रकार से अमरीका की फायर स्टोन रबर कम्पनी के हाथ रेहन है। रबर के बगीचों की दशा अधिक बिगड़ गई। उसी की जांच पड़ताल करने के लिये राष्ट्र संघ ने एक कमेटी नियत की।

वे प्रदेश जिन में समस्त जनसंख्या की आधी या आधी से अधिक हबशी जनसंख्या है
२५%-५०% के बीच में
१% - ५%
५% - २५%
१% फीसदी से कम
क ना डा
मे क्सि को
वर्जीनिया
नार्थ केरोलिना
साउथ केरोलिना
जार्जिया
अलबामा
मिसीसिपी
लूशियाना
अर्कान्सास
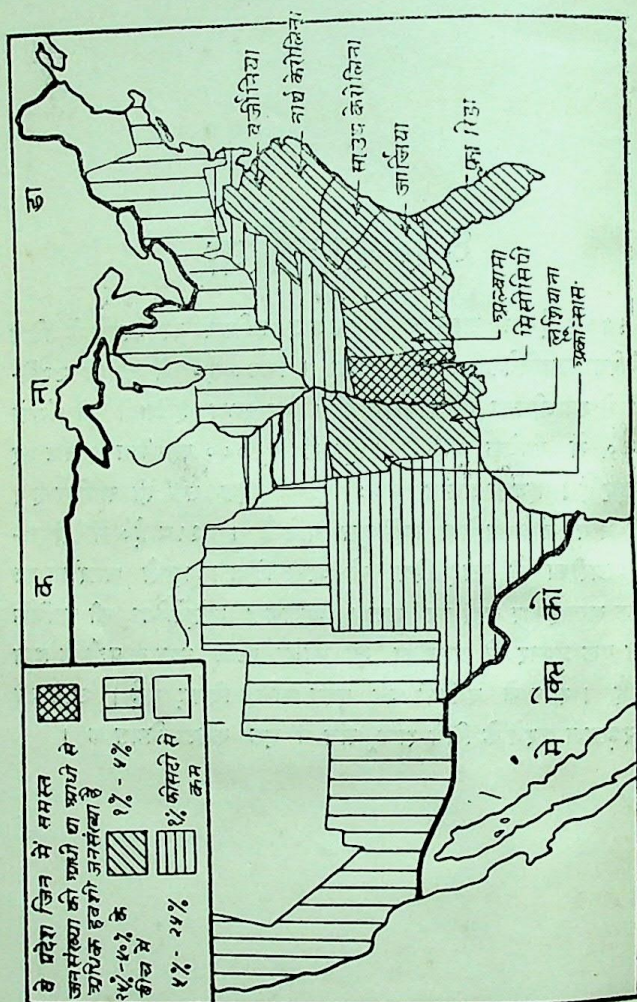
६४—संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हवशियों की समस्या

अब से लगभग चार सौ वर्ष पहले योरुप के गोरे लोग अमरीका में आये। इनकी संख्या तेज़ी से बढ़ी। लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले संयुक्त राष्ट्र अमरीका एक स्वतन्त्र राज्य बन गया। कुछ गोरे लोग दक्षिणी भाग में खेती के काम में लगे। गरमी में मेहनत से बचने के लिये उन्होंने हज़ारों हवशी ग़ुलाम मोल लिये। आज से लगभग ८० वर्ष पहले ग़ुलामी की प्रथा तो दूर हो गई लेकिन हवशी बने रहे। इस समय संयुक्त राष्ट्र अमरीका की लगभग दस करोड़ आबादी में सवा करोड़ हवशी हैं, जो सारी आबादी के दस फीसदी से अधिक हैं। दक्षिणी रियासतों में हवशी लोग संख्या में गोरी आबादी से कहीं कुछ अधिक कहीं वे उनके बराबर हैं। मिसीसिपी रियासत में वे (हबशी) इस समय भी अधिक (५५ फ़ी सदी) हैं। साउथ केरोलिया और कुछ दूसरी रियासतों में हबशी लोग पन्द्रह वर्ष पहले अधिक संख्या में थे। आजकल वे घट गये हैं। जहाँ हवशी लोग अधिक संख्या में हैं वहाँ उनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता है। वे गोरों के गिरजाघरों, नाटकघरों और भोजनालय में नहीं जा सकते हैं। जो हाल नाज़ी जर्मनी में यहूदियों का है उससे कम बुरा हाल हवशियों का संयुक्त राष्ट्र अमरीका में नहीं है।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका
न्यू आर्लियन्स
अटलांटिक
मेक्सिको की खाडी
मेक्सिको
कीवेस्ट
बहमा द्वीप (ब्रि०)
पोर्टोरिको
वर्जिन द्वीप
ब्रिटिश
फ्रेंच
डच
क्यूबा
जेमैका
(ब्रिटिश)
हांडूराज (ब्रि०)
हेडटी
द० डोमिंगो
केरीबियन सागर
ट्रिनीडाड
(ब्रिटिश)
ग्वाटेमाला
हांडूराज
निकारेगुआ
कोस्टारिका
प्रशान्त महासागर
पनामा
वेनिज़ुएला
ब्रिटिश
गायना
कोलम्बिया
सं० राष्ट्र अमरीका के विशेष महत्व का प्रदेश
0
५00
१00
२000 मील

६५—संयुक्त राष्ट्र अमरीका और केरिबियन सागर

१८९८ की स्पेन की लड़ाई के बाद संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सरकार केरिबियन सागर के द्वीपों में तेज़ी से बढ़ने लगी। स्पैनिश लड़ाई के बाद पोटोरिको का द्वीप मिला लिया गया। क्यूबा प्रायः संयुक्त राष्ट्र अमरीका का संरक्षित द्वीप बन गया। पनामा के नये प्रजातंत्र में संयुक्त राष्ट्र अमरीका की देख-भाल होने लगी। १९०३ में केनाल का प्रदेश संयुक्त राष्ट्र को सदा के लिये मिल गया। १९१५ के हस्तक्षेप के बाद हेइटी की आर्थिक सम्पत्ति पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका की निगरानी होने लगी। सैंडोमिंगो द्वीप भी उनके संरक्षण में आ गया। १९१६ में निकारेगुआ में इतने अधिकार मिल गये कि वहाँ संयुक्त राष्ट्र का ही नियंत्रण हो गया। १९१७ ई० में संयुक्त राष्ट्र ने वर्जिन द्वीप डेन्मार्क से मोल ले लिये। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रभाव-क्षेत्र के उत्तर (बहमा) और दक्षिण (जमैका) में ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकार (द्वीप) हैं।
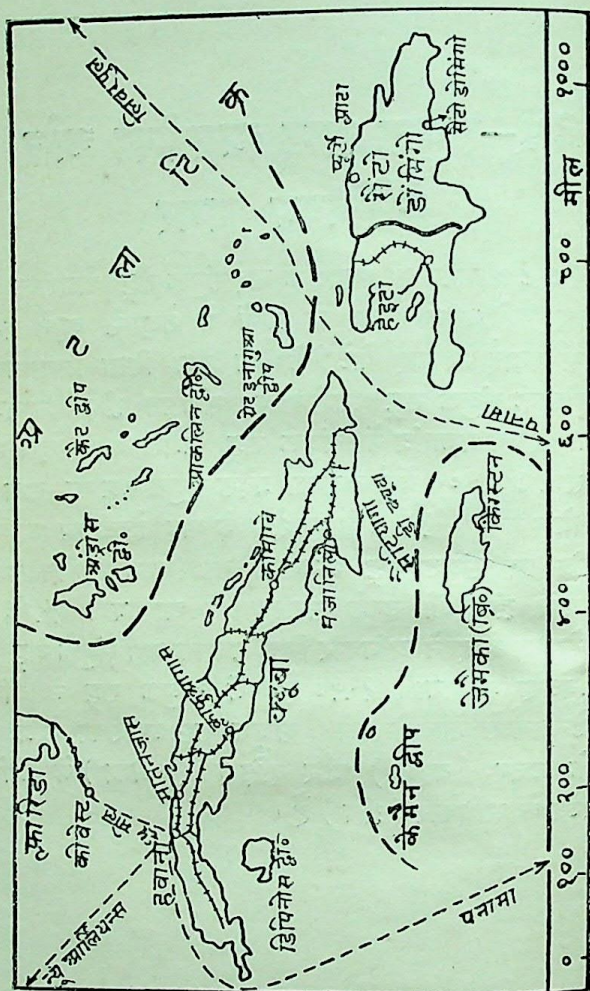
६६—क्यूबा

प्लैट सुधार के अनुसार (जो १९२४ में रद् कर दिया गया) संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने स्पैनिश अमरीकन लड़ाई के बाद क्यूबा पर अपना संरक्षण घोषित कर दिया। हाल में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रभुत्व के विरुद्ध क्यूबा में राष्ट्रीय विद्रोह उठ खड़ा हुआ, पर क्यूबा की आर्थिक शिकायतें और भी गहरी हैं। क्यूबा की प्रधान सम्पत्ति गन्ने की शक्कर है। लेकिन अमरीकन सरकार अपने यहां की चुकन्दर की शक्कर को प्रोत्साहन देने के लिये क्यूबा के गन्ने की शक्कर को भारी चुंगी लगाकर कम कर रही है। इससे क्यूबा का आर्थिक जीवन ही घोर संकट में पड़ रहा है।

६७—पनामा और निकारेगुआ

स्पैनिश अमरीकन लड़ाई से यह स्पष्ट हो गया कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपना प्रभुत्व स्थिर रखने के लिये या तो दोनों (अटलांटिक और प्रशान्त) महासागरों के तटों पर जहाज़ी सेना रक्खे अथवा दोनों तटों को मिलाने के लिये वह एक नहर खोले। अन्त में दोनों महासागरों को जोड़ने के लिये एक नहर की योजना तय की गई। पनामा पहले कोलम्बिया प्रजातन्त्र का अंग था। कोलम्बिया नहर की ज़मीन का दाम बहुत अधिक मांगता था। १९०३ ई० में पनामा ने अपनी स्वाधीनता घोषित कर दी। दस दिन बाद संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने इसे स्वीकार कर लिया। पनामा की नई सरकार ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका को नहर बनाने के लिये ० मील चौड़ी पेटी अटलांटिक तट से प्रशान्त महासागर के तट तक सदा के लिये दे दी।

१९१६ से पनामा नहर में जहाज़ों की इतनी भीड़ होने लगी कि दूसरी नहर की आवश्यकता प्रतीत हुई। नहर-मार्ग और दोनों तटों पर जहाज़ी अड्डा बनाने के लिये संयुक्त राष्ट्र ने निकारेगुआ से सन्धि कर ली। लेकिन निकारेगुआ की नहर बनाने में ७० करोड़ डालर खर्च होंगे। पनामा नहर में नया भाल १४ करोड़ रुपये में ही बन जायगा। इसलिये निकारेगुआ की नहर बनाने का काम अभी शुरू नहीं हुआ है।
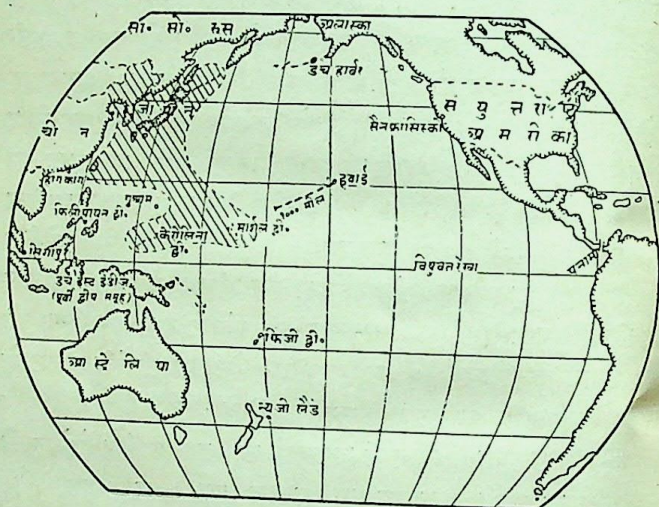
६८—प्रशान्त महासागर में जातियों का संघर्ष

१८९८ ई० में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने हवाई द्वीप को (जो प्रशान्त महासागर के लम्बे जल-मार्ग में अधबिच स्थित है) मिला लिया। फिर उसने कुछ महीनों के बाद फिलीपायन द्वीप और गुआम द्वीप ले लिये। इससे संयुक्त राष्ट्र अमरीका प्रशान्त महासागर की एक शक्ति बन गई। बड़ी लड़ाई के बाद प्रशान्त महासागर के जो द्वीप विषुवत रेखा के उत्तर में स्थित थे वे लीग की ओर से जापान को मिल गये। इससे जापानी अधिकार संयुक्त राष्ट्र अमरीका के उस जलमार्ग को काटने लगा जो पनामा नहर और फिलीपायन द्वीपों के बीच में स्थित है। जहाज़ी सैनिकों का अनुमान है कि हवाई द्वीप से १००० मील से अधिक आगे संयुक्त राष्ट्र अमरीका बलपूर्वक नहीं बढ़ सकता है। संयुक्त राष्ट्र से अमरीका नाम-मात्र को फिलीपायन द्वीप का स्वाधीनता भले ही मिल जाय, लेकिन १९४५-४६ ई० के पहले अमरीका अपना नियन्त्रण ढीला नहीं कर सकता। अगर अमरीका फिलीपायन द्वीप को पूरी स्वाधीनता दे दे, तो उसे जापान के हाथ में चले जाने का डर है। जापान की बढ़ती हुई शक्ति से ब्रिटिश साम्राज्य के हांगकांग और सिंगापुर को भी डर है। इसी तरह डच लोगों के पूर्वी द्वीप समूह का तेल भी जापान के बड़े काम का है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका
कैलाओ
एन्टोफगस्टा

६९—दक्षिणी अमरीका में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का साम्राज्यवाद

संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने जब से केरिबियन सागर की ओर बढ़ना शुरू किया है तब से दक्षिणी अमरीका की रियासतें सन्देह की दृष्टि से देख रही हैं। पनामा नहर ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के पूर्वी कारबारी प्रदेश को प्रशान्त महासागर के प्रजातन्त्र राष्ट्रों को सैकड़ों मील नज़दीक कर दिया है। मनरो डाक्ट्रिन (सिद्धान्त) के अनुसार पहले संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने योरुप के राज्यों को दक्षिणी अमरीका में हस्तक्षेप करने से रोक दिया था। हाल में इस डाक्ट्रिन के अनुसार दक्षिणी अमरीका की खटपट में हस्तक्षेप करने का एक मात्र अधिकार अपने ही ऊपर ले लिया है। दक्षिणी अमरीका में संयुक्त राष्ट्र की सब से कड़ी आर्थिक लड़ाई ब्रिटेन के साथ है। अर्जेण्टाइना में यह आर्थिक लड़ाई और भी अधिक विकट है। यहां सब से अधिक व्यापारिक उन्नति हुई है। १९३३ की सन्धि से अर्जेण्टाइना ने ब्रिटेन को कई व्यापारिक सुविधायें कर दी हैं। लेकिन समस्त दक्षिणी अमरीका में १९१३ से १९२७ तक ब्रिटेन का निर्यात (ब्रिटेन से यहाँ आने वाला माल) २५ फ़ीसदी से घटकर १६ फ़ी सदी रह गया। इसी बीच में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का निर्यात यहां २४ फ़ी सदी से बढ़ कर ३८ फ़ी सदी हो गया।

ब्रे जी ल
ग्रेन चाको
इस प्रदेश के विषय में
बोलिविया और पैरेग्वे में
झगड़ा चल रहा है
लीमा
ला पाज
बो लि वि या
टैकना एरीका
प्रदेश
पोटोसी
यूरुग्वे
ब्यूनाज आयर्स
0
५००
१०००
मील
२०००

७०—बोलिविया और पेरेग्वे की लड़ाई

बोलिविया और पेरेग्वे दक्षिणी अमरीका के दो ऐसे भीतरी प्रजातन्त्र राष्ट्र हैं जो किसी समुद्र तट को नहीं छूते हैं। १९३२ में इन दोनों राष्ट्रों के बीच में लड़ाई शुरू हुई। इसका अन्त १९३५ के जून की क्षणिक सन्धि से हुआ। यह लड़ाई ग्रेनचाको प्रदेश के लिये हुई थी। एण्डीज की उच्च पर्वत श्रेणी ने बोलिविया को प्रशान्त महासागर तट तक पहुँचने का मार्ग दुर्गम बना दिया है। बोलिविया वाले परना और पेरेग्वे नदियों द्वारा अटलांटिक महासागर तक पहुँचने के लिये सुगम जलमार्ग चाहते हैं। पेरेग्वे देश वाले बोलिविया का कुछ प्रदेश चाहते हैं। जब से ग्रेनचाको में मिट्टी का तेल मिला है तब से दोनों देशवाले इसको चाहने लगे हैं। लड़ाई में जिन देशों के गोला बारूद और दूसरे सामान की बिक्री होती है वे चाहते थे कि उनका सामान बिकता रहे। इस-लिये और भी यह लड़ाई इतने अधिक समय तक जारी रही।

एक समय बोलिविया ने टेकनाएरिका प्रदेश पर अपना अधिकार प्रगट किया। इससे समुद्र तट तक उसकी पहुँच हो जाती। लेकिन १९२९ के समझौते से यह टेक नाएरिका प्रदेश पीरू और चिली ने आपस में बांट लिया।

रेलवे
खनिज प्रदेश
पी रु
लापाज
कोचाबम्बा
ओरूरो
टकना
एरिका
सेन्टा क्रूज़
सूकर
पोटोसी
पिल्कोमेयो
सन्टोफेगस्टा
ग्रेन चाको
आ र्जे न्टा इ न
पैरेग्वे नदी
0
२००
४००
६००
८०० मील
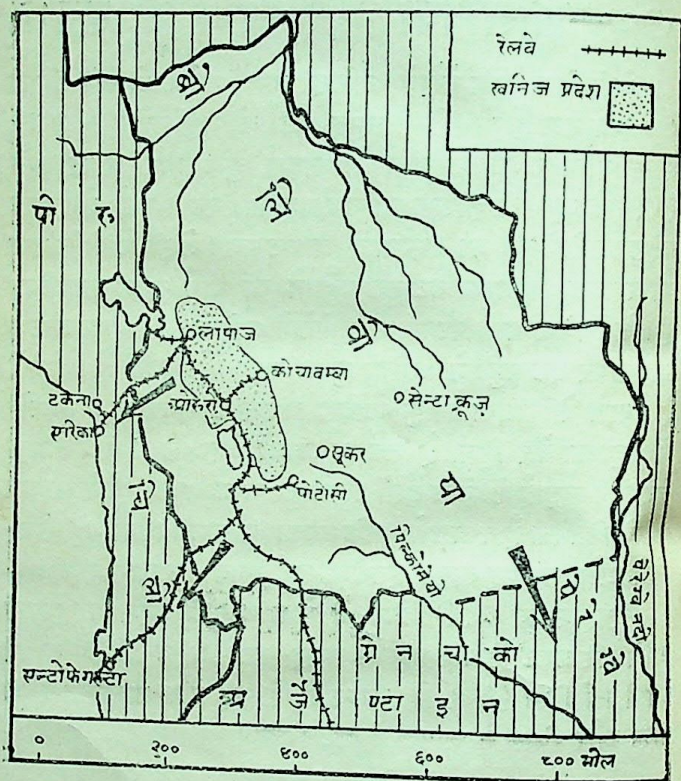
७१—बोलिविया

खनिज सम्पत्ति की दृष्टि से नई दुनिया में संयुक्त राष्ट्र अमरीका और मेक्सिको के बाद तीसरा नम्बर बोलिविया का ही है। दुनिया भर में जितनी टीन निकलती है उसकी एक चौथाई बोलिविया में होती है। चीन के बाद सुरमे की उत्पत्ति के लिये संसार में दूसरा स्थान बोलिविया का ही है। यहां चाँदी और सीसा भी काफ़ी निकलता है। बाहर भेजने के लिये बोलिविया की यह सब खनिज सम्पत्ति चिली के एरिका और एण्टोफेगस्टा बन्दरगाहों को भेजी जाती है। दूसरा मार्ग पेरेग्वे नदी के द्वारा अटलांटिक तट के लिये हो सकता है। इसीलिये पेरेग्वे देश से लड़ाई छिड़ी। बोलिविया में मूलनिवासी इण्डियन लोगों की अधिकता है। उनकी बड़ी विकराल ग़रीबी है। बोलिविया में एक ओर खनिज सम्पत्ति की अधिकता है दूसरी ओर ग़रीब लेकिन हट्टे कट्टे मज़दूरों से पूंजीपति लोग पूरा लाभ उठाने की धुन में हैं।

वेनिजुवेला
ब्रिटिश
डच
फ्रेंच
गा
य
ना
कोलम्बिया
इक्वेडार
विषुवत रेखा
पीरू
ब्रे
जी
ल
बोलिविया
पेरागवे
युरुगवे
वे देश जिनमें हवशी
या मूलनिवासी रेड
इण्डियन अधिक
संख्या में है
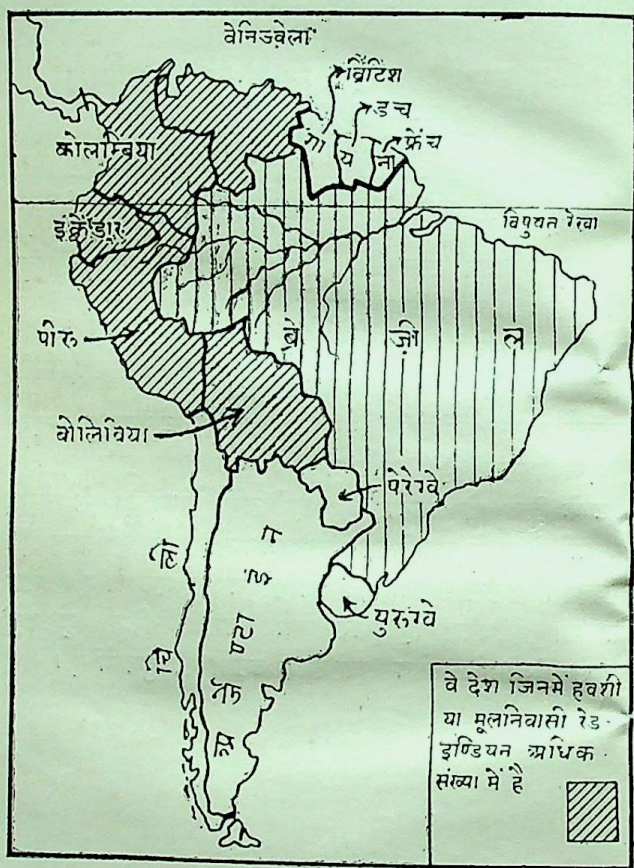
७२—दक्षिणी अमरीका की जातियाँ

गायना में योरुपीय पूँजीपति और शासकों ने वहाँ की आर्थिक सम्पत्ति से लाभ उठाने के लिये अपने उपनिवेश बहुत पहले से बनाये हैं। यहाँ मूलनिवासियों के साथ चीनी, हिन्दुस्तानी और हवशी लोग भी काफ़ी तादाद में पहुँच चुके हैं। इनके अतिरिक्त कोलम्बिया, यूक्वेडार, पीरू और बोलिविया के चार खनिज प्रधान प्रजातन्त्र राष्ट्रों में भी मूलनिवासियों की अधिकता है। वे बहुत सस्ती मज़दूरी पर काम करने के लिये तयार हो जाते हैं। वेनिज्वेला और गायना में हवशी और मुलाटो वर्णसंकर लोगों की अधिकता है। ब्रेज़िल में मुलाटो के अतिरिक्त गोरे और मूलनिवासी इण्डियन लोगों की जन-संख्या प्रायः बराबर है। शीतोष्ण प्रदेश के चार प्रजातन्त्र राष्ट्रों (चिली, अर्जेण्टाइना, यूरुग्वे और पैरेग्वे) में मूलनिवासी घटते घटते अल्पसंख्या में रह गये हैं। गोरों की प्रधानता हो गई है।

क ना डा
की
नोवा स्कोशिया
० २५० ५०० ७५० मील
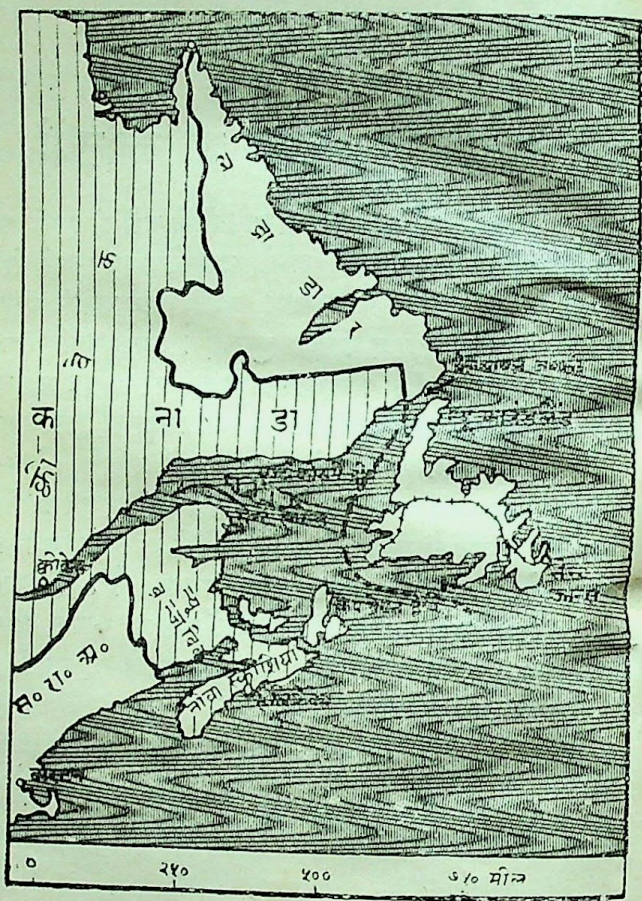
७३—न्यूफाउंडलैंड

न्यूफाउंडलैंड का शासन प्रवन्ध कनाडा से अलग है। न्यूफाउंड से ही पड़ोस का लब्राडार प्रदेश मिला हुआ है। १९२७ ई० में प्रिवी काउंसिल ने कनाडा के क्वीवेक प्रान्त और लब्राडार की सीमा निर्धारित की थी। लब्राडार में केवल ४२६४ मनुष्य रहते हैं। न्यूफाउंडलैंड की जनसंख्या लगभग २ लाख है। प्रधान सम्पत्ति मछली और लकड़ी है, लेकिन यहाँ की सरकार घाटे से चलती थी। न्यूफाउंडलैंड के दिवालियेपन की जाँच करने के लिये १९३३ के नवम्बर मास में एक रायल कमीशन बैठा। इस कमीशन ने सिफ़ारिश की है कि न्यूफाउंडलैंड से प्रतिनिधि संस्थायें उठा ली जावें और इसका शासन-भार ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त किये गये एक कमीशन को सौंप दिया जावे।

इतिहास-चित्रावली

इतिहास-चित्रावली—पृष्ठ-संख्या १४०, मूल्य १२ आने। इसके पहले भाग में भारतवर्ष के समय-समय पर बदलते हुए ५० राजनैतिक नक़्शे और उनकी व्याख्या, प्रसिद्ध लड़ाइयों के ख़ाके और भारतवर्ष की प्रमुख घटनाओं की सनवार सूची है। दूसरे भाग में भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न समयों पर कैसा जीवन रहा है, उसके चुने हुये चित्र दिये हुये हैं। कुछ ऐसे दुर्लभ चित्र हैं जिन्हें आप पहली बार इसी चित्रावली में देखेंगे।

मैनेजर—"भूगोल", इलाहाबाद